

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस
गांधीचौक-सूरतमें
मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने
मुद्रित किया



प्रथम आवृत्तिका निवेदन

जैन शास्त्रोंमें मंत्र-शास्त्रों व औषधि-शास्त्रोंकी कमी नहीं है उनमें करीब १२ वीं शताब्दिमें होनेवाले श्री मल्लिषेणसूरि कृत श्री भैरव पद्मावती कल्प, ज्वालमालिनी कल्प, अम्बिका कल्प, चक्रेश्वरी कल्प मंत्र-शास्त्रकी महिमा अपार है, और ये ग्रन्थ आजतक न तो मूल या मूल और टीका सहित प्रकट हुये हैं। क्योंकि ये असाधारण ग्रंथ नहीं हैं अतः ऐसे मंत्र-शास्त्रके ग्रथ प्रकट होनेकी बड़ी आवश्यकता थी और है। और आजतक ऋषिमंडल स्तोत्र, भक्तामर स्तोत्र, यन्त्रमन्त्र सहित व कल्याण मन्दिर स्तोत्र यन्त्र-मन्त्र व साधनविधि सहित प्रकट हो चुके हैं। लेकिन 'भैरव पद्मावती कल्प" जो मन्त्रशास्त्रोंका भण्डार है, अभीतक प्रकट नहीं हुआ था क्योंकि इसका संकलन व हिन्दी टीका करना सहज कार्य नहीं था व जहां यह ग्रन्थ था उनके स्वामी यह देना व छपवाना नहीं चाहते थे।

ऐसी परिस्थितिमें करीब २४ वर्षोंकी बात है जब कि हम सकुटुम्ब शिखरजीकी यात्रा करते हुये देहली आये थे और धर्मपुराकी धर्मशालामें ठहरे थे जिसकी सूचना पाते ही इस ग्रन्थके अन्वेषक व हिन्दी टीकाकार श्री पं० चन्द्रशेखरजी शास्त्री जो काव्यसाहित्य, तीर्थाचार्य, व प्राच्य विद्यावारिधि हैं, हमको मिलनेके लिये आये थे, उन्होंने जैन साहित्यकी चर्चा करते हुए बताया कि जैन मन्त्र शास्त्र अगाध है और हमने यहांके शास्त्र भण्डारसे बड़ी मेहनतसे भैरव पद्मावतीकल्प, ज्वालामालिनी कल्प, अम्बिका कल्प, मन्त्र व्याकरण व बीजकोष प्राप्त करके उनकी प्रेस कोपी की है तथा सबका हिन्दी अनुवाद भी हमने

तैयार किया है। अतः यदि आप इनमेंसे कुछ छपाना चाहे तो हम दे सकते हैं। इससे हमने आपकी ये सब प्रेस कापियां मंगाकर देखीं और इनमेंसे प्रथम "भैरव पद्मावती कल्प" प्रकट करनेकी स्वीकारता दे दी जो उन्होंने ठीक करके पीछेसे वी.पी.से सूरत भेज दी थी।

एक दो साल तो इसे हम नहीं छपा सके फिर इसके छापनेका कार्य प्रारम्भ किया और ४८ पृष्ठ छप चुके तब मालूम हुआ कि मन्त्रशास्त्रके इसके विधानोंमें कहीं कहीं अशुद्ध चीजोंका व कहीं कहीं हिंसक चीजोंका विधान है। अतः हम असमंजसमें पड़ गये कि इसे छापे या नहीं और इस विचारमें उस समय इसका मुद्रण कार्य रोक लिया गया जो १४-१५ वर्षों तक रुका रहा। इस वीचमें कई पंडितोंकी हमने बार बार राय ली तो कईयोने कहा कि इसे नहीं छपाना चाहिये तो कईयोंने कहा कि कापड़ियाजी, इसे अवश्य छपाना चाहिये, और नोट कर देना चाहिये कि मन्त्रशास्त्रोंमें अशुद्ध चीजोंका विधान कहीं कहीं आता ही है। अतः इन्हें साधन करनेवाले विचार करके ही इन विधानोंको करें या न करें।

अतः हमने इस "भैरव पद्मावती कल्प" मन्त्रशास्त्रको ४९ पृष्ठसे पुनः छपाना प्रारम्भ किया और पूर्ण करके यह मंत्रशास्त्र आज प्रकाशमें आ रहा है, जो ४६ यन्त्र सहित है।

श्री० प० चन्द्रशेखरजी शास्त्रीने इसकी विस्तृत प्रस्तावना (विषय सूची व यन्त्र सूचि सहित) लिख भेजी है (जो आगे प्रगट है) उसके लिये हम आपकी इस साहित्य सेवाका बड़ा उपकार मानते हैं। आपने जिस विद्वत्ता व परिश्रमके साथ इसकी प्रस्तावना लिखी है वह विद्वानोंके पढ़ने योग्य है।

इस ग्रंथके साथमें, हमने विचार किया कि पद्मावती सहस्रनाम स्तोत्र, छन्द, पूजा आदि रख दिये जावें तो क्या

ही अच्छा हो, अतः हमने सूरतके जूने मन्दिर, गुजराती मन्दिर व मेवाड़ा मन्दिरोंसे ऐसे हस्तलिखित शास्त्र प्राप्त किये व बम्बईसे हमारी बड़ी बहिन श्रीमति काशीबहिन (उर्फ नन्दकोरबाई) चुन्नीलाल हेमचन्द जरीवालोंकी धर्मपत्नी, उनके पास यही पद्मावती छन्द लिखे हुये थे उसकी कापी कर लाये और सबसे मिलान करके इस ग्रन्थके अन्तमें पद्मावती सहस्रनाम, पद्मावती स्तोत्र, पद्मावती कवच स्तोत्र, पद्मावती पटल स्तोत्र, पद्मावती दण्डक स्तोत्र, पद्मावती स्तुति, पद्मावती छन्द व पद्मावती पूजा व स्तुति भी इस ग्रन्थमें प्रकट किये हैं जो पाठकोंको श्री पद्मावती आराधना व पद्मावती सहस्रनाम आदि पाठ करनेमें बहुत उपयोगी होंगे।

इस मन्त्रशास्त्रमें हमारा विचार था कि श्री पद्मावतीमाताका कोई प्राचीन चित्र रखा जावे तो खोज करने पर एक ऐसा चित्र श्री उमाकान्त प्रेमानन्द शाह एम. ए. बड़ौदा जो कि इस विषयके पी. एच. डी. के अभ्यासी हैं उनसे मिला जो इस ग्रन्थमें प्रकट किया गया है जिसको देखनेसे पाठकोंको मालूम होगा कि दक्षिण प्रांतके जैन मन्दिरोंमें पद्मावतीकी कैसी कैसी अलभ्य मूर्तियां हैं।

हमारा विचार है कि यदि हो सका तो हम ज्वालामालिनी कल्प भी हिन्दी अनुवाद सहित भविष्यमें प्रकट करेंगे।

अन्तमें इस मन्त्र शास्त्रका उद्धार करने करानेवाले महान् विद्वान् पं० चन्द्रशेखरजी शास्त्री देहलीका हम पुनः आभार मानते हैं क्योंकि आपने इसे तैयार न कर दिया होता तो यह मंत्रशास्त्र हिन्दी अनुवाद सहित प्रकट नहीं हो सकता था।

वीर सं० २४७९
ता० २५-१२-५२

निवेदक—
मूलचन्द किसनदास कापड़िया
—प्रकाशक।

दूसरी आवृत्तिका निवेदन

इस मन्त्रशास्त्रकी प्रथम आवृत्ति खतम हो जाने पर तथा इसकी मांग आती ही रहती है इसलिये इसकी यह दूसरी आवृत्ति प्रकट की जाती है।

प्रथम आवृत्तिमें अशुद्धियां थीं अतः शुद्धिपत्रक रखा गया था लेकिन इसबार सब अशुद्धियां सुधार भी गई हैं तथा ४६ यन्त्र प्रथम आवृत्तिमें अन्तमें अलग दिये गये थे वे भी इसबार श्लोकोंके साथमें ही दिये गये हैं।

प्रथम आवृत्तिमें भैरव पद्मावतीका १ प्राचीन फोटो दिया गया था जब कि इसबार दूसरा प्राचीन फोटो भी दिया गया है।

इसके अनुवादक पं० चन्द्रशेखरजी शास्त्री देहली तो दो वर्ष हुए स्वर्गवासी हो गये हैं लेकिन उनकी यह सानुवाद कृति अमर ही रहेगी।

हमने उनका अनुवादित दूसरा मन्त्रशास्त्र "ज्वालामालिनी कल्प" भी २६ यन्त्रों सहित सचित्र प्रकट किया है जो ५) में मिल सकेगा तथा "अम्बिकादेवी कल्प" भी हम प्रकट करनेवाले हैं। जो मूल मिला है अतः उसका हिन्दी अनुवाद तैयार करवा रहे हैं।

"भैरव पद्मावती कल्प" की इस दूसरी आवृत्तिका शीघ्र ही प्रचार हो जाय ऐसी हम आशा रखते हैं।

सूरत
वीर सं० २४९६
कार्तिक सुदी २
ता. ११-११-६९

निवेदक—
मूलचन्द किसनदास कापडिया,
—प्रकाशक (आयु ८७)

अनुवादककी प्रस्तावना

मन्त्र शास्त्रका विषय जैन शास्त्रोंमें द्वादशांग वाणी जितना ही पुराना है। द्वादशांग वाणीके बारह अंग चोदह पूर्वोंमेंसे विद्यानुवाद पूर्व यन्त्र, मन्त्र तथा तन्त्रोंका सबसे बड़ा संग्रह है। हमारा मूल मन्त्र णमोकार मन्त्र भी एक मन्त्र ही है और उससे इहलौकिक तथा पारलौकिक सभी प्रकारके लाभ होते हुए देखे गए हैं।

मन्त्र शास्त्रकी वैदिक परम्परामें भी जैन यन्त्रोंके महत्त्वको स्वीकार किया गया है, वहां तो यहां तक लिखा हुआ है कि वैदिक मन्त्रोंको तो शिवजीने कील दिया था, अतएव वह कलियुगमें सिद्ध नहीं हो सकते। किन्तु जैन मन्त्रोंको बिना विचारे ही सिद्ध किया जा सकता है।

क्रमशः भगवान् महावीरके निर्वाणके बाद तीन केवलियोंका निर्वाण होने पर सम्पूर्ण द्वादशांग वाणीका अस्तित्व पांचवें तथा अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहुस्वामीके समय तक तो बना रहा, किन्तु उसके बाद उसमें उत्तरोत्तर क्रमशः न्यूनता होने लगी।

बारह अंगोंका लोप होने पर भी पूर्व ज्ञान उनके बाद तक भी बना रहा, उसमें भी विद्यानुवादका अस्तित्व तो बहुत बाद-तक बना रहा।

आजकल जो जयपुर तथा अजमेरके भण्डारोंमें विद्यानुवाद नामसे यन्त्र मन्त्र तथा तन्त्रका अपूर्व ग्रन्थ मिलता है, वास्तवमें वह विद्यानुवादपूर्व नहीं है। यह तो तत्कालीन मन्त्रोंके ग्रन्थ को देखकर उन सबका संग्रह ग्रन्थ है। इस ग्रन्थका संग्रह सुकुमारसेन नामक एक मुनिने करके उसका नाम विद्यानुशासन रखा था।

ऐसा प्रतीत होता है कि-सुकुमारसेन मुनिने विद्यानुवादके कमसे कम कुछ अवतरणोंको अवश्य देखा होगा। क्योंकि विद्यानुशासनमें उन्होंने विद्यानुवादके कुछ अवतरणोंको दिया है।

इस विद्यानुशासनमें बतलाया गया है कि चौबीस तीर्थंकरकी चौबीस शासनदेवियोंके कभी चौबीसों कल्प उपस्थित थे, फिर भी सुकुमारसेन मुनिके वर्णनसे यह पता चलता है कि उन्होंने कुल चार कल्प ही देखे थे—

१—भैरव पद्मावती कल्प।

२—ज्वालामालिनी कल्प।

३—अम्बिका कल्प।

४—चक्रेश्वरी कल्प।

विद्यानुशासनमें प्रथम तीन कल्पोंके पश्चात् अवतरण पाये जाते हैं, किंतु चक्रेश्वरी कल्पका कोई अवतरण हमारे ध्यानमें नहीं आया।

इनमेंसे हम विद्यानुशासनके अतिरिक्त भैरव पद्मावती कल्प तथा ज्वालामालिनी कल्पकी भाषाटीकाएं बना चुके हैं। अम्बिका कल्पकी मूल प्रति हमने श्री महावीरजी अतिशयक्षेत्रके पुस्तकालयसे प्राप्त की थी, किन्तु चक्रेश्वरी कल्पकी प्रतिके अस्तित्वका अभीतक भी हमको पता नहीं लग सका है। इनमेंसे भैरव पद्मावतीकल्प अपनी भाषाटीका सहित पाठकोंके सन्मुख उपस्थित किया जाता है।

× × ×

ग्रन्थकारका परिचय—

भैरव पद्मावती कल्पके रचयिता श्री मल्लिषेण मुनि थे। उनके ग्रन्थकी प्रशस्तिमें उभय भाषा कवि चक्रवर्ती, कविशेखर तथा गारुडमन्त्रवादवेदी आदि उपाधियां लिखी मिलती है। उनसे पता चलता है कि उनका संस्कृत तथा प्राकृत दोनों भाषाओंपर

पूर्ण अधिकार था। साथ ही वह एक उच्च कोटिके कवि भी थे। उनके गारुडमन्त्रवादवेदी होनेका प्रमाण तो प्रस्तुत ग्रन्थका दसवां एवं अन्तिम परिच्छेद-हीसे रहा है।

मल्लिषेणके ग्रन्थ—

यद्यपि भैरव पद्मावती कल्पको देखते हमको उनकी गुरु-परम्पराके अतिरिक्त उनके सम्बन्धमें अन्य किसी बातका पता नहीं लगता। किन्तु ग्रन्थान्तरोंको देखनेसे इस बातका पता चलता है कि उनके बनाए हुए कमसे कम निम्नलिखित ग्रन्थ अवश्य थे—

१–महापुराण, २–नागकुमार चरित्र, ३–भैरव पद्मावती कल्प, ४–सरस्वती मन्त्र कल्प तथा ५–ज्वालिनी कल्प।

ऊपर जिस ज्वालामालिनी कल्पका वर्णन किया गया है वह उस ज्वालिनी कल्पसे भिन्न है। और उसके लेखक भी मल्लिषेण मुनिसे भिन्न एक इन्द्रनन्दि आचार्य थे। यह इन्द्रनन्दि आचार्य वासवनन्दिके प्रशिष्य एवं दयानन्दिके शिष्य थे। उन्होंने हेलाचार्यके द्वारा प्रोत्साहन पाकर शक सम्वत् ८६१ तदनुसार विक्रम सम्वत् ९९६ में ज्वालामालिनी कल्पको रचना की थी, ज्वालामालिनीदेवीके सम्बन्धमें हेलाचार्यने भी ज्वालिनीमत नामसे एक ग्रन्थ बनाया था।

मल्लिषेणका समय—

मल्लिषेण आचार्यने भैरव पद्मावती कल्पमें अपनी गुरुपरम्परा यह दी है—

अजितसेनगणि
|
कनकसेनगणि
|
जिनसेन
|
मल्लिषेण

किन्तु इस गुरु-परम्परामें उन्होंने अपने समयका कोई उल्लेख नहीं किया है। किन्तु उनके अन्य ग्रन्थोंको देखनेसे यह पता चलता है कि यह विक्रमकी ग्यारहवीं शताब्दीके अन्त अथवा बारहवीं शताब्दीके आरम्भमें अवश्य विद्यमान थे। क्योंकि उन्होंने अपने ग्रन्थ महापुराणको मुलगुण्ड नगरमें शक संवत् ९६९, एवं विक्रम संवत् ११९४ में ज्येष्ठ शुक्ला पञ्चमीके दिन समाप्त किया था।

मुलगुण्ड नगर धारवाड़ जिलेकी गदक तहसीलमें वहांसे दक्षिण पश्चिमकी ओर बारह मीलपर है। महापुराणकी रचना मल्लिषेण मुनिने मुलगुण्ड नगरके एक जैन मन्दिरमें की थी। उन दिनों उक्त मन्दिरकी ख्याति एक तीर्थके रूपमें थी। मुलगुण्ड नगरमें आज भी उक्त मन्दिरके अतिरिक्त चार अन्य जैन मन्दिर भी हैं। इन मन्दिरोंमें शक संवत् ८२४ से लेकर १२९७ तकके शिलालेख पाए जाते हैं। इनमेंसे एक लेखमें आचार्य नामक व्यक्ति द्वारा सेनवंशके कनकसेन मुनिको एक खेतके दान देनेका वर्णन भी किया गया है।

मन्त्र शास्त्रोंका आधार—

इस मन्त्र शास्त्रोंकी रचना बीजकोष तथा मन्त्र व्याकरणके आधारपर की जाती है। यद्यपि उपरोक्त विद्यानुशासनमें बीजकोष तथा मन्त्र व्याकरणके कुछ नियमोंका वर्णन किया गया है, किंतु

इस विषयपर अन्य किसी ग्रन्थमें भी और कुछ वर्णन नहीं पाया जाता। हमने अभी २ इस विषयमें अपने तुलनात्मक अध्ययनके बलपर बीजकोषके दोनों भागों तथा मन्त्र व्याकरणकी रचना की है; जो प्रेसमें जा चुके हैं और शीघ्र ही पाठकोंके सम्मुख उपस्थित किये जाऐंगे।

ग्रन्थकी आभ्यन्तर परीक्षा—

मल्लिषेण मुनिने इस ग्रन्थकी रचना कुल चारसौ श्लोकोंमें की है। फिर भी उन्होंने इसका विभाजन निम्नलिखित दश परिच्छेदोंमें किया है—

१. मन्त्री लक्षण, २. सकलीकरण क्रिया, ३. देवीकी आराधना विधि, ४. द्वादश रंजिका यन्त्र विधान, ५. स्तम्भन यन्त्र, ६. स्त्रीआकर्षण यन्त्र, ७. वश्य यन्त्र, ८. निमित्ताधिकार, ९ तन्त्राधिकार तथा १०. गारुडाधिकार; इनमेंसे तृतीय परिच्छेद पूरेका पूरा पद्मावतीदेवीके सम्बन्धमें है। शेष परिच्छेदोंमें अन्य मन्त्रों यन्त्रोंको भी दिया गया है।

इस ग्रन्थमें यन्त्रोंकी संख्या ४६ है उन सभीको इस ग्रन्थमें पृथक् २ ब्लॉक बनाकर बना दिया गया है।

इस ग्रन्थकी आभ्यन्तर परीक्षा करनेपर शुद्ध आम्नायवालोंको एक शंका हो सकती है, वह यह है कि इस ग्रन्थमें यन्त्रों तथा तन्त्रोंकी प्रयोग विधिमें कहीं२ रक्त, हड्डी आदि अशुद्ध पदार्थोंके छूनेका विधान है। वैसे उसमें हिंसाका वर्णन लेशमात्र भी नहीं है। किन्तु अशुद्ध पदार्थोंके स्पर्श तथा उनके प्रयोगका वर्णन इतनी स्पष्टतासे किया गया है कि उसका अन्य अर्थ नहीं किया जा सकता। इस सम्बन्धमें स्पष्टीकरणके लिए केवल यही कहा जा सकता है कि अशुद्ध पदार्थोंके स्पर्शसे कोई भी तन्त्र ग्रन्थ बचा

हुआ नहीं। विद्यानुशासन, ज्वालामालिनी कल्प, पद्मावती कल्प तथा अम्बिका कल्प सभीमें इस प्रकारके प्रयोगोंको दिया गया है। सो इसमें भी उनके स्पर्शका ही विधान है, उनके भक्षणका विधान नहीं है। फिर यह भी आवश्यक नहीं है कि साधक इस ग्रंथमें बतलाए हुये सभी प्रयोगोंमें हाथ डाले।

मन्त्रशास्त्र तो एक विद्या है, यह धर्मशास्त्र नहीं है। धर्म-शास्त्रमें इस प्रकारके विधानोंका अस्तित्व दोषयुक्त होता, किन्तु मंत्र विद्यामें तो इसप्रकारके विधानोंका वर्णन करना ही पड़ता है।

अन्तमें हमको यह निवेदन करना है कि इस ग्रन्थकी भाषा टीकाको विक्रम सं० १९८४ ईसवी सन् १९२७ में तैयार करके हमने १९२८ के अन्तमें उसे सेठ मूलचन्द किसनदास कापड़िया सूरतको प्रकाशनार्थ दिया था। किन्तु कहीं कहीं हिंसाका प्रकरण देखकर उन्होंने इस ग्रन्थके मुद्रणकार्यको बीचमें ही रोक दिया था। किन्तु बादमें जब उनको पता चला कि कल्प ग्रन्थोंमें इस प्रकारके वर्णन अवश्य होते हैं तो उन्होंने इस ग्रथको फिर छपवाया है।

इस ग्रन्थको मुद्रित करानेमें उन्होंने हमको इसके प्रूफ नहीं दिखाये, जिससे उसमें अनेक अशुद्धियां रह गयीं अतः पाठकोंकी सुविधाके लिए ग्रथमें विस्तृत शुद्धिपत्र बनाकर लगा दिया गया है।

यदि पाठक इस सम्बन्धमें किसी अन्य त्रुटिकी ओर ध्यान आकर्षित करेंगे तो उसे ग्रन्थके अगले संस्करणमें सुधार दिया जायगा।

४५६६ बाजार पहाडगज नई दिल्ही
भाद्रपद शुक्ला ११, सं. २००९
ता. ३१ अगस्त १९५२

चन्द्रशेखर शास्त्री
(आचार्य)

विषयसूची--श्री भैरव पद्मावती कल्प

सप्तम परिच्छेद (नवम यन्त्र)

अष्टम परिच्छेद (निमित्ताधिकार)

दशम परिच्छेद (गारुड़ाधिकार)

इति पंडिता कलावतीदेवी सरस्वती (धर्मपत्नी काव्यसाहित्यतीर्था-
चार्य प्राच्यविद्यावारिधि श्री चन्द्रशेखर शास्त्री) कृत
भैरव पद्मावतीकल्पकी विषयसूची समाप्त ।



भैरव पद्मावती कल्पके ४६ यंत्रोंकी सूची

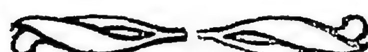




श्री मल्लिषेणसूरिविरचित-

भैरव पद्मावतीकल्प

भाषाटीका सहित



प्रथम परिच्छेद



मंगलावरण

कमठोपसर्गदलनं त्रिभुवननाथं प्रणम्य पार्श्वजिनम् ।
वक्ष्येऽभीष्टफलप्रदभैरवपद्मावतीकल्पम् ॥ १ ॥

भाषा टीका—कमठके किये हुये उपसर्गको नष्ट करनेवाले, तीन लोकके स्वामी, पार्श्वनाथ भगवानको नमस्कार करके अभीष्ट फलकी सिद्धिको देनेवाले भैरव पद्मावतीकल्पको कहूंगा।

पाशफलवरदगलवशकरणकरा पद्मविष्टरा पद्मा ।
सा मां रक्षतु देवी त्रिलोचना रक्तपुष्पाभा ॥ २ ॥

भा० टी०—हाथोंमें पाश, फल, वरदान और अंकुशवाली, कमलके आसनवाली, तीन नेत्रवाली और रक्त पुष्पके समान कान्तिवाली देवी पद्मावती मेरी रक्षा करें।



पद्मावतीके नाम

तोतला त्वरिता नित्य त्रिपुरा कामसाधनी ।
देव्या नामानि पद्मायाः तथा त्रिपुरभैरवी ॥ ३ ॥

भा० टी०—देवी पद्मावतीके निम्नलिखित नाम हैं—तोतला, त्वरिता, नित्या, त्रिपुरा, कामसाधनी और त्रिपुरभैरवी ।

ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

आदौ साधकलक्षणं सुसकलीं देव्यर्चनायाः क्रमम् ।
पश्चाद्द्वादशयन्त्रभेदकथनं स्तम्भाङ्गनाकर्षणम् ॥
यन्त्रं वश्यकरं निमित्तमपरं वश्यौषध गारुड ।
वक्ष्येऽहं क्रमशो यथा निगदितान् कल्पेऽधिकारान्दश ॥ ४ ॥

भा० टी०—(१) आदिमें साधकके लक्षण, (२) सकलीकरण क्रिया, (३) देवीके पूजनका विधान, (४) द्वादश यंत्र भेद कथन, (५) स्तंभन, (६) स्त्री आकर्षण, (७) वश्यकर्मके यत्र, (८) दर्पणादि निमित्ताधिकार, (९) वशीकरण करनेकी औषधियां तथा (१०) गारुडाधिकारको मैं पूर्व आचार्योंके अनुसार कहूंगा ।

इति दशविधाधिकारैर्ललिताऽऽर्याश्लोकगीतिसद्वृत्तैः ।
विरचयति मल्लिषेणः कल्पं पद्मावतीदेव्याः ॥ ५ ॥

भा० टी०—इसप्रकार मल्लिषेण आचार्य इस पद्मावतीकल्पको सुन्दर आर्या, गीति और श्लोक रूप अच्छेर छन्दोंसे दश अधिकारोंमें कहेंगे ।





मन्त्री (साधक) के लक्षण

निर्जितमदनाटोपः प्रशमितकोपो विमुक्तविकथालापः ।
देव्यर्चनानुरक्तो जिनपदभक्तो भवेन्मंत्री ॥ ६ ॥

भा० टी०—जिसने कामदेवको जीत लिया हो और जो शांत क्रोधवाला, विकथाओंका त्यागी, देवीके पूजनका प्रेमी और श्री भगवान् जिनेन्द्रदेवके चरणोंका भक्त हो वही मन्त्री हो सकता है ॥ ६ ॥

मन्त्राराधनशूरः पापविदूरो गुणेन गम्भीरः ।
मौनी महाभिमानी मन्त्री स्यादीदृशः पुरुषः ॥ ७ ॥

भा० टी०—जो मन्त्र सिद्ध करनेमें वीर, पाप रहित, गुणोंसे गम्भीर, मौनी और महा अभिमानी हो, ऐसा पुरुष मन्त्री हो सकता है ।

गुरुजनहितोपदेशो गततन्द्रो निद्रया परित्यक्तः ।
परिमितभोजनशीलः स स्यादाराधको देव्याः ॥ ८ ॥

भा० टी०—जो गुरुजनोंसे उपदेश पाया हुआ, तन्द्रा रहित, निद्राको जीतनेवाला, और कम भोजन करनेवाला हो वही देवीका आराधक हो सकता है ।

निर्जितविषयकषायो धर्मामृतजनितहर्षगतकायः ।
गुरुवरगुणसम्पूर्णः स भवेदाराधको देव्याः ॥ ९ ॥

भा० टी०—जिसने विषय और कषायोंको जीत लिया हो, जिसके शरीरमें धर्मरूप अमृतसे उत्पन्न हुआ हर्ष भरा हो तथा जो सुन्दर२ गुणोंसे पूर्ण हो वह देवीका आराधक होता है ॥९॥

शुचिः प्रसन्नो गुरुदेवभक्तो दृढव्रतः सत्यदयासमेतः ।
दक्षः पटुर्बीजपदावधारी मन्त्री भवेदीदृश एवं लोके ॥१०॥

भा० टी०—जो पवित्र, प्रसन्न, गुरु और देवका भक्त, दृढ़ व्रतवाला, सत्यभाषी, दयालु, बुद्धिमान्, चतुर और बीजाक्षरोंका निश्चय करनेवाला हो ऐसा व्यक्ति ही लोकमें मन्त्री हो सकता है।

एते गुणा यस्य न सन्ति पुंसः, क्वचित्कदाचिन्न भवेत्स मन्त्री।
करोति चेद्दर्पवशात्स जाप्य, प्राप्नोत्यनर्थं फणिशेखरायाः ॥११॥

अर्थ—जिस पुरुषमें यह गुण न हों वह कहीं भी और कभी भी मन्त्री नहीं हो सकता, यदि ऐसा पुरुष अभिमानसे जाप करता है तो वह देवी पद्मावतीसे हानिको प्राप्त होता है।

इति भैरव पद्मावतीकल्पकी भाषा टीकामें मन्त्रीलक्षणाधिकार नामका प्रथम परिच्छेद समाप्त।



द्वितीय परिच्छेद

सकलीकरण क्रिया

स्नात्वा पूर्वं मन्त्री प्रक्षालितरक्तवस्त्रपरिधानः।
सम्मार्जितप्रदेशे स्थित्वा सकलीक्रियां कुर्यात् ॥ १ ॥

भा० टी०—मन्त्री पहिले स्नान करके, धुले हुये लाल वस्त्र पहिनकर लिपे पुते साफ स्थानमें बैठकर सकलीकरणकी क्रिया करे।

ह्रां वामकरांगुष्ठे तर्जन्यां ह्रीं च मध्यमायां ह्रू।
ह्रौं पुनरनामिकायां कनिष्ठिकायां च ह्रश्च स्यात् ॥ २ ॥

भा० टी०—बांए हाथके अंगूठेमें ह्रां, तर्जनीमें ह्रीं, मध्यमामें ह्रूं, अनामिकामें ह्रौं और कनिष्ठामें ह्रः बीजको स्थापित करे।

पञ्चनमस्कारपदैः प्रत्येकं प्रणवपूर्वहोमान्त्यैः ।
पूर्वोक्तपञ्चशून्यैः परमेष्ठिपदाग्रविन्यस्तैः ॥ ३ ॥
शीर्षं वदनं हृदयं नाभिं पादौ च रक्षन् रक्षेत्येवम् ।
कुर्यादेतैर्मन्त्री प्रतिदिवसं स्वाङ्गविन्यासम् ॥ ४ ॥

भा० टी०—फिर पंचनमस्कार मंत्रके पदोंसे प्रत्येककी आदिमें ॐ और अन्तमें स्वाहा लगाकर, उन नमस्कार मन्त्रके परमेष्ठि-पदोंके सामने क्रमसे उपरोक्त पांचों शून्य बीजों (ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः) को लगाकर उनमें क्रमसे सिर, मुख, हृदय, नाभि और पैरोंसे वाचक पदोंको लगाकर 'रक्ष रक्ष' लगाता हुआ प्रतिदिन अपने अंगोंका न्यास करे।

ॐ णमो अरहन्ताणं ह्रां पद्मावतिदेवि मम शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा ।
ॐ णमो सिद्धाणं ह्रीं पद्मावतिदेवि मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा ।
ॐ णमो आइरियाणं ह्रूं पद्मावतिदेवि मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा ।
ॐ णमो उवज्झायाणं ह्रौं पद्मावतिदेवि मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा ।
ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः पद्मावतिदेवी मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा ।

द्विचतुःषट्चतुर्दशकलाभिरन्त्यस्वरेण बिन्दुयुतैः ।
कूटैर्दिग्विन्यस्तैः दिशासु दिग्बन्धनं कुर्यात् ॥ ५ ॥

भा० टी०—फिर 'ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः पूर्वादि दिशाबन्धनं करोमि' इस मंत्रसे दिशाओंका बन्धन करे।

हेममयं प्रकातं चतुरस्रं चिन्तयेत्समुत्तुङ्गम् ।
विंशतिहस्तं मंत्री सर्वस्वरसंयुतैः शून्यैः ॥ ६ ॥

भा० टी०—फिर मंत्री "ह हा हि ही हु हू हृ हॄ ऋ हॢ हॣ हे है हो हौ हं हः।" इन बीजोंसे स्वर्णमय बड़े ऊंचे बीस हाथ प्रमाण चौकोर प्राकारका चिन्तवन करे!

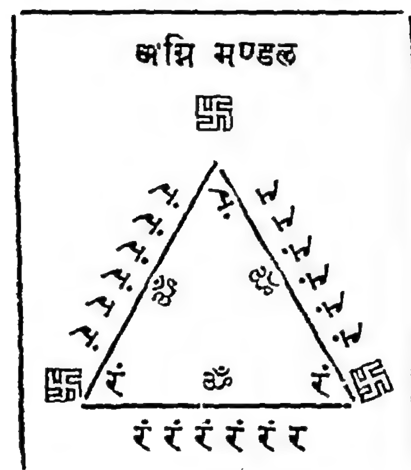
सर्वस्वरसम्पूर्णैः कूटैरपि खातिकाकृतिं ध्याये-
न्निर्मलजलपरिपूर्णामतिभीषणजलचराकीर्णाम् ॥ ७ ॥

भा० टी०—फिर निम्नलिखित बीजोंसे निर्मल जलसे परिपूर्ण, अत्यन्त भयानक जलचरोंसे भरी हुई खाईके आकारका ध्यान करे। वह बीज यह है—

'क्ष क्षा क्षि क्षी क्षु क्षू क्षृ क्षॄ क्ष्ल क्ष्ॡ क्षे क्षै क्षो क्षौ क्षं क्षः।

ज्वलदोङ्काररकारज्वालादग्ध स्वमग्निपुरसंस्थम्।
ध्यात्वाऽमृतमन्त्रेण स्नान पश्चात् करोत्वमुना।

भा० टी०—फिर अग्नि मण्डलमें बैठे हुए अपने आपको जलते हुए ॐ और रकारकी लपटोंसे जला हुआ ध्यान करके निम्नलिखित अमृत मंत्रसे स्नान करे।



अमृत मन्त्र

"ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावयर संर क्लींर ब्लूंर द्रां द्रीं द्रावयर सं हं क्ष्वीं क्ष्वीं हंसः अ सि आ उ सा सर्वमिदममृतं भवतु स्वाहा।

निजोत्तमाङ्गामरभूधराग्रे संस्नापितः पार्श्वजिनेन्द्रचन्द्रः।
क्षीराब्धिदुग्धेन सुरेन्द्रवृन्दैः संचिन्तयेत्तज्जलशुद्धगात्रम् ॥९॥

भा० टी०—फिर अपने शिरको उत्तम सुमेरुपर्वतके पाण्डुक वनकी पांडुकशिला कल्पना करे और उसपर देवताओंके समूहके द्वारा क्षीरसागरके दुग्धके समान जलसे स्नान कराये हुये श्री पार्श्वनाथ भगवानके स्नानके जलसे (गंधोदकसे) अपनेको शुद्ध शरीरवाला कल्पना करे।

भूतग्रहशाकिन्यो ध्यानेनानेन नोपसर्पन्ति।
अपहरति पूर्वसञ्चितमपि दुरितं त्वरितमेवेह ॥ १० ॥

भा० टी०—इस ध्यानके करनेसे भूत, ग्रह और शाकिनियां कभी भी उपसर्ग नहीं करतीं। बल्कि इसके ध्यानसे पूर्व संचित पाप भी उसी समय नष्ट हो जाते हैं।

पर्यङ्कासनसंस्थः समीपतरवर्तिपूजनद्रव्यः।
दिग्वनितानां तिलकं स्वस्य च कुर्यात्सुचन्दनतः ॥ ११ ॥

भा० टी०—पर्यङ्कासनसे बैठा हुआ अपने समीप पूजनके आठों द्रव्योंको रखकर चन्दनसे दिशारूपी बाहुओंके और अपने तिलक करे।

पन्नगाधिपशेखरां विपुलारुणाम्बुजविष्टिरां।
कुक्कुटोरगवाहनामरुणप्रभां कमलाननाम् ॥
त्र्यम्बकां वरदांकुशायतपाशदिव्यफलाङ्कितां।
चिन्तयेत्कमलावती जपतां सतां फलदायिनीम् ॥ १२ ॥

भा० टी०—फिर शिरपर शेषनागवाली, अत्यन्त रक्तकमलके आसनवाली, कर्कोट नागके वाहनवाली, प्रातःकालीन सूर्यके समान अरुण प्रभावाली, कमलके समान मुखवाली, तीन नेत्रवाली, हाथोंमें वरदान, अंकुश, बड़े पाश और दिव्य फलवाली तथा जपनेवालोंको सदा फलकी देनेवाली पद्मावतीका ध्यान करे।

अंशक परीक्षा

परिज्ञायांशक पूर्वं साध्यसाधकयोरपि।
मन्त्र निवेदयेत्प्राज्ञो व्यर्थं तत्फलमन्यथा ॥ १३ ॥

भा० टी०—बुद्धिमान पुरुष मंत्र और मंत्रीके अशोंको जानकर ही मन्त्रको बतलावे। अन्यथा वह मन्त्र व्यर्थ होता है।

साध्यसाधकयोर्नामानुस्वारं व्यंजनं स्वरम्।
पृथक् कृत्वा क्रतात्स्थाप्यमूर्ध्वाधोप्रविभागतः ॥ १४ ॥

भा० टी०—मन्त्र और मंत्रीके नामके अनुस्वार, व्यंजन और स्वरोंको पृथक्कर करके ऊपर मंत्रके और नीचे मंत्रीके नामके अक्षरोंको रखे।

साध्यनामाक्षरं गण्यं साधकाह्वयवर्णतः।
नपुंसक परित्यज्य कुर्यात्तद्वेदभाजितम् ॥ १५ ॥

भा० टी०—मन्त्रीके नामके अक्षरोंसे मन्त्रके नामके अक्षरोंको ऋ ॠ ऌ ॡ को छोड़ गिने। और उनको जोड़कर चारका भाग दे।

आयो भागोद्धरितं त चाद्यं स्थापयेत्क्रमाद्धीमान्।
एकद्वित्रिचतुर्णो सिद्धं साध्यं सुसिद्धमरिम् ॥ १६ ॥

भा० टी०—फिर आय (भागफल) में भाग देकर निकले हुये शेषको बुद्धिमान् आदिमें एक पंक्तिमें रखे। यदि वह एक हो तो सिद्ध, दो हो तो साध्य, तीन हो तो सुसिद्ध और चार अर्थात् शून्य हो तो शत्रु जानना चाहिये।

सिद्धसुसिद्धं ग्राह्यं साध्य शत्रुं च वर्जयेद्धीमान्।
सिद्धसुसिद्धे फलदे विफलं साध्येरिवापाये ॥ १७ ॥

भा० टी०—इनमेसे बुद्धिमान् सिद्ध और सुसिद्ध मंत्रको ग्रहण करले और साध्य तथा शत्रुको छोड़ देवे। क्योंकि सिद्ध और सुसिद्ध फलको देते हैं तथा साध्य और शत्रु हानि करते हैं।

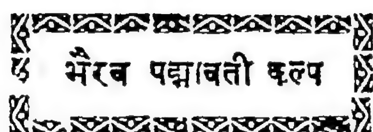
फलद कतिपयदिवसैः सिद्ध चेत्साध्यमपि दिनैर्बहुभिः।
झटिति फलद सुसिद्धं प्राणार्थविनाशनाशनः शत्रुः ॥१८॥

भा० टी०—सिद्ध कुछ दिनोंमें ही सिद्ध हो जाता है, साध्य बहुत दिनोंमें सिद्ध होता है, सुसिद्ध शीघ्र फल देता है, तथा शत्रु प्राण और प्रयोजन दोनोंका ही नाश करता है।

आदावन्ते शत्रुर्यदि भवति तदा परित्यजेन्मन्त्रम्।
स्थानत्रितये शत्रुर्मृत्युः स्यात्कार्यहानिर्वा ॥ १९ ॥

भा० टी०—यदि मंत्र आरम्भ करनेपर आदिमें अथवा मंत्रके अन्तमें शत्रु हों तो मंत्रको छोड़ दे। यदि आदि, मध्यम और अन्त तीनों स्थानोंमे शत्रु हो तो या तो कार्यका नाश होता है या अपनी मृत्यु हो।

शत्रुर्भवति यदाऽऽदौ मध्ये सिद्धं तदन्तरं साध्यम्।
कष्टेन भवत्येव हि सिद्धिर्लभते फल अल्पम् ॥ २० ॥



भा० टी०—यदि मन्त्रके आदिमें शत्रु और मध्यमें सिद्ध हो तो उसको देरसे सिद्ध करना चाहिये। ऐसा मन्त्र सिद्ध तो बहुत कष्टसे होता ही है पर फल भी बहुत कम देता है।

अन्ते यदि भवति रिपुः प्रथमे मध्ये च सिद्धयुगपतनम्।
कार्यं यदादिजात तन्नश्यति सर्वमेवान्ते ॥ २१ ॥

भा० टी०—यदि मन्त्रके अन्तमें शत्रु हो और आदि तथा मध्यमें सिद्ध हो तो जो कार्य आदिमें सिद्ध होगा वह अन्तमें नष्ट हो जावेगा।

सिद्धं सुसिद्धमथवा रिपुणान्तरितं निरीक्ष्यते यत्र।
दुःखापायप्रबलं भवतीति विवर्जयेत्कार्यम् ॥ २२ ॥

भा० टी०—मन्त्रमें सिद्ध, सुसिद्ध अथवा शत्रुका विघ्न पहिले ही देखकर यदि अधिक दुःख या हानि होता हो तो उस कार्यको छोड़ दे।

इति भैरव पद्मावतीकल्पकी भाषा टीकामें 'सकलीकरण' नामका द्वितीय परिच्छेद समाप्त।



तृतीय परिच्छेद

देवीकी आराधनविधि

मन्त्रोंको जपमें गून्थनेके भेद

दीपनपल्लवसम्पुटरोधग्रथनविदर्भणैः कुर्यात्।
शान्तिद्वेषवशीकृतिवधस्त्र्याकृष्टिसंस्तम्भम् ॥ १ ॥

भा० टी०—दीपनसे शान्ति, पल्लवसे विद्वेषण, सम्पुटसे

वशीकरण, रोधनसे मारण, ग्रथनसे स्त्री आकर्षण और विदर्भणसे क्रोधादिका स्तम्भन करे।

आदौ नामनिवेशो दीपनमन्ते च पल्लवो ज्ञेयः।
तन्मध्यगतं सम्पुटमथादिमध्यान्तगोरोधः ॥ २ ॥

भा० टी०—मन्त्रकी आदिमें नाम रखना दीपन कहलाता है, अन्तमें रखना पल्लव कहलाता है। नामके आदि और अन्तमें मन्त्रको रखना सम्पुट कहलाता है। मन्त्रके आदि, मध्य और अन्तमें नामको रखना रोधन कहलाता है।

ग्रथनं वर्णान्तरितं द्व्यक्षरमध्यस्थितो विदर्भः स्यात्।
षट्कर्मकरणमेतज्ज्ञात्वाऽनुष्ठानमाचरेन्मन्त्री ॥ ३ ॥

भा० टी०—मन्त्रके एक एक अक्षरके पश्चात् नामको रखकर गून्थ देना ग्रथन कहलाता है। दो दो अक्षरोंके पश्चात् नामको रखना विदर्भ कहलाता है। यह षटकर्म हैं। मन्त्री इनको जानकर ही अनुष्ठानको आरम्भ करे।

मन्त्रोंकी सामान्य साधनविधि

दिक्कालमुद्रासनपल्लवानां भेदं परिज्ञाय जपेत्स मंत्री।
न चान्यथा सिध्यति तस्य मन्त्रं कुर्वन्सदा तिष्ठतु जाप्यहोमम् ॥४॥

भा० टी०—मन्त्री दिशा, काल, मुद्रा, आसन और पल्लवोंके भेदको जानकर ही जप आरम्भ करे, अन्यथा चाहे कितना ही जप और होम करे, सिद्धि नहीं होती।

वश्याकृष्टिस्तम्भननिषेधविद्वेषचलनशांतिकपुष्टिः।
कुर्यात्सोमयमामरहराग्निमरुदब्धिनिरितिदिग्वदनः ॥ ५ ॥

भा० टी०—वशीकरण कर्मको उत्तराभिमुख होकर, आकर्षण कर्मको दक्षिणाभिमुख होकर, स्तम्भन कर्मको पूर्वाभिमुख होकर, निषेधकर्मको ईशानाभिमुख होकर, विद्वेषण कर्मको अग्निकोणकी ओर मुख करके, उच्चाटन कर्मको वायव्यकोणकी ओर मुख करके, शांतिकर्मको पश्चिमकी ओर मुख करके, तथा पुष्टिकर्मको नैऋत्यकोणकी ओर मुख करके करे।

पूर्वाह्णे वश्यकर्माणि मध्याह्ने प्रीतिनाशनम्।
उच्चाटनमपराह्णे च सन्ध्यायां प्रतिषेधनम्॥ ६॥

भा० टी०—वशीकरण, आकर्षण और स्तम्भन कर्मोंको दिनके बारह बजेसे पहिले (वसन्तऋतुमें), विद्वेषण कर्मको मध्याह्न (ग्रीष्मऋतु) में, उच्चाटनको दोपहर बाद अपराह्ण (वर्षाऋतु) में, और प्रतिषेध कर्मको सध्या समय (शरत्ऋतु) में करे।

शान्तिकमर्द्धरात्रौ च प्रभाते पौष्टिक तथा।
वश्य मुक्त्वाऽन्यकर्माणि सव्यहस्तेन योजयेत्॥ ७॥

भा० टी०—शांति कर्मको आधी रात (हेमन्तऋतु) में, और पौष्टिक कर्मको प्रातःकाल (शिशिरऋतु) में करे, वशीकरणके अतिरिक्त अन्य कार्योंको दाहिने हाथसे करे।

अङ्कुशसरोजबोधप्रवालशङ्खवज्रमुद्रा स्युः।
आकृष्टिवश्यशांतिकविद्वेषणरोधवधसमये॥ ८॥

भा० टी०—आकर्षण कर्ममें अंकुशमुद्रा, वशीकरणमें सरोज (कमल) मुद्रा, शांतिक पौष्टिक कर्ममें ज्ञान मुद्रा, विद्वेषण उच्चाटन

कर्ममें पवाल अर्थात् पल्लव मुद्रा, स्तंभन कर्ममें शंख मुद्रा, और मारण कर्ममें वज्र मुद्रा रखे ।

दण्डस्वस्तिकपङ्कजकुक्कुटिशोद्भद्रपीठानि ।
उदयार्करक्तशशधरधूम्रहरिद्राऽसितो वर्णः ॥ ९ ॥

भा० टी०—आकर्षण कर्ममें दण्डासन, वशीकरणमें स्वस्तिक आसन, शांतिक पौष्टिक कर्ममें कमलासन, विद्वेषण उच्चाटन कर्ममें कुक्कुट आसन, स्तम्भन कर्ममें वज्रासन और निषेध अथवा मारण कर्ममें विस्तीर्ण भद्र आसनका प्रयोग करे ।

आकर्षण कर्ममें उदय होते हुये सूर्यके जैसा वर्ण, वश्य कर्ममें रक्तवर्ण, शांतिक पौष्टिक कर्ममें चन्द्रमाके समान सफेदवर्ण, विद्वेषण उच्चाटन कर्ममें धूम्रवर्ण, स्तम्भनमें हल्दीके समान पीतवर्ण, और निषेध तथा मारण कर्ममें कृष्णवर्णका प्रयोग करे ।

विद्वेषणाऽऽकर्षणचालनेषु हुं वौषडन्तं फडिति प्रयोज्यम् ।
वश्ये वषट्वैरिवधे च घे घे स्वाहा स्वधा शांतिकपौष्टिके च ॥ १० ॥

भा० टी०—विद्वेषणमें हुं, आकर्षणमें संवौषट्, उच्चाटनमें फट्, वशीकरणमें वषट्, शत्रुके वधमें घे घे, स्तम्भनमें ठः ठः, शांति कर्ममें स्वाहा और पौष्टिक कर्ममें स्वधा नामके पल्लवका प्रयोग करे ।

स्फटिकप्रवालमुक्ताचामीकरपुत्रजीवककृतमणिभिः ।
अष्टोत्तरशतजाप्यं शान्त्याद्यर्थे करोतु बुधः ॥ ११ ॥

भा० टी०—शांतिकर्ममें स्फटिकमणि, वशीकरणमें प्रवालमणि (मूंगा), पौष्टिककर्ममें मोती, स्तम्भनकर्ममें स्वर्णकी बनी हुई मणि



तथा विद्वेषणकर्ममें उच्चाटन और प्रतिषेधकर्ममें पुत्रजीवकी बनाई हुई मणिसे १०८ जप करे।

मोक्षाभिचारशान्तिकवश्याकर्षेषु योजयेत्क्रमशः।
अंगुष्ठाद्यंगुलिका मणयोऽगुष्ठेन चाल्यन्ते ॥ १२ ॥

भा० टी०—उन मणियोंको मोक्षकी इच्छावाला अंगूठे, अभिचार कर्ममें तर्जनी, शांतिक तथा पोष्टिककर्ममें मध्यमा, वशीकरणमें अनामिका और आकर्षण कर्ममें कनिष्ठासे चलावे।

पीतारुणासितैः पुष्पैः स्तम्भनाकृष्टिमारणे।
शान्तिकपौष्टिकयोः श्वेतैः जपेन्मंत्रं प्रयत्नतः ॥ १३ ॥

भा० टी०—स्तम्भनमें पीले और आकर्षणमें वनके लाल पुष्पो तथा मारणमें काले पुष्पोंसे शांतिक और पौष्टिक कर्ममें वनके काले पुष्पोंसे यत्नपूर्वक जप करे।



पद्मावतीको सिद्ध करनेका विधान

अनुष्ठानमें समीप रखनेका यंत्र

चतुरस्र विस्तीर्णं रेखात्रयसंयुतं चतुर्द्वारम्।
विलिखेत्सुरंभिद्रव्यैर्यन्त्रमिदं हेमलेखिन्या ॥ १४ ॥

भा० टी०—इस यन्त्रको सोनेकी कलमसे सुगन्धित द्रव्योंसे चौकोर, विस्तीर्ण, तीन रेखा सहित चार द्वारवाला बनावे।

धरणेन्द्राय नमोऽधःच्छदनाय नमस्ततोर्द्ध्वच्छदनाय नमः।
पद्मच्छदनाय नमो मन्त्रान्वेदादिमायाद्यान् ॥ १५ ॥

भा० टी०—उस मन्त्रके पूर्वद्वारपर 'ॐ ह्रीं धरणेन्द्राय नमः', दक्षिण द्वारपर 'ॐ ह्रीं अधःच्छदनाय नमः', पश्चिम द्वारपर 'ॐ ह्रीं ऊर्द्धच्छदनाय नमः' तथा उत्तर द्वारपर 'ॐ ह्रीं पद्मच्छदनाय नमः' मन्त्रोंको—

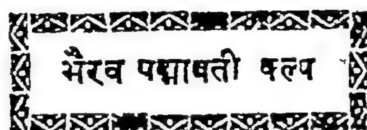
प्रविलिख्यैतान्क्रमशः पूर्वादिद्वारपीठरक्षार्थम् ।
दशदिक्पालान्विलिखेदिन्द्रादीन् प्रथमरेखान्ते ॥ १६ ॥

भा० टी०—पूर्वादि द्वारोंके आसनोंकी रक्षाके लिये उनर द्वारोंपर क्रमशः लिखे, फिर प्रथम रेखाके अन्तमें निम्नलिखित प्रकारसे दश दिक्पालोंको लिखे ।

लरशषवयसहवर्णान्सबिन्दुकानष्टदिक्पतिसमेतान् ।
प्रणवादिनमोऽन्तगतानोंह्रीमधः उर्द्धच्छदनसंज्ञे च ॥ १७ ॥

भा० टी०—उन दशों दिक्पालोंको दिशाओंमें लिखनेका क्रम यह है—

पूर्व—ॐ ह्रीं लं इन्द्राय नमः ।
अग्नि—ॐ ह्रीं रं अग्नये नमः ।
दक्षिण—ॐ ह्रीं शं यमाय नमः ।
नैऋत्य—ॐ ह्रीं षं नैऋत्याय नमः ।
पश्चिम—ॐ ह्रीं वं वरुणाय नमः ।
वायव्य—ॐ ह्रीं यं वायव्याय नमः ।
उत्तर—ॐ ह्रीं सं कुबेराय नमः ।
ईशान—ॐ ह्रीं हं ईशानाय नमः ।
नीचे—ॐ ह्रीं अधःच्छदनाय नमः ।
ऊपर—ॐ ह्रीं ऊर्द्धच्छदनाय नमः ।



दिक्षु विदिक्षु क्रमशो जयादिजम्भादिदेवता विलिखेत् ।
प्रणवत्रिमूर्तिपूर्वा नमोऽन्ता मध्यरेखान्ते ॥ १८ ॥

भा० टी०—मध्यकी रेखाके अन्तको विदिशाओंके आदिमें 'ॐ ह्रीं' तथा अन्तमें 'नमः' लगाकर जया आदि और विदिशाओंमें जम्भा आदि देवियोंको लिखे ।

आद्या जया च विजया तथाजिता चापराजिता देव्यः ।
जम्भामोहास्तम्भास्तम्भिन्यो देवता एताः ॥ १९ ॥

उन देवियोंके नाम सहित निम्नलिखित मन्त्रोंको लिखे—

पूर्व—ॐ ह्रीं जयायै नमः ।
अग्नि—ॐ ह्रीं जम्भायै नमः ।
दक्षिण—ॐ ह्रीं विजयायै नमः ।
नैऋत्य—ॐ ह्रीं मोहायै नमः ।
पश्चिम—ॐ ह्रीं अजितायै नमः ।
वायव्य—ॐ ह्रीं स्तम्भायै नमः ।
उत्तर—ॐ ह्रीं अपराजितायै नमः ।
ईशान—ॐ ह्रीं स्तम्भिन्यै नमः ।

तन्मध्येऽष्टदलाम्भोजमनङ्गकमलाभिधाम् ।
विलिखेच्च पद्मगन्धां पद्मास्यां पद्ममालिकाम् ॥ २० ॥

मदनोन्मादिनीं पश्चात् कामोद्दीपनसंज्ञिकाम् ।
संलिखेत्पद्मवर्णाख्यां त्रैलोक्यक्षोभिणीं ततः ॥ २१ ॥

तेजो ह्रींकारपूर्वोक्ता नमः शब्दावसानगाः ।
अकारादि हकारान्तान्केशरेषु नियोजयेत् ॥ २२ ॥

भा० टी०—उसके बीचमें एक अष्टदल कमल बनाकर उसके आठों दलोंमें आदिमें 'ॐ ह्रीं' और अन्तमें नमः लगाकर 'अनङ्गकमला' आदि देवियोंको लिखे ।

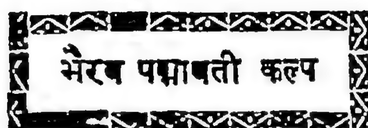
इसका मन्त्रोद्धार

पूर्व—ॐ ह्रीं अनङ्गकमलायै नमः ।
अग्नि—ॐ ह्रीं पद्मगन्धायै नमः ।
दक्षिण—ॐ ह्रीं पद्मास्यायै नमः ।
नैऋत्य—ॐ ह्रीं पद्ममालायै नमः ।
पश्चिम—ॐ ह्रीं मदनोन्मादिन्यै नमः ।
वायव्य—ॐ ह्रीं कामोद्दीपनायै नमः ।
उत्तर—ॐ ह्रीं पद्मवर्णायै नमः ।
ईसान—ॐ ह्रीं त्रैलोक्यक्षोभिण्यै नमः ।

भा० टी—फिर उस कमलकी कर्णिकामें परागके स्थानमें अकारसे लेकर हकार तकके सब वर्णोंको लिखे ।

भक्तियुतो भुवनेशः चतुः कलायुक्तकूट मम देव्याः ।
वर्णचतुष्कनमोऽन्ताः स्थाप्याः प्राच्यादिदिक्षु पद्मबहिः ॥२३॥

उस कमलके बाहिर चारों दिशाओंमें निम्नलिखित मन्त्र लिखे—



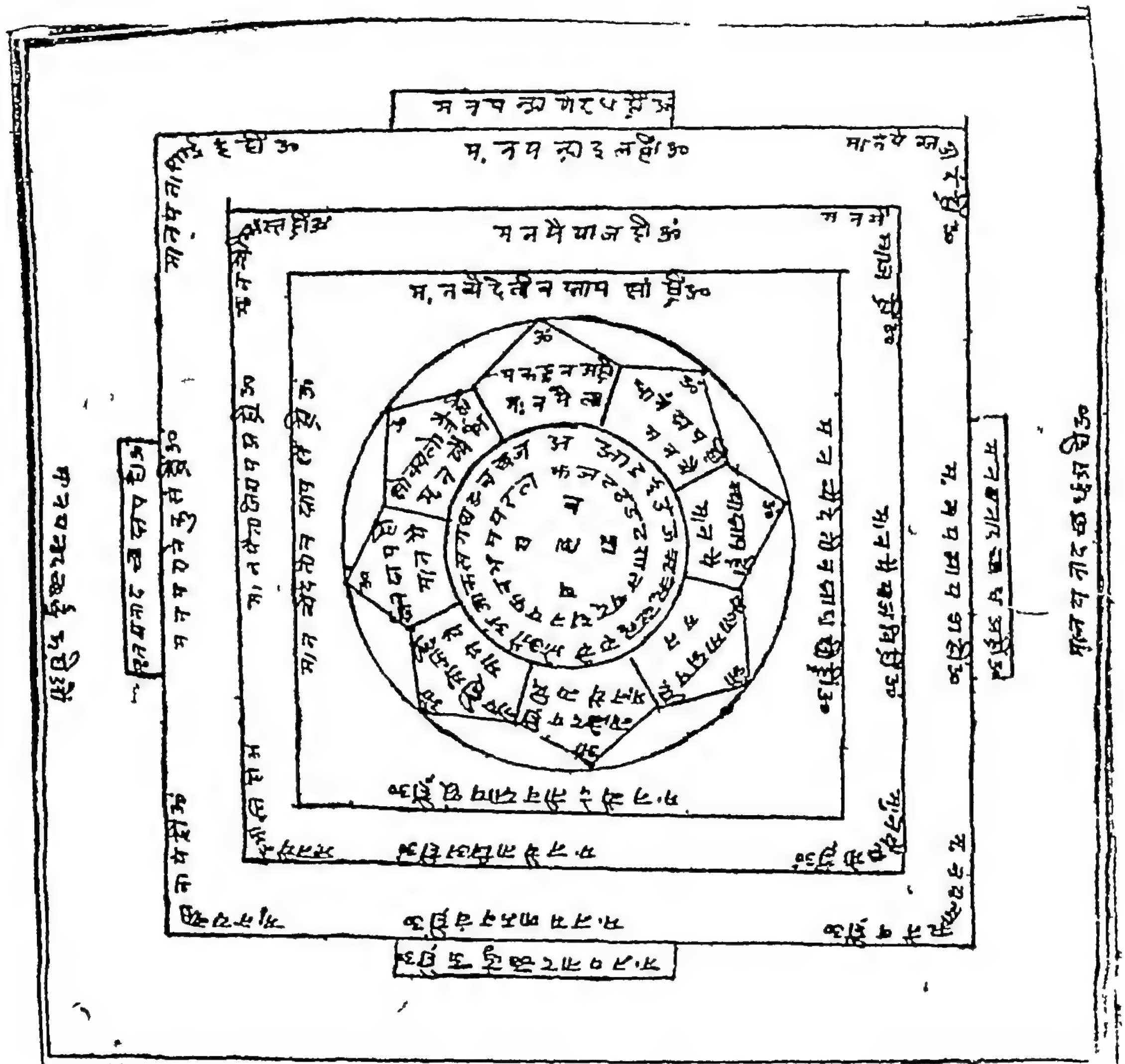
पूर्व—ॐ ह्रीं श्रां पद्मावतीदेव्यै नमः।
दक्षिण—ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावतीदेव्यै नमः।
पश्चिम—ॐ ह्रीं क्ष्रूं पद्मावतीदेव्यै नमः।
उत्तर—ॐ ह्रीं क्ष्रैं पद्मावतीदेव्यै नमः।

एतत्पद्मावतीदेव्या भवेद्वक्त्रचतुष्टयम्।
पञ्चोपचारतः पूजां नित्यमस्याः करोत्विति ॥ २४ ॥

भा० टी०—यह चारो मन्त्र पद्मावतीदेवीके चारों मुख हैं। इस यन्त्रका पूजन प्रतिदिन पांचों उपचारसे करना चाहिये।

यन्त्र संख्या १

अनुष्ठानमें पास रखनेका यन्त्र





पूजनके पांचों उपचार

आह्वाननं स्थापनं देव्या. सन्निधीकरणं तथा ।
पूजां विसर्जनं प्राहुर्बुधाः पञ्चोपचारकम् ॥ २५ ॥

भा० टी०—आह्वानन, स्थापन, सन्निधिकरण, पूजन और विसर्जनको पंडितोंने पञ्चोपचार पूजन कहा है।

ॐ ह्रीं नमोऽस्तु भगवति पद्मावति एहि एहि संवौषट् ।

कुर्यादमुनामत्रेणाह्वानमनुस्मरन् देवीम् ॥ २६ ॥

भा० टी०—पूजनके समय देवीका ध्यान करता हुआ, उसका निम्नलिखित मंत्रसे आह्वानन करे।

ॐ ह्रीं नमोऽस्तु भगवति पद्मावति एहि एहि संवौषट् ।
(आह्वानन)

तिष्ठद्वितयं टान्तद्वयं च संयोजयेद् स्थितीकरणे ।
सन्निहिता भव शब्द मम वषडिति सन्निधिकरणे ॥२७॥

स्थापना करनेका मन्त्र

ॐ ह्रीं नमोऽस्तु भगवति पद्मावति तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
(स्थापनम्) ।

इस मंत्रसे सन्निधिकरण करे।

ॐ ह्रीं नमोऽस्तु भगवति पद्मावति ममः सन्निहिता भव भव वषट् । (सन्निधिकरणम्)

गन्धादीन् गृह्ण गृह्णेति नमः पूजाबिधानके ।
स्वस्थान गच्छगच्छेति जश्चिः स्यात्तद्विसर्जने ॥ २८ ॥

देवीके पूजनमें यह मंत्र पढ़े

ॐ ह्रीं नमोऽस्तु भगवति पद्मावति गन्धादीन् गृह्ण गृह्ण नमः।

विसर्जनमें निम्नलिखित मंत्र कहे—

ॐ ह्रीं नमोऽस्तु भगवति पद्मावति स्वस्थानं गच्छ गच्छ जः जः जः। (विसर्जनम्)

पूरकरेचकयोगादाह्वानविसर्जनं करोतु बुधः।
पूजाभिमुखीकरणस्थापनकर्माणि कुम्भकतः॥ २९॥

भा० टी०—पण्डित पुरुष आह्वान पूरकसे, विसर्जन रेचकसे तथा शेष तीनों उपचारोंको कुम्भक प्राणायामसे करे।

पद्मावतीको सिद्ध करनेका मूल मंत्र

ब्रह्मादि लोकनाथं ह्रैंकारं व्योमषान्तमदनोपेतम्।
पद्मे च पद्मकटिनि नमोऽन्तगो मूलमन्त्रोऽयम्॥ ३०॥

पद्मावतीदेवीका निम्नलिखित मूल मन्त्र है—

'ॐ ह्रीं ह्रैं ह क्लीं पद्मे पद्मकटिनि नमः।'

सिध्यति पद्मादेवी त्रिलक्षजाप्येन पद्मपुष्पाणाम्।
अथवारुणकरवीरकसंवृतपुष्पप्रजाप्येन॥ ३१॥

भा० टी०—देवी पद्मावती लाल कमल अथवा लाल कनेरके ढके हुये पुष्पोंपर इस मन्त्रके तीन लक्ष जपसे सिद्ध होजाती है।

पद्मावतीका षडाक्षरी मन्त्र

ब्रह्ममाया च ह्रैंकारं व्योमक्लींकारमूर्द्धगम्।
श्रीं च पद्मे नमो मन्त्रं प्राहुर्विद्यां षडक्षरीम्॥ ३२॥

अथवा उस देवीका यह छह अक्षरोंका मन्त्र है—

"ॐ ह्रीं ह्रैं ह क्लीं श्रीं पद्मे नमः।"



पद्मावतीका त्र्यक्षर मंत्र

वाग्भवं चित्तनाथं च ह्रौंकारं षान्तमूर्द्धगम् ।
बिन्दुद्वययुतं प्राहुर्बुधास्त्र्यक्षरिमामिमाम् ॥ ३३ ॥

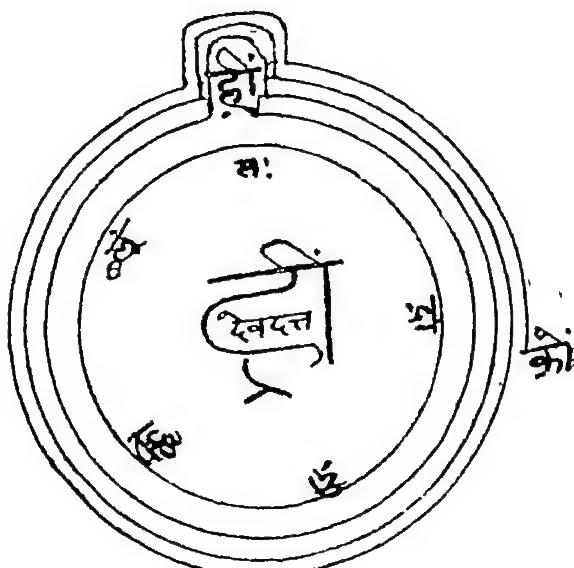
'ॐ ऐं क्लीं ह्रौं नमः' इस मन्त्रको विद्वानोंने त्र्यक्षर मन्त्र कहा है।

पद्मावतीका एकाक्षर मंत्र

वर्णान्तः पार्श्वजिनो यो रेफस्तलगतः स धरणेन्द्रः ।
तुर्यस्वरः सबिन्दुः स भवेत्पद्मावती संज्ञः ॥ ३४ ॥

यंत्र संख्या २

होमकुण्डमें गाडनेका यन्त्र



भा० टी०—वर्णोंका अंतिम अक्षर 'ह' पार्श्वनाथ भगवानका है। नीचे लगनेवाला 'र' धरणेन्द्रका है और 'ई' पद्मावती-देवीका है।

त्रिभुवनजनमोहकरी, विद्येयं प्रणवपूर्वनमनान्ता।
एकाक्षरीति संज्ञा जपतः फलदायिनी नित्यम् ॥ ३५ ॥

भा० टी०—यह 'ॐ ह्रीं नमः' एकाक्षर मन्त्र तीन लोकको मोहित करनेवाली और तुरन्त फल देनेवाली विद्या है।

होमविधि

तत्त्वावृतं नाम विलिख्य पत्रे तद्धोमकुण्डे निखनेत्त्रिकोणे।
स्मरेषुभिः पञ्चभिराभिवेष्ट्य. बाह्ये पुनर्लोकपति प्रवेष्यम् ॥ ३६ ॥

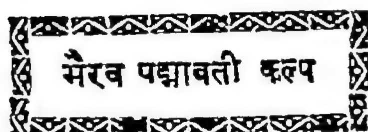
भा० टी०—एक ताम्रपत्रपर नामको ह्रींसे वेष्टित करके उसके चारों ओर कामदेवके पांच बाण 'द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः' को लिखकर बाहिर ह्रींसे वेष्टित करे। इस यंत्रको उक्त त्रिकोण कुण्डमें गाड़ दे।

मधुरत्रिकसम्मिश्रितगुग्गुलकृतचणकमात्रावटिकानाम्।
त्रिंशत्सहस्रहोमात्सिध्यति पद्मावती देवी ॥ ३७ ॥

भा० टी० मधुरत्रिक (घी, दूध, शक्कर) में गूगलको मिलाकर बनाई हुई चनेके बराबर गोलियोंके तीस सहस्र होमसे पद्मावती-देवी सिद्ध होती है।

मन्त्रस्यान्ते नमश्शब्दं देवताऽऽराधनाविधौ।
तदन्ते होमकाले तु स्वाहा शब्दं नियोजयेत् ॥ ३८ ॥

भा० टी०—पहिले मंत्रके अन्तमें 'नमः' लगाकर देवीका जप करे। जपकी समाप्तिपर मन्त्रके अन्तमें 'स्वाहा' लगाकर होम करे। यह सिद्धिकी विधि है।



पार्श्वनाथ भगवानके यक्षकी साधनविधि

दशलक्ष जाप्य होमात्प्रत्यक्षो भवति पार्श्वयक्षोऽसौ ।
न्यग्रोधमूलवासी श्यामाङ्गस्त्रिनयनो नूनम् ॥ ३९ ॥

भा० टी०—निम्नलिखित मन्त्रके दश लक्ष जाप और दशांश होमसे वटवृक्षके नीचे रहनेवाला, कृष्णवर्ण, तीन नेत्रवाला पार्श्वनाथ भगवानका यक्ष सिद्ध हो जाता है ।

मंत्रोद्धार

'ॐ ह्रीं पार्श्वयक्ष दिव्यरूपमहर्षण एहि एहि आं क्रों ह्रीं नमः ।'

निजसैन्यैर्मायामयसमुत्थितैर्वैरिलोकमग्रस्थम् ।
विमुखीकरोति यक्षः संग्रामे निमिषमात्रेण ॥ ४० ॥

भा० टी०—यह यक्ष शत्रुकी बड़ी भारी सेनाको भी अपनी मायामय सेनाके द्वारा युद्धसे क्षणमात्रमें ही भगा देता है ।

वशीकरण चिन्तामणि यन्त्र

खान्त चिन्दूर्द्धरेफं बहिरपि विलिखेदायताष्ठ ञ्जपत्रम् ।
दिक्ष्वैं श्रीं स्मरेशो द्विपवशकरणं क्रौं तथा क्लें पुनर्यू ॥
बाह्ये ह्रीं नमोर्हं दिशिलिखितचतुर्बीजक होमयुक्तं ।
मुक्तिश्रीवल्लभोऽसौ भुवनमपिवशं जायते पूजयेद्यः ॥ ४१ ॥

भा० टी०—एक अष्टदल कमलकी कर्णिकामें हं लिखकर उसके पूर्व आदि दिशाओंके दलोंमें क्रमशः ऐं श्रीं ह्रीं और क्रों

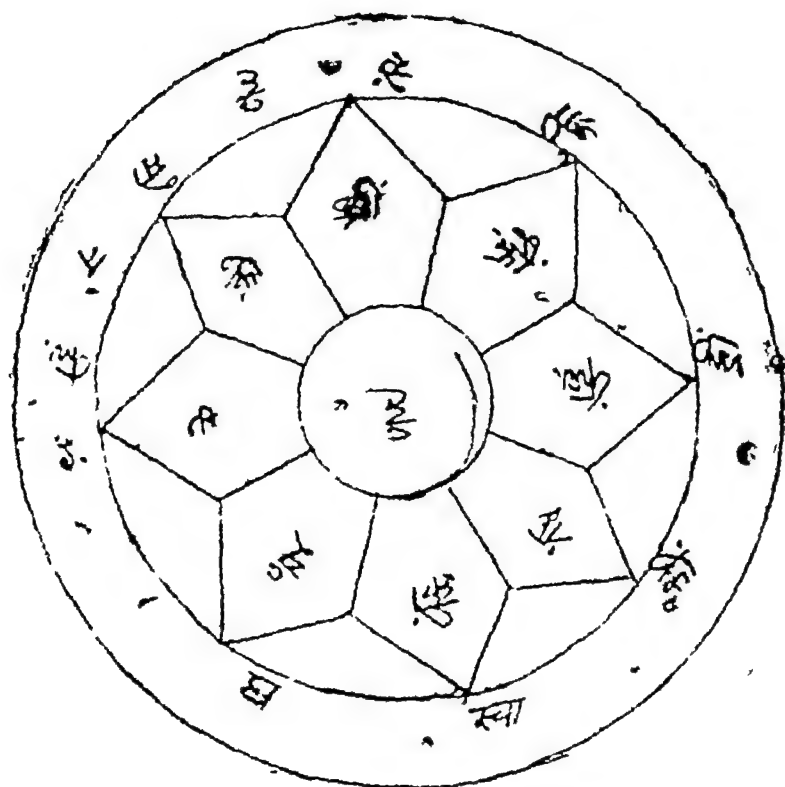
लिखे। तथा विदिशाओंके दलोंमें क्रौं क्ष्रौं ह्लें और यूं लिखे। उसको बाहिर निम्न लिखित मन्त्रसे वेष्टित करदे।

'ॐ ह्रीं नमोऽर्हं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा।'

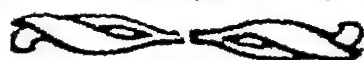
जो व्यक्ति इस चिन्तामणि नामके यन्त्रका पूजन करता है उसके वशमें सम्पूर्ण लोकके साथ२ मुक्तिरूपी स्त्री भी हो जाती है।

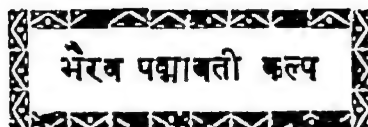
यन्त्र संख्या ३

वशीकरण चिन्तामणि यन्त्र



इति भैरवपद्मावतीकल्पकी भाषाटीकामें 'देवाराधनविधि' नाम तृतीय परिच्छेद समाप्त ॥ ३ ॥





चतुर्थ परिच्छेद



(द्वादशरञ्जिका यन्त्र विधान)

मोहनमें क्लीं रञ्जिका यन्त्र

यन्त्र संख्या ४

यह मोहन विधि में क्लीं रंजिका यंत्र है ।

द्वादशपत्राम्बुरुहं मल्वर्यूंकारसंयुतं कूटम् ।
तन्मध्ये नामयुत विलिखेत् क्रौंकारसंरुद्धव ॥ १ ॥

भा० टी०—एक द्वादश दल कमल बनाकर उनकी कर्णिकामें क्रौंसे रुके हुये तथा मध्यमें नाम सहित क्ष्म्ल्व्र्यूं बीजको लिखे ।

विलिखेज्जयादिदेवी स्वाहान्तोऽङ्कारपूर्विकादिक्षु ।
झभमहपिण्डोपेता विदिक्षु जम्भादिकास्तद्वत् ॥ २ ॥

भा० टी०—उसके पूर्व आदि दिशाओंके दलोंमें जम्भादि देवियोंको आदिमें ॐ और अन्तमें नमः लगाकर लिखे । तथा विदिशाओंमें झ भ म ह के पिण्डों सहित जम्भा आदि देवियोंको लिखे ।

मन्त्रोद्धार—

पूर्व—ॐ जयायै स्वाहा ।
अग्नि—ॐ झ्ल्व्र्यूं जम्भायै स्वाहा ।
क्षिण—ॐ विजयायै स्वाहा ।
नैऋत्य—ॐ भ्ल्व्र्यूं मोहायै स्वाहा ।
पश्चिम—ॐ अजितायै स्वाहा ।
वायव्य—ॐ म्म्ल्व्र्यूं स्तम्भायै स्वाहा ।
उत्तर—ॐ अपराजितायै स्वाहा ।
ईशान—ॐ ह्म्ल्व्र्यूं स्तम्भिन्यै स्वाहा ।

उद्धरितदलेषु ततो मकरध्वजबीजमालिखेच्चतुर्षु ।
गजवशकरणनिरुद्धं कुर्यात्त्रिर्मायया ऽऽवेष्टम् ॥ ३ ॥

भा० टी०—दिशा तथा विदिशाओंके आठों पत्रोंका

मन्त्रोद्धार कर चुकने पर शेष चार दलोंमें मकरध्वज बीज (क्लीं) को लिखे।

अन्तमें इस यन्त्रको तीनवार माया (ह्रीं) से वेष्ठित करके इसका गजवशकरण (क्रों) से निरोध करे।

मूर्जे सुरभिद्रव्यैर्विलिख्य परिवेष्ट्य रक्तसूत्रेण।
निक्षिप्य शिल्पभाण्डे मधुपूर्णे मोहयत्यबलाम् ॥ ४ ॥

भा० टी०—इस यन्त्रको सुगन्धित द्रव्योंसे भोज पत्र पर लिख कर, लाल धागेसे लपेटकर मधुसे भरे हुये कुम्हारके कच्चे बर्त्तनमें रखनेसे यह स्त्रीको मोहित करता है।

इसके मूल मन्त्रका उद्धार

'ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं क्लीं जये विजये अजिते अपराजिते झ्म्ल्व्र्यूं जम्भे झ्ल्व्र्यूं मोहे म्म्ल्व्र्यूं स्तम्भे ह्म्म्ल्व्र्यूं स्तम्भिनि अमुकां मोहय मोहय मम वश्यं कुरु२ आं ह्रीं क्रों वषट्।'

आकर्षणमें ह्री रंजिका यन्त्र

यन्त्र सं० ४	यन्त्र सं० ५	यन्त्र सं० ६
अबलामोहनविधौ क्लींरंजिकायंत्रं ॥ १ क्लीं ह्म्ल्व्र्यूं क्लीं	स्याकर्षणेक्रीं रंजिकायंत्रं॥ २ क्रीं ह्म्ल्व्र्यूं क्रीं	प्रतिषेधकर्मणिक्रूंर ञ्जिकायंत्रः ॥ ३ क्रूं ह्म्ल्व्र्यूं क्रूं
उपरोक्त यन्त्र	उपरोक्त यन्त्रमें बीचमें फारफेर	उपरोक्त यन्त्रमें बीचमें फारफेर

स्त्रीकपाले लिखेद्यंत्रं क्लीं स्थाने भुवनादिकम् ।
त्रिसन्ध्यं तापयेद्रामाकृष्टिः स्यात्खदिराग्निना ॥ ५ ॥

भा० टी०—इस मन्त्रमें क्लींके स्थानमें ह्रीं रखकर इसको स्त्रीके कपालपर लिखकर खदिर (खैर) की अग्निसे प्रातः, मध्याह्न और सायंकालको तपावे तो स्त्रीका आकर्षण होता है।

यह आकर्षणमें ह्रीं रंजिका यन्त्र है—

प्रतिषेधक हुं रंजिका यन्त्र

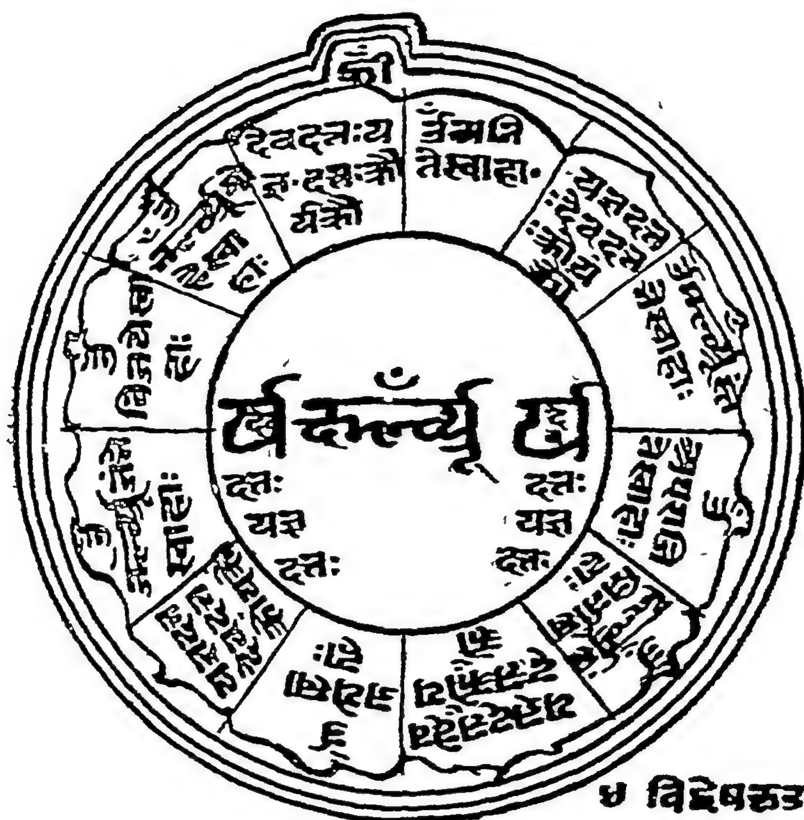
मायास्थाने च हुंकारं विलिखेत् नरचर्मणि ।
तापयेत्क्ष्वेडरक्ताभ्यां पक्षाद्दात्प्रतिपेधकृत् ॥ ६ ॥

भा० टी०—इस मन्त्रमें ह्रींके स्थानमें हु रखकर इसे मनुष्यचर्म पर विष और गधेके रुधिरसे (!) लिखकर एक पक्ष तक तपावे तो प्रतिषेधक होता है।

यह प्रतिषेध कर्ममें हुं रंजिका यन्त्र है—

यन्त्र संख्या ७

विद्वेषक यं रञ्जिका यन्त्र



७ विद्वेषकरणयन्त्र

हुं स्थाने मान्तमालिख्य सरेफं नामसंयुतम् ।
विभितफलके यन्त्रं द्वयोरपि च मर्त्ययोः ॥ ७ ॥

भा० टी०—उपरोक्त यन्त्र हुं के स्थानमें विद्वेष कराये जानेवाले दोनों व्यक्तियोंके नाम सहित यँ बीजको दो भिन्न बहेड़ेकी तख्तियों पर लिखे।

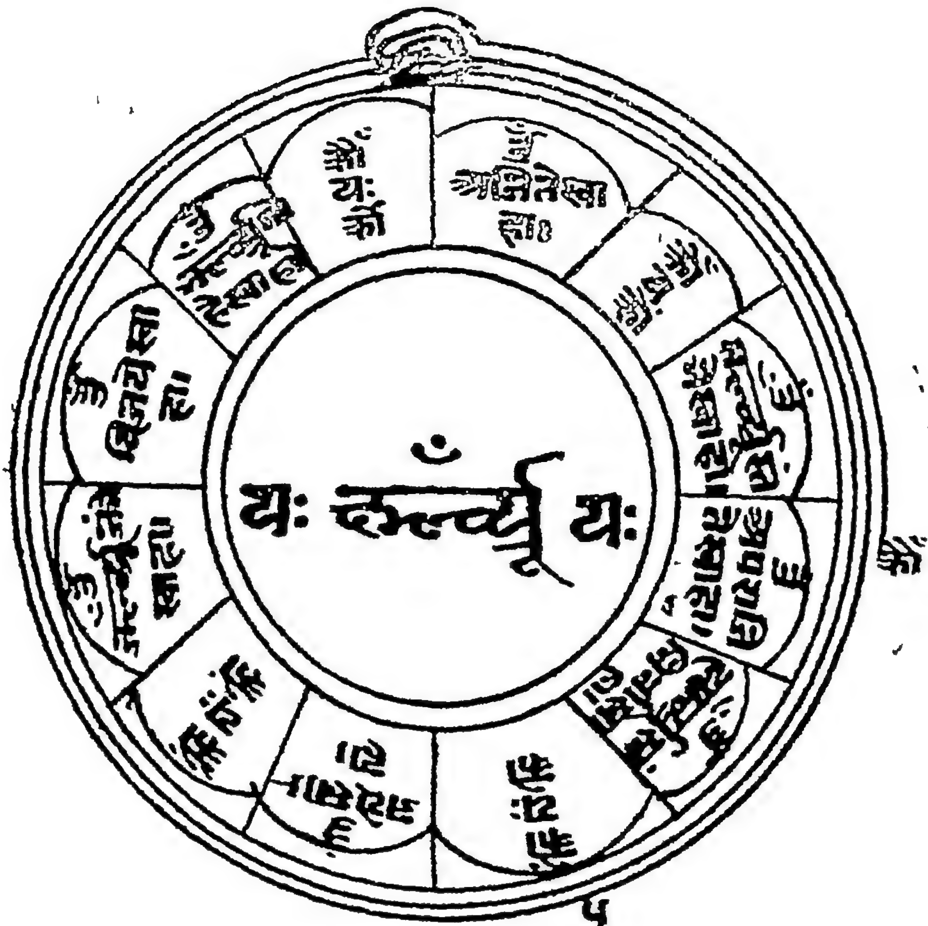
वाजिमाहिषकेशैश्च विपरीतमुखस्तयोः ।

आवेश्य स्थापयेद्भूम्यां विद्वेषं कुरुते तयोः ॥ ८ ॥

भा० टी०—फिर उन दोनों यन्त्रोंको घोड़े और भैंसके बालोंसे लपेटकर स्मशानभूमिमें परस्परमें पीठ मिलाकर गाड़नेसे दोनों व्यक्तियोंमें विद्वेष हो जाता है ।

यन्त्र संख्या ८

शत्रु उच्चाटनमें यः रञ्जिका यन्त्र

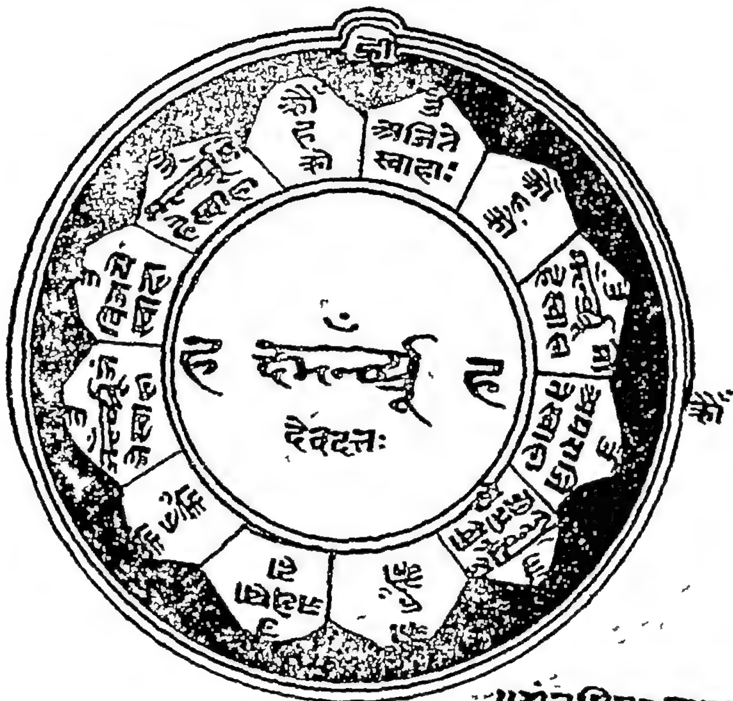


पूर्वोक्ताक्षरसंस्थाने लेखिन्याकाकपक्षयोः ।
'मान्त विसर्गसंयुक्तं प्रेताङ्गारविषारुणैः ॥ ९ ॥
घूकारिविष्टा संयुक्तैर्ध्वजे यन्त्र सनामकम् ।
लिखित्वोपरि वृक्षाणां बद्धमुच्चाटन रिपोः ॥ १० ॥

भा० टी०—उपरोक्त यन्त्रमें कौवेके पङ्खकी कलमके द्वारा, स्मशानभूमिके अंगारे, विष, कौवेके रक्त (!) और कौवेकी बींटसे 'यं' के स्थानमें 'यः' को नाम सहित ध्वजाके ऊपर लिखकर बहेड़ेके पेड़पर बांध देनेसे शत्रुका उच्चाटन होता है।

यन्त्र सख्या ९

उच्चाटनमें हं रंजिका यन्त्र



शृङ्गीगरलरक्ताभ्यां मृतपाळपुटे लिखेत् ।
प्रेतास्थिजावलेखिन्या यः स्थाने तु नभोक्षरः ॥ ११ ॥

भा०टी०—उपरोक्त यन्त्रमें यः के स्थानमें हं बीजको शृङ्गी विष और गधेके रक्तमें (!) मृतककी हड्डीकी कलमसे मनुष्यके कपालपर लिखे ।

स्मशाने क्षिपेद्रोषात्कृत्वा तद्भस्मपूरितम् ।
करोति तत्कुलोच्चाटं वैरिणां सप्तरात्रितः ॥ १२ ॥

भा० टी०—फिर उस यन्त्रको भस्मसे भरकर क्रोधपूर्वक स्मशानमें फेंके तो यह यन्त्र सात दिनमें शत्रुके कुटुम्बभरका उच्चाटन कर देता है । यंत्र सं. १०

उच्चाटनमें फट् रंजिका यन्त्र



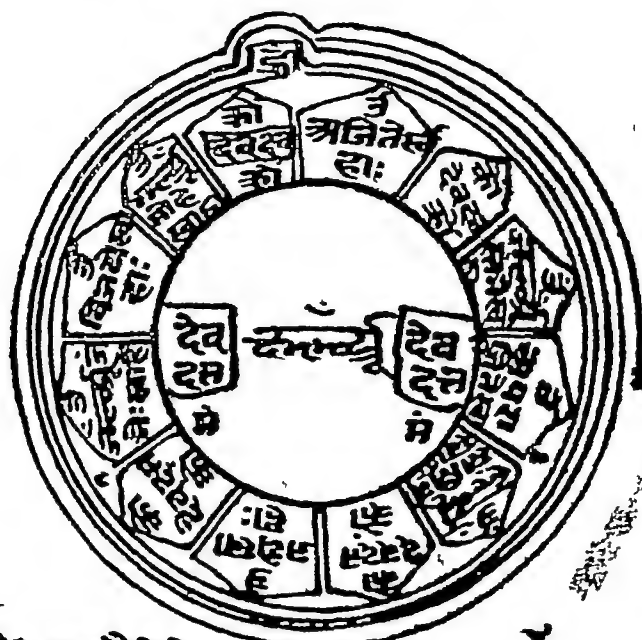
फडक्षर नभस्थाने स्मशानस्थितकर्पटे ।
निम्बार्कजरसेनैतद्विलिखेत्क्रुद्धचेतसा ॥ १३ ॥

भा० टी०—उपरोक्त यन्त्रमें ह्के स्थानमें 'फट' बीजको स्मशानसे लिये हुये कपडेपर नीम और आकके रसमें क्रोधमें भरकर लिखे।

स्मशाने क्षिपेद्यन्त्र यावत्तद्भुवि तिष्ठति ।
परिभ्रामत्यसौ तावद्वैरि काक इव क्षितौ ॥ १४ ॥

भा० टी०—उस यन्त्रको स्मशानमें फेंक दे। जबतक यह यन्त्र बीपर रहता है तबतक शत्रुको आकाशमें कौवेके समान पृथ्विपर घुमाता रहता है। यत्र स. ११

शत्रुके छेदन, भेदन और निग्रहमें म रंजिका यन्त्र



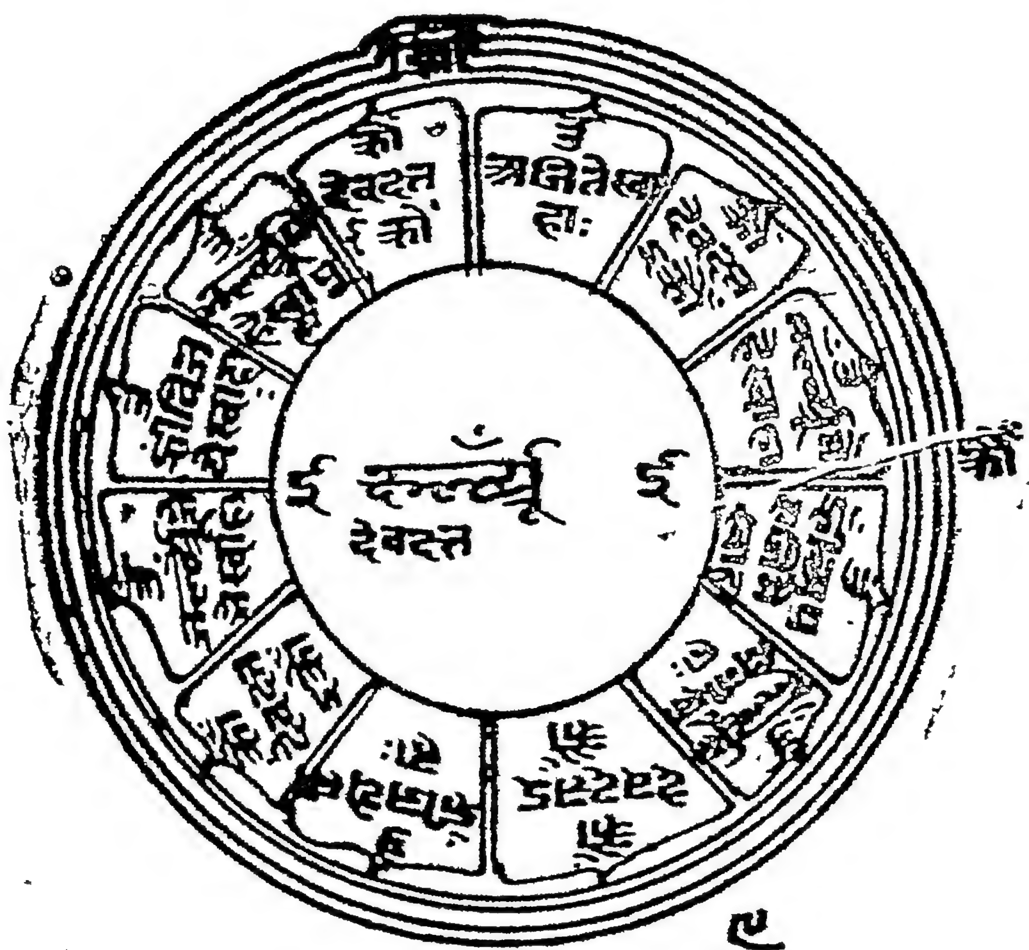
फट्स्थाने लिखेद्भ्रन्त मूर्ज्जेतन्नामसंयुतम् ।
विषोपरक्तयुक्तेन नीलसूत्रेण वेष्टितम् ॥ १५ ॥

भा० टी०—उपरोक्त यन्त्रमें फट्के स्थानमे 'म' बीजको नाम सहित भोजपत्रपर शृङ्गविष और गधेके रक्तसे लिखकर नीले धागेसे लपेट दे ।

मृत्पुत्रकोदरे स्थाप्यं तत्श्मशाने निवेशयेत् ।
सप्ताहाज्जायते शत्रोच्छेदभेदादि निग्रहः ॥ १६ ॥

भा० टी०—फिर उस यन्त्रको मिट्टीके पुतलेके पेटमें रखकर श्मशानमें रखनेसे सातदिनमें शत्रुका छेदन-भेदन और निग्रह आदि होता है ।

यंत्र सं. ८९-वशीकरणमें ईरजिका यन्त्र



तुर्यस्वरं लिखेद्विद्वान् मस्थाने नामसंयुतम्।
कुङ्कुमागुरु कर्पूरैर्भूर्जे रोचनयाऽन्वितम्॥ १७॥

भा० टी०—उपरोक्त यत्रमें 'म' के स्थानमें 'ई' बीजको नाम सहित कुंकुम, अगर, कपूर और गोरोचनसे भोजपत्र पर लिखे।

सुवर्णमिलित कृत्वा बाहौ च धारयेद्गले।
करोतीद सदा यन्त्रं तरुणीजनमोहनम्॥ १८॥

भा० टी०—फिर इस यत्रको सोनेमे मढ़वाकर भुजा या गलेमें पहिने तो यह यंत्र सदा स्त्रियोको मोहित करता है।

यंत्र सं. १३—स्त्री सौभाग्यमें क्ष वषट् रंजिका यन्त्र



वषट्वर्णयुतं कूटं लिखेदीकारधामनि।
भूर्जपत्रे सितेऽत्यन्ते रोचनाकुङ्कुमादिभिः ॥ १९ ॥

भा० टी०—उपरोक्त यंत्रमें 'ई' के स्थानमें 'क्ष वषट्' बीजको अत्यन्त सफेद भोजपत्रपर गोरोचन कुंकुम आदिसे लिखे।

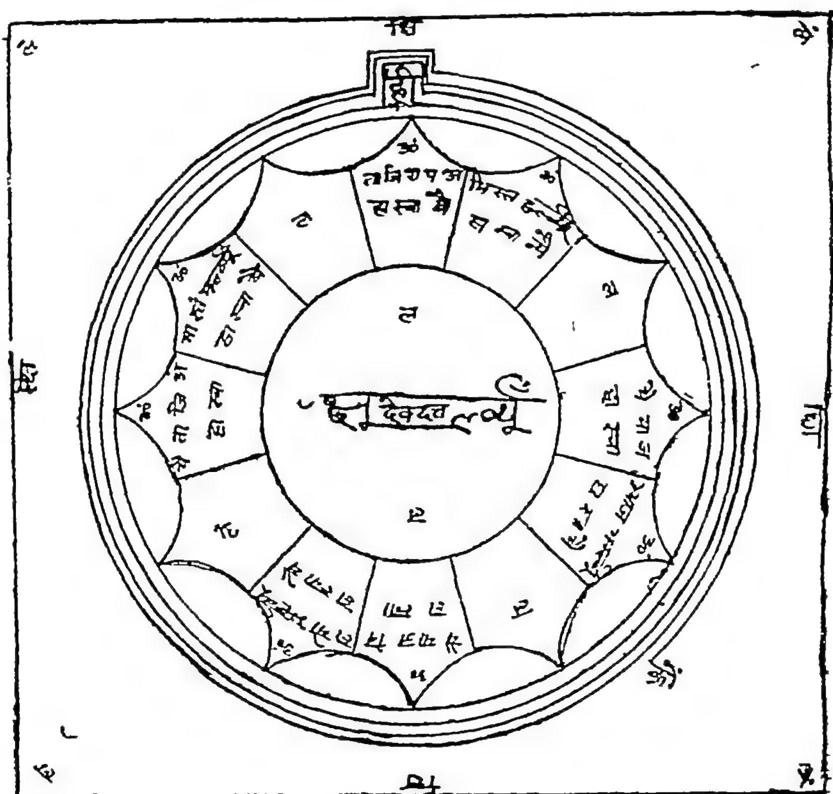
त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा बाहौ कण्ठे च धारयेत्।
स्त्रीसौभाग्यकरं यन्त्रं स्त्रीणां चेतोऽभिरञ्जनम् ॥ २० ॥

भा० टी०—फिर इस यन्त्रको त्रिलोहमें जड़वाकर दाहिनी भुजा और कण्ठमें धारण करनेसे यह यन्त्र स्त्रियोंके सौभाग्यको करता और उनके मनको प्रसन्न रखता है।

(त्रिलोह-सोलह भागोमें बारह भाग तांबा एक भाग लोहा और तीन भाग सोना मिलाकर त्रिलोह बनाया जाता है)

यन्त्र संख्या १४

स्थम्भनमें लं रजिका यन्त्र



क्षाद्यक्षरपदे येज्यं ल शिलातलसम्पुटे ।
विलिख्योर्वीपुरं बाह्ये स्तम्भने तालकादिभिः ॥ २१ ॥

भा० टी०—उपरोक्त यन्त्रमें 'क्ष वषट्' के स्थानमें दो शिलाओंके सम्पुट पर 'ल' बीजको लिखकर उसके बाहिर चारों ओर हरताल आदिसे पृथ्वीमण्डल बनाकर रखे तो स्तम्भन होता है।

यंत्र सं. १५–गृहादि शांतिमें रक्षिका यंत्र



यह गृहादि शांति कर्म मे श्री रक्षिका यंत्र है।

स्तम्भने तु मैन्द्र निजबीजमैन्दं श्रीकुङ्कुमाद्यैर्लिखित सुभूर्ज्जे।
त्रिलोहवेष्ट्यं विधृतं स्वबाहौ करोति रक्षां ग्रहमारीरुग्भ्यः ॥ २२॥

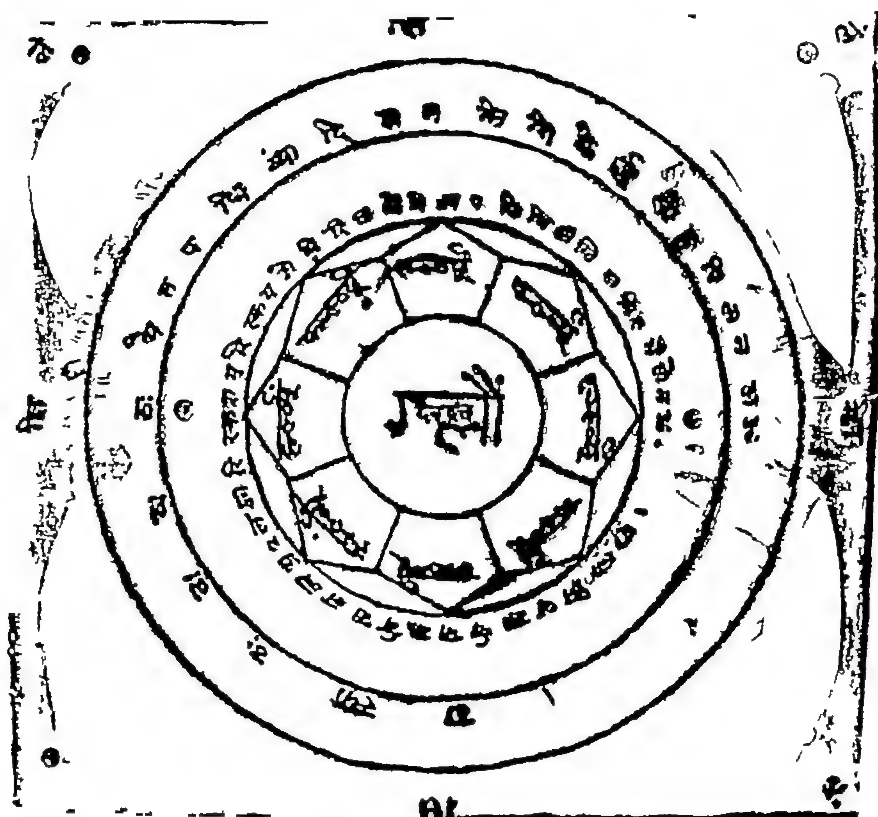
भा० टी०—इन यन्त्रोंमेंके बीजोंके स्थानमें ऐन्द्रबीज श्रीको स्तम्भन करनेके प्रयोजनमें श्री कुंकुम आदिसे उत्तम भोजपत्रपर लिखकर यदि त्रिलोहमें जड़वाकर अपनी दाहिनी भुजामें पहिने तो यह यन्त्र ग्रह, मारी और रोगोंसे रक्षा करता है।

इति भैरव पद्मावतीकल्पकी भाषाटीकामें 'द्वादश रञ्जिका विधान' नाम चतुर्थ परिच्छेद समाप्त।

पंचम परिच्छेद

स्तम्भन यन्त्र

यंत्र संख्या १६—अग्निस्तंभन यन्त्र प्रथम



क्षमठसहफलबवर्णग्मिलबरयूंकारसयुतान्विलिखेत ।
अष्टदलेषु क्रमशो नाम ग्लौं कर्णिकामध्ये ॥ १ ॥

भा० टी०—एक अष्टदल कमलकी कर्णिकामें नाम सहित ग्लौं लिखकर आठों दलोंमें पूर्वादि क्रमसे क्ष्म्ल्व्र्यूं, मल्व्र्यूं, ठम्ल्व्र्यूं, सम्ल्व्र्यूं, ह्म्ल्व्र्यूं, फम्ल्व्र्यूं, लम्ल्व्र्यूं, और म्ममल्व्र्यूं बीजोंको लिखे।

मन्त्राभ्यामावेष्ट्य बाह्ये भूमण्डलेन संवेष्ट्य ।
कुङ्कुमहरितालाद्यैर्लिखेदात्मेप्सितस्तम्भः ॥ १ ॥

भा० टी०—फिर इसको निम्नलिखित दो मन्त्रोंसे घेरकर बाहिर पृथ्वीमण्डल बनावे। इस यन्त्रको केशर और हरीताल आदिके द्वारा लिखनेसे अपने इष्टका स्तम्भन होता है।

प्रथम मन्त्रोद्धार—

ॐ नमो भैरवि अग्निस्तम्भिनि पश्यदिव्योत्तारिणि श्रेयस्करि यशस्करि ज्वलर प्रज्वलर सर्वकामार्थसाधनि स्वाहा।

दूसरे मन्त्रका उद्धार—

'ॐ अनलपिङ्गलोर्द्ध्वकेशिनि महादिव्याधिपतये ठःठः स्वाहा।' ॥२॥

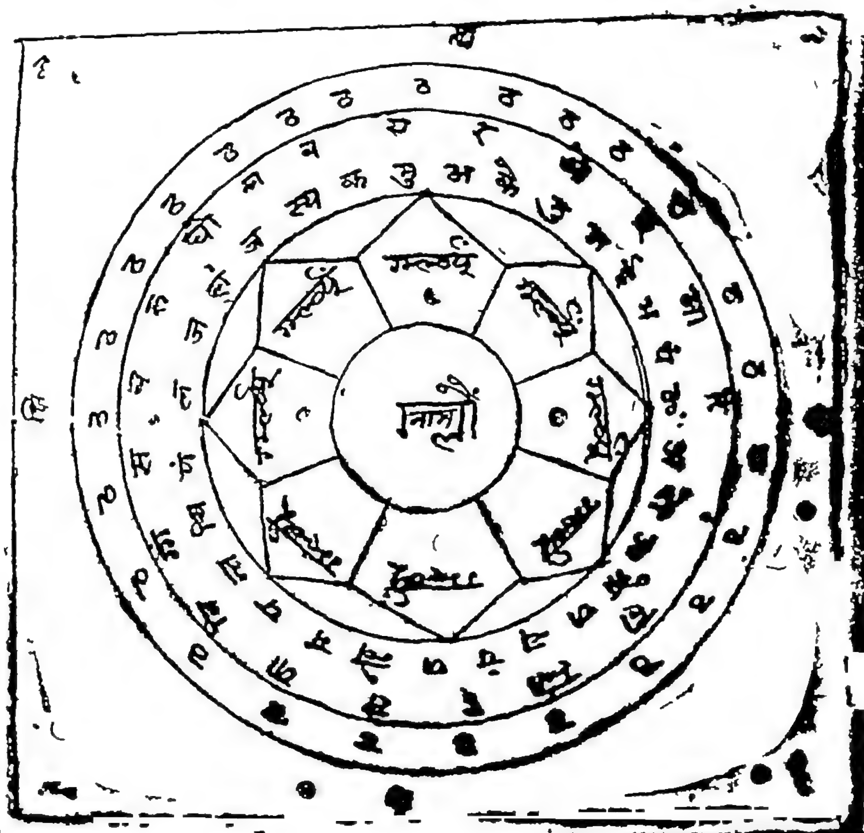
वाणीस्तम्भन ध्यान

त्रींकारं चिन्तयेद्वक्त्रे विवादे प्रतिवादिनाम् ।
त्रां वा रेफं ज्वलन्तं वा स्वेष्टसिद्धिप्रदायकम् ॥ ३ ॥

भा० टी०—प्रतिवादियोंसे शास्त्रार्थके समय अपनी इच्छित सिद्धिको देनेवाले त्रीं या त्रां या जलते हुये रेफ (रं) बीजका ध्यान करे।

यंत्र संख्या १७

अग्निस्तम्भन यन्त्र द्वितीय



नाम ग्लौं खान्तपिण्ड वसुदलसहिताम्भोजपत्रे विलिख्य ।
वतिपण्ड तेपु योज्य वहिरपि वलय दिव्यमन्त्रेण कुर्यात् ॥
टान्तं भूमण्डलान्त विपुलतरशिलासम्पुटे कुङ्कुमाद्यै-
र्धार्यं श्रीवीरनाथक्रमयुगपुरतो वह्नि दिव्योपशान्त्यै ॥ ४ ॥

भा० टी०—एक अष्टदल कमलकी कर्णिकामें नामको ग्लौंके अन्दर लिखकर आठों दलोमें ग्म्ल्व्र्यूं पिण्डको लिखे। उसके

बाहिर दिव्य मन्त्र तथा 'ठ' के बलय बनाकर बाहिर पृथिवी-मण्डल बनावे। इस यन्त्रको बड़ी भारी शिलाओंके सम्पुट पर केशर आदिसे लिखकर दिव्य अग्निका शांतिके वास्ते श्री भगवान् महावीरस्वामीके चरणयुगलके सामने रक्खे।

दिव्य मन्त्रका उद्धार—

ॐ थंभेइ अमुके अमुकस्य जलं जलणं चिन्तय मन्त्रेण पञ्च णमोकारो अरिमारि चोर एव लघोरुवसग्गं विणासेइ स्वाहा—

यन्त्र संख्या १८

जल, तुला, सर्प और पक्षिस्तम्भन यन्त्र



यन्त्र संख्या १९

दिव्य तुला स्तम्भन यन्त्र



दिव्येषु जलतुलाफणिखगेषु वपहक्षपिण्डमाविलिखेत् ।
पूर्वोक्ताष्टदलेष्वपि पूर्ववदन्यत्पुनः सर्वम् ॥ ५ ॥

भा० टी०—पूर्वोक्त आठ दलोंके मध्यमें जल दिव्यमें म्ल्व्र्यूं, तुलादिव्यमें प्म्ल्व्र्यूं, फणिदिव्यमें ह्म्ल्व्र्यूं और खग दिव्यमें क्ष्म्ल्व्र्यूं बीजको लिखे और शेषको उसी प्रकार रहने दे ।

यन्त्र संख्या २०

दिव्य सर्प स्तम्भन यन्त्र



अर्थात् उपरोक्त अग्निस्तम्भन यन्त्र द्वितीयके समान चार यन्त्र और बनावे। केवल उनकी कर्णिकाके बीजोंको बदल कर शेष

यन्त्र संख्या २१

दिव्य पक्षी स्तम्भन यन्त्र

यन्त्रको उसी प्रकार बना रहने दे। इनमेंसे—

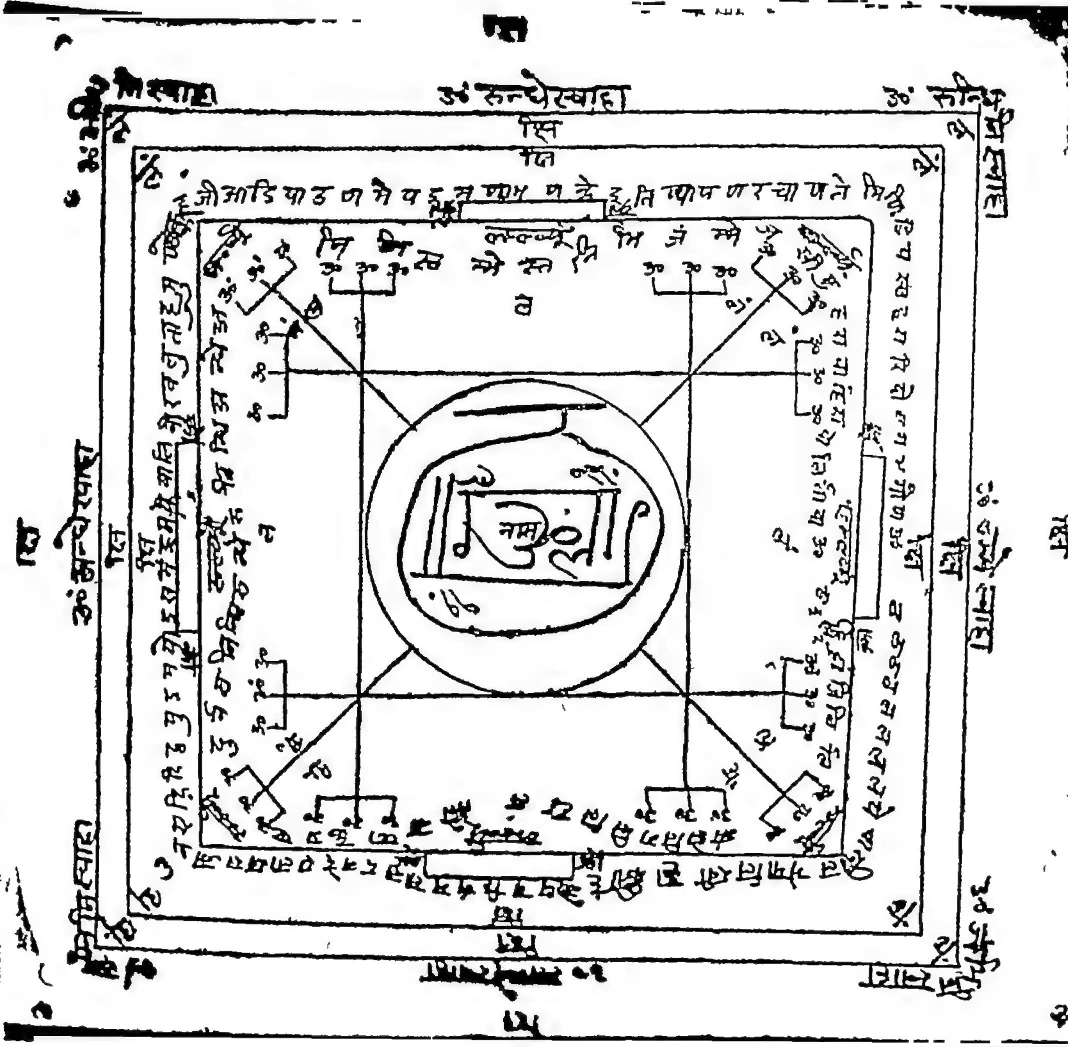
जिसकी कर्णिकामें म्ल्व्र्यूं बीज हो वह दिव्य जलका स्तभन करता है। जिसकी कर्णिकामें फ्ल्व्र्यूं बीज हो वह दिव्य तुलाका स्तम्भन करता है। जिसकी कर्णिकामें ह्म्ल्व्र्यूं बीज हो वह दिव्य सर्पका स्तम्भन करता है और जिसकी कर्णिकामें क्ष्म्ल्व्र्यूं बीज हो वह दिव्य पक्षिका स्तम्भन करता है।

यन्त्र संख्या २२

क्रोध, गति, सेना और जिव्हास्तम्भक वार्तालि यन्त्र

ब्रह्मग्लौंकारपुटं ठान्तावृतमष्टवज्रसंरुद्धम् ।
वामं वज्राग्रगतं तदन्तरो रान्तबाजञ्च ॥ ६ ॥

भा० टी०—नामको ब्रह्म (ॐ) ग्लौंके संपुट और 'ठं' बीजसे घेर कर आठ वज्रोंसे घेर दे। वज्रोंके अग्रभागमे वाम



(ॐ) लगावे और उनके अन्तरालमें रान्त (ल) बीजको लगावे।

वार्तालीमन्त्रवृतं बाह्येष्टसु दिक्षु विन्यसेत्क्रमशः।
मलवरयूंकारयुतान् क्षमठसहपरान्तलान्त च ॥ ७ ॥

भा० टी०—उसको वार्तालि मन्त्रसे घेरकर उसके बाहिर आठों दिशाओंमें क्रमशः क्ष्म्ल्व्र्यूं, भ्म्ल्व्र्यूं, ठ्म्ल्व्र्यूं, स्म्ल्व्र्यूं, ह्म्ल्व्र्यूं, प्म्ल्व्र्यूं, और व्म्ल्व्र्यूं बीजोंको लिखे।

वार्तालि मन्त्रका उद्धार—

ॐ वार्तालि वाराहि वाराहमुखि जम्भे जम्भिनि स्तम्भे स्तंभिनि अन्धे अन्धिनि रुन्धे रुन्धिनि सर्वदुष्टप्रदुष्टानां क्रोधं लि लि गतिं लि लि सेनां लि लि जिव्हां लि लि ठः ठः ठः।

बाह्येऽमरपुरपरिवृतमङ्कुशरुद्धं करोतु नद्द्वारम्।
उक्षेशमन्त्रवेष्ट्यं पृथिवीपुरसम्पुटं बाह्ये ॥ ८ ॥

भा० टी०—उसको बाहिर अमरपुरसे घेरकर उस अमरपुरके चारों द्वारोंको अंकुश (क्रों) से रोक दे। उसके चारों ओर उक्षेश मंत्र लिखकर बाहिर पृथिवीमण्डलका सम्पुट बनावे।

उक्षेश मन्त्रका उद्धार—

"ॐ णमो भगवदो रिसहस्स पंडिणिमित्तेण चारणपण्णति-इन्द्रेण भणामइययेण उपाडि आजीहकण्ठोठमुहतालुवरबीलियायेमइ भंसइ यो मइ दुट्ठदिट्ठिए बक्कसंखलाए देवदत्तसामणं हि पयं कोहं जीहा खीलियाभेलखीयाये ल ल ल ल ठ ठ ठ ठ।"

कोणेष्वष्टसु विलिखेद्वार्तालीमन्त्रभणितजम्भादीन्।
ठद्वितियं धरणीपुरमीदृशमिदमालिखेत्प्राज्ञः ॥ ९ ॥

भा० टी०—उसके बाहिर आठों दिशाओंमें वार्ताली मंत्रमें

कही हुई जम्भा आदि देवियोंको लिखे। उसके आगे दो ठकार और फिर पृथिवीमण्डल बनावे। बुद्धिमान् इस प्रकारका मन्त्र बनावे।

आठों देवियोंके मन्त्रोंका उद्धार—

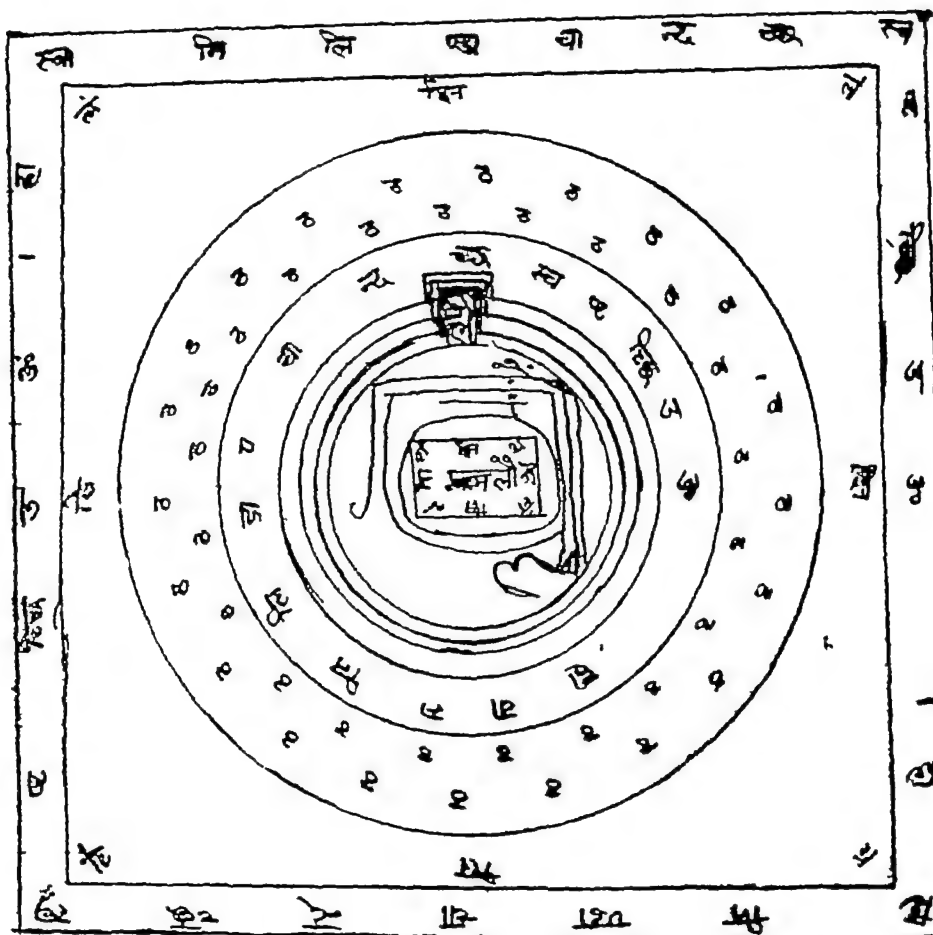
"ॐ जम्भे स्वाहा। ॐ जम्भिनि स्वाहा। ॐ स्तम्भे स्वाहा। ॐ स्तम्भिनि स्वाहा। ॐ अन्धे स्वाहा। ॐ अन्धिनि स्वाहा। ॐ रुन्धे स्वाहा। ॐ रुन्धिनि स्वाहा।"

फलके शिलातले वा हरितालमनःशिलादिभिर्लिखितम्।
कोपगतिसैन्यजिव्हास्तम्भ विदधाति विधियुक्तम्॥ १०॥

भा० टी०—यह यन्त्र काठकी तखती अथवा पत्थरकी शिला पर हड़ताल और मनशिल आदिसे विधिपूर्वक लिखा जानेसे क्रोध, गति, सेना और जिव्हाका स्तंभन करता है।

यन्त्र संख्या २३

दिव्यवस्तु स्तम्भक यंत्र



नामग्लौंमुर्वीपुरवंपंग्लौंकारवेष्टितं कृत्वा ।
ह्रींकारचतुर्वलयं स्वानामयुक्तं ततो लेख्यम् ।। ११ ।।

भा० टी०—नामको क्रमशः ग्लौं, पृथिवीमण्डल, वं पं और ग्लौंसे वेष्टित करके उसके चारों ओर ह्रीं के ४ वलय बनावे ।

ॐ उच्छिष्टपदस्याग्रे स्वच्छन्दपदमालिखेत् ।
ततश्चाण्डालिनीस्वाहा टान्तयुग्मकवेष्टितम् ।। १२ ।।

भा० टी०—उसके पश्चात् 'ॐ उच्छिष्टस्वच्छन्दचाण्डालिनी स्वाहा' इस मन्त्रसे वेष्टित करके दो ठ से वेष्टित करे।

पृथिवीवलयंदत्त्वां पूर्वोक्तमन्त्रेण वेष्टयेद्बाह्ये ।
रजनीहरितालाद्यैर्भूर्जे विधिनान्वितो विलिखेत ।। १३ ।।

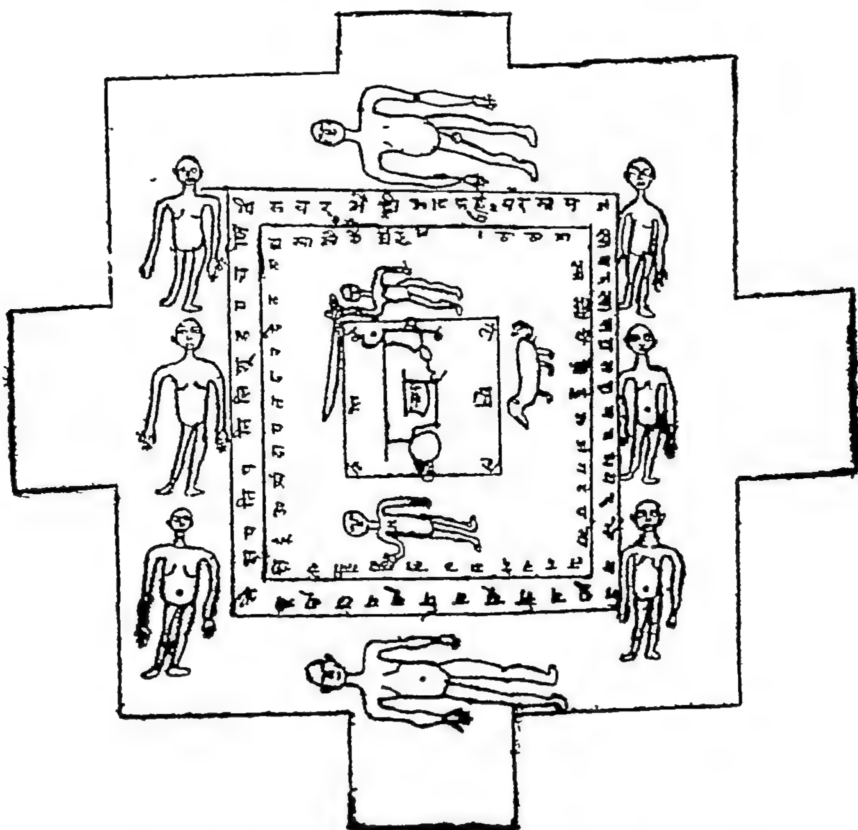
भा० टी०—फिर पृथिवीमण्डल बनाकर उसके बाहिर पूर्वोक्त मन्त्रसे ही वेष्टित करदे। इस यन्त्रको केशर और हड़ताल आदिसे विधिपूर्वक भोजपत्र पर लिखे ।

तत्कुलालकरमृत्तिकावृतं तोयपूरितघटे विनिक्षिपेत् ।
पार्श्वनाथमुपरिस्थमर्चयेत् दिव्यशोधनविधानमुत्तमम् ।।१४।।

भा० टी०—इस यंत्रको कुम्हारके हाथकी मिट्टीसे घिरे हुये जलसे भरे हुये घड़ेमें रखकर उसके ऊपर पार्श्वनाथ भगवान्‌की पूजा करे। यह दिव्य वस्तुओंके स्तंभनका उत्तम विधान है ।

यन्त्र संख्या २४

सेना स्तम्भक यन्त्र



रिपुनामान्वितं मान्तं मलवरयूंकारसंयुतं टान्तम् ।
तद्बाह्ये भूमिपुरं त्रिशूलभूतोग्रमृगवेष्ट्यम् ॥ १५ ॥

भा० टी०—शत्रुके नाम सहित और ठम्ल्व्र्यूं को लिखकर उसके बाहिर पृथिवीमण्डल बनाकर उसको त्रिशूल, भूत और हिंसक पशुओंसे घेर देवे ।

प्रतिरूपहस्तखड्गैर्निहन्यमानारिरूपपरिवेष्ट्यम् ।
शत्रोर्नामान्तरितैं समन्ततो वेष्टयेत्पिण्डैः ॥ १६ ॥

भा० टी०—शत्रुके नामके बाहिर प्रतिशत्रु (शत्रुके शत्रु) के हाथ शस्त्रसे मारे जाते हुवे शत्रुकी मूर्तिको बनाकर उसको चारों ओर शत्रुके नामके बाहिरके पिण्ड म्ल्व्र्यूँ घेर दे ।

प्रतिरिपुवाजिमहागजनामान्तरितं समन्ततो मन्त्री ।
विलिखेदों हूं ह्रीं ऐं ग्लौं स्वाहा टान्तयुग्मान्तम् ॥ १७ ॥

फिर उसको निम्नलिखित मन्त्रसे घेर देवे ।
"ॐ हूं ह्रीं ऐं ग्लौं स्वाहा ठः ठः अमुकस्य पट्टाश्वं ॐ हूं ह्रीं ऐं ग्लौं स्वाहा ठः ठः अमुकस्य पट्टगजं ॐ हूं ह्रीं ऐं ग्लौं स्वाहा ठः ठः ॥"
(इस मंत्रमें अमुकके स्थानमें शत्रुका नाम लिखा देना चाहिये ।)

मन्त्रेण वेष्टयित्वाऽनेन ततो शत्रुविग्रहो लेख्यः ।
अष्टासु दिक्षु बहिरपि माहेन्द्रमण्डलं दद्यात् ॥ १८ ॥

भा० टी०—फिर उसको निम्नलिखित मत्रसे वेष्ठित करके आठों दिशाओंमें शत्रुकी मूर्ति लिखे और उसके बाहिर माहेन्द्र मण्डल बनावे—

भेदय२ ग्रस२ खादय२ मारय२ हुं फट् ।
प्रेतवनात्सञ्ज्वालितमृतकमुखोत्थितपटेऽथवा विलिखेत् ।
कृष्णाष्टम्यां युद्धात्त्यक्तप्राणस्य संग्रामे ॥ १९ ॥

भा० टी०—इस यन्त्रको स्मशानसे लाए हुये मृतकके

मुखपरके वस्त्र अथवा कृष्णाष्टमीको युद्धमें मरे हुये योद्धाके वस्त्रपर लिखे।

कन्याकर्तितसूत्रं दिवसेनैकेन तत्पुनर्वीतम्।
तस्मिन् हरितालाद्यैः कोरंटकलेखनी लिखितम् ॥२०॥

भा० टी०–कन्या द्वारा कते हुये सूतका एक दिनमें ही कपड़ा बुनवा कर उसपर इस यन्त्रको कोरटकी कलम और हरिताल आदिसे लिखे।

पद्मावत्याः पुरतः पीतैः पुरा समभ्यर्च्य।
यन्त्रपटं बध्नीयाग्मख्याते चोन्नतस्तम्भे ॥२१॥

भा० टी०–फिर इस यन्त्रको पद्मावतीदेवीके सामने पीले पुष्पोंसे पूजन करके इसको एक अत्यन्त ऊंचे प्रसिद्ध स्तंभमें बांध दे।

तं दृष्ट्वा दूरतरान्नश्यन्ति भयेन विह्वलीभूताः।
विरचितसेनाव्यूहात्संग्रामेऽशेषरिपुवर्गाः ॥२२॥

भा० टी०–इस यन्त्रको दूरसे देखकर युद्धमें सेनाका व्यूह बनाये हुये सब शत्रु लोग भयसे विह्वल होकर भाग जाते हैं।

इति भैरव पद्मावतीकल्पकी भाषाटीकामें 'स्तम्भन यन्त्राधिकार' नामका पंचम परिच्छेद समाप्त।

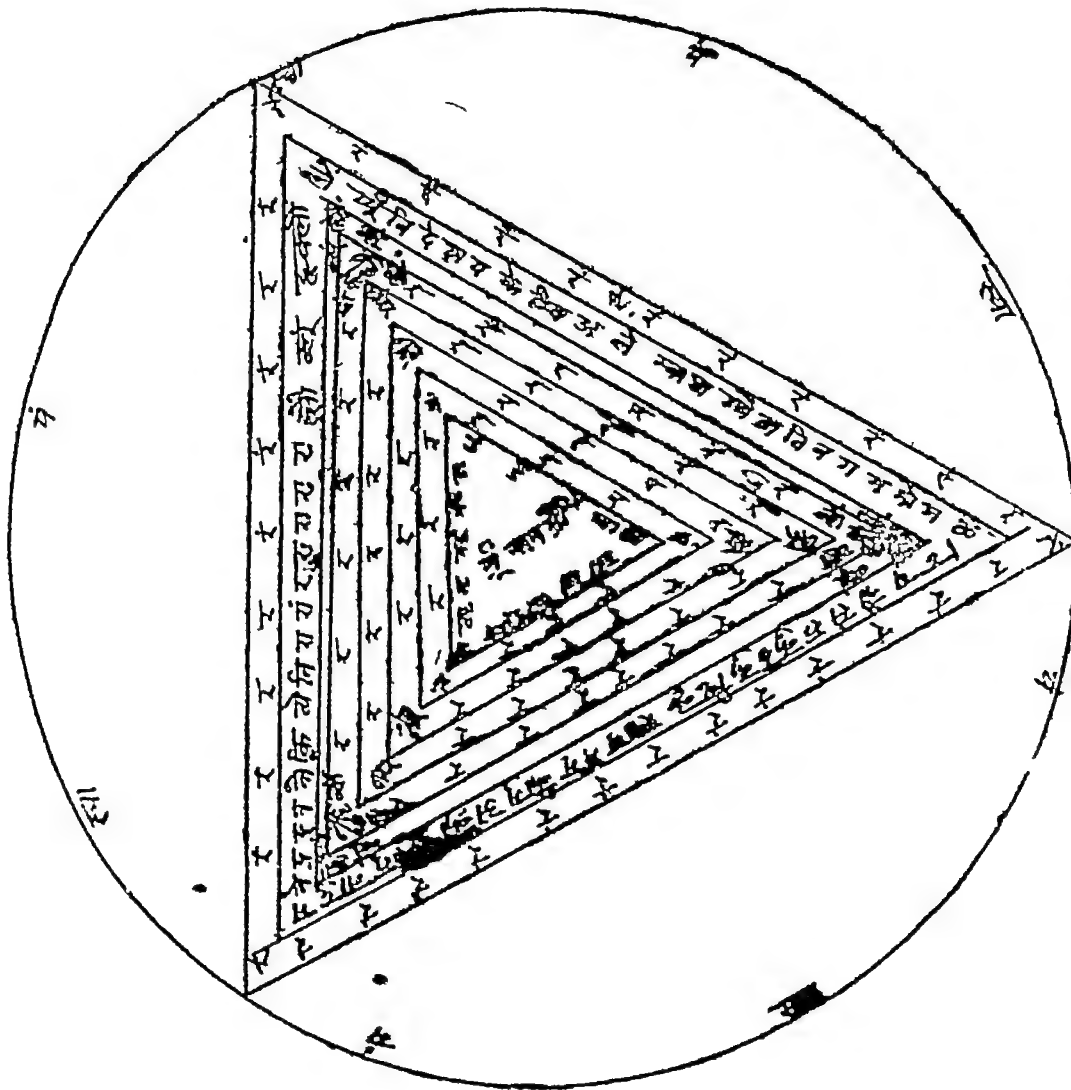


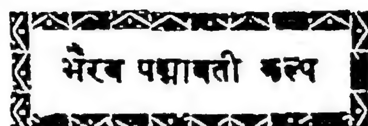
षष्ठम परिच्छेद

(स्त्री आकर्षण यंत्र)

यंत्र संख्या २५

इष्टाङ्गनाकर्षण यन्त्र प्रथम





द्विरेफयुक्त लिख मान्तयुग्मं षष्ठस्वरौकारयुतं सबिन्दुः।
स्वरावृत पञ्चपुराणि बहिः रेफात्क्रमात्क्रोमर२ ह्रीं च कोणे ॥१॥
ब्लेंकाररुद्धं च तथा ह्म्क्ल्रीं ब्लूंकाररुद्धं च ह्रौं तथैव।
क्रमेण दिक्षु त्रिषु चाम्बिकायाः मत्र बहिर्वह्निमरुत्पुरञ्च ॥२॥

भा० टी०-र्यूं और यौं बीजोंको सोलहों स्वरोंसे घेरकर उनके चारों ओर पांच अग्नि मंडल बनावे। उनमेंसे प्रथम मण्डलके तीनों कोनोंमें यं बीज, द्वितीयमें क्रों, तृतीयमें ह्रीं, चतुर्थमें ब्लेंसे रुका हुआ ह्स्क्ल्रीं बीज और पञ्चममें ब्लूंसे रुका हुआ ह्रौं बीज लिखकर मण्डलोंके चारों ओर अम्बिका मन्त्र लिखे। और उसके बाहिर अग्नि मण्डल तथा वायु मण्डल बनावे।

मन्त्रोद्धार—

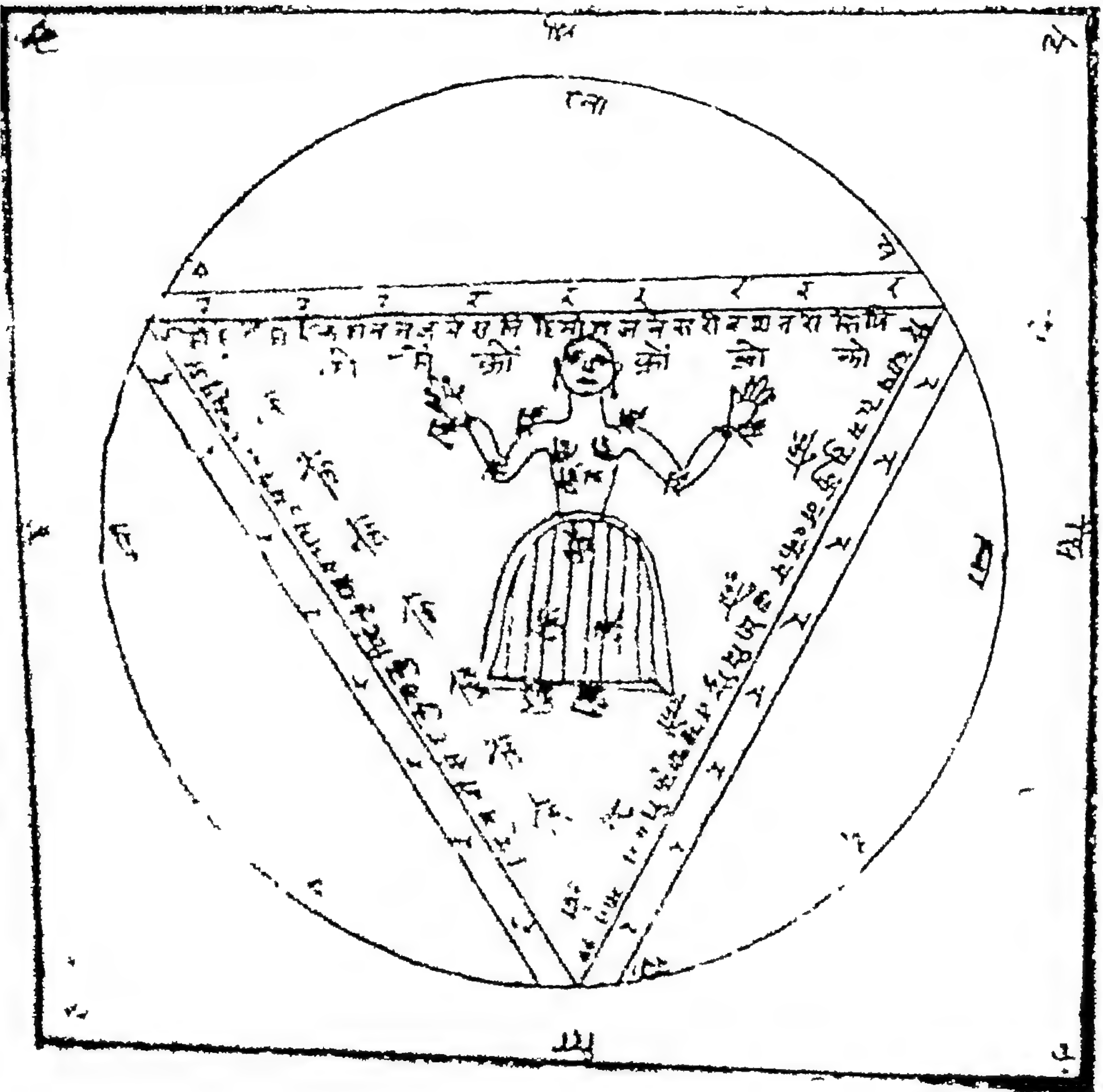
"ॐ नमो भगवति अम्बे अम्बाले अम्बिके यक्षदेवि र्यूं ब्लें ह्स्क्ल्रीं ब्लूं ह्रौं रः रः रः रः रः रां रां नित्ये क्लिन्ने मदद्रवे मदनातुरे ह्रीं क्रों अमुकीं मम वश्य कृष्टिं कुरु २ संवौषट्।"

इष्टाङ्गनाकर्षणमाहुराद्या धत्तूरताम्बूलविषादिलेख्यम्।
यन्त्र पटे खर्परताम्रपत्रे दिनत्रये दीपशिखाग्नितप्तम् ॥ ३ ॥

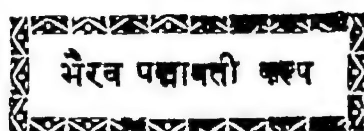
भा० टी०—इस यन्त्रको धतूरे पानके रस और शृङ्गीविष आदिसे वस्त्र, खर्पर या ताम्रपत्रपर लिखकर तीन दिनतक दीपककी शिखापर तपानेसे यह इच्छित स्त्रीका आकर्षण करता है।

यंत्र संख्या २६

इष्टाङ्गनाकर्षण यंत्र द्वितीय



ॐ ह्रीं हृत्कमले गजेन्द्रवशगां सर्वाङ्गसन्धिष्वपि ।
मायामालिखितेत्कुचद्वितययोर्मूर्ध्नि योनिदेशे तथा ॥



क्रोंकारैः परिवेष्ट मन्त्रवलय दद्यात्पुरं चानलं।
तद्बाह्येऽनलभूपुरं त्रिदिवसे दीपाग्निनाकर्षणम् ॥ ४ ॥

पत्रे स्त्रीरूपमालिख्यमूर्द्धपादमधः शिरः।
ब्रह्मादिराजिकाधूमभानुदुग्धेन लेपयेत् ॥ ५ ॥

एक ताम्रपत्रपर अपनी इच्छित स्त्रीके रूपको ऊपरको पैरे और नीचेको शिर करके बनावे। उसके हृदयकमलमें 'ॐ ह्रीं' शरीरके सब जोड़ोमें 'क्रों' दोनों कुचोंमें 'ह्रीं' और योनिदेशमें 'ग्र्यूं' लिखकर उसको चारों ओर 'क्रों' से घेरकर मन्त्रका वलय, अग्निमण्डल, वायुमण्डल और पृथिवीमण्डल बनावे।

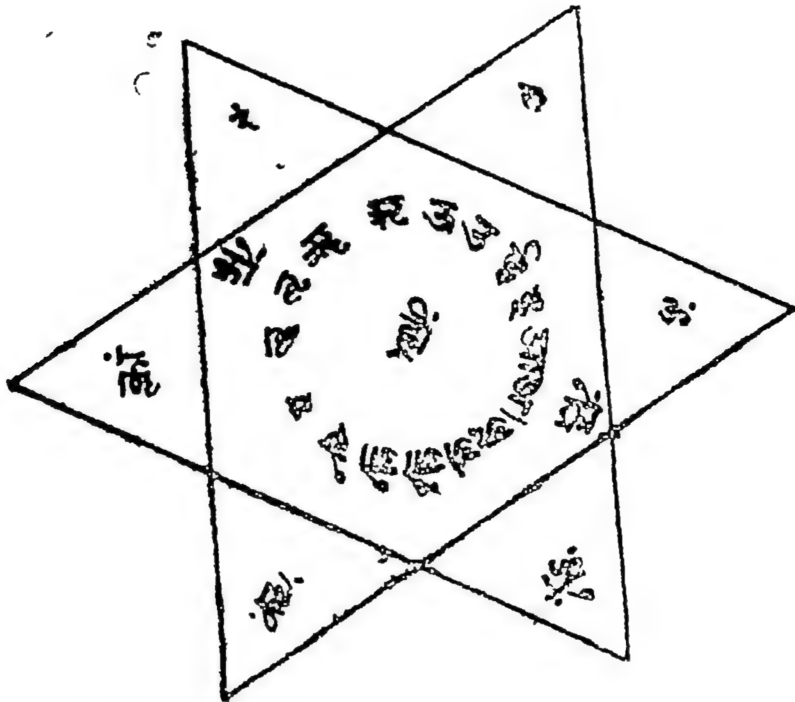
इस यन्त्रको धतूरे, सफेद सर्सों, गेहू और आकके दूधसे ताम्रपत्रपर लिखकर तीन दिन तक दीपककी अग्निपर तपानेसे इच्छित स्त्रीका आकर्षण होता है।

मन्त्रोद्धार—

ॐ नमो भगवति कृष्णमातङ्गिनि शिलावल्कलकुसुमरूपधारिणि किरातशबरीसर्वजनमोहिनि सर्वजनवशकरि ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अमुकां आकर्षय २ समवश्याकृष्टिं कुरु कुरु संवौषट्।

यंत्र संख्या २७

स्त्री आकर्षण यंत्र तृतीय—



अग्निपुटकोष्ठमध्ये कलावृत भुवननाथमंकुशरुद्धम् ।
कोष्ठेषु प्रणवांकुशमायारतिनाथररश्च ॥ ६ ॥

भा० टी०—दो अग्नि मण्डलोंके सम्पुटके बीचमें सोलह स्वरोंसे घिरे हुये 'ह्रीं' बीजको लिखकर उसके दोनों ओर क्रों बीज लिखे। छहों कोनोमें क्रमशः ॐ, क्रों, ह्रीं, क्लीं, रं और रः बीजोंको लिखे।

कृष्णशुनकस्य जङ्घाशल्ये प्रविलिख्य बाहुरक्तेन ।
खदिराङ्गारैस्तप्तं सप्ताहादानयत्यबलाम् ॥ ७ ॥

भा० टी०—यह यंत्र काले कुत्तेकी हड्डीमें अपने हाथके नाखूनसे रक्तसे लिखा हुआ खैरके अंगारोंपर तपाया जानेसे स्त्रीका ७ दिनके भीतर आकर्षण करता है।

अथवा रजस्वलाया वस्त्रे संलिख्य जलजनागिन्याः ।
पुच्छं विधाय वर्ति तद् पादानयेन्नारीम् ॥ ८॥

भा॰ टी॰—अथवा इस यंत्रको रजस्वलाके वस्त्र पर लिखकर उस सहित पनियाली नागिनका पूंछको बत्ती बनाकर जलानेसे स्त्रीका आकर्षण होता है।

यंत्र संख्या २८

स्त्री आकर्षण यन्त्र चतुर्थ

पाशाङ्कुशौ क्रोंकारस्मान्तररूपौ मन्त्रावृत वायुपुरस्य बाह्ये।
आकृष्टिमिष्ट प्रमदाजनानां करोति यन्त्रं स्त्रीदरोग्नितप्तं ॥१०॥

ह्रींकारमध्ये प्रविलिख्य नाम षट्कोणचक्र बहिराभिलेख्य ।
कोणेषु तत्त्व त्रिषु चोर्ध्वकोणद्वये पुनर्य्यूमधरों लिखेच ॥ ९ ॥

भा० टी०—ह्रींके मध्यमें स्त्रीके नामको लिखकर उसके बाहिर षट्कोण चक्र बनावे, उसके ऊपरके त्रिभुजके तीनों कोणोंमें ह्रीं, ऊपरके दोनों कोणोंमें य्यूं और नीचे ॐ को लिखे।

पाशाङ्कुशौ कोणशिखान्तरस्थौ मन्त्रावृतं वायुपुरञ्च बाह्ये ।
आकृष्टिमिष्टप्रमदाजनानां करोति यन्त्र खदिराग्नितप्तम् ॥ १० ॥

भा० टी०—उसके प्रत्येक कोणके ऊपर आं और क्रों को लिखे। फिर इन सबको निम्नलिखित मन्त्रसे वेष्टित करके उसके बाहिर वायुमण्डल बनावे। यह यन्त्र खैरकी अग्निसे तपाया जानेसे इच्छित स्त्रियोंका आकर्षण करता है।

मन्त्रोद्धार—

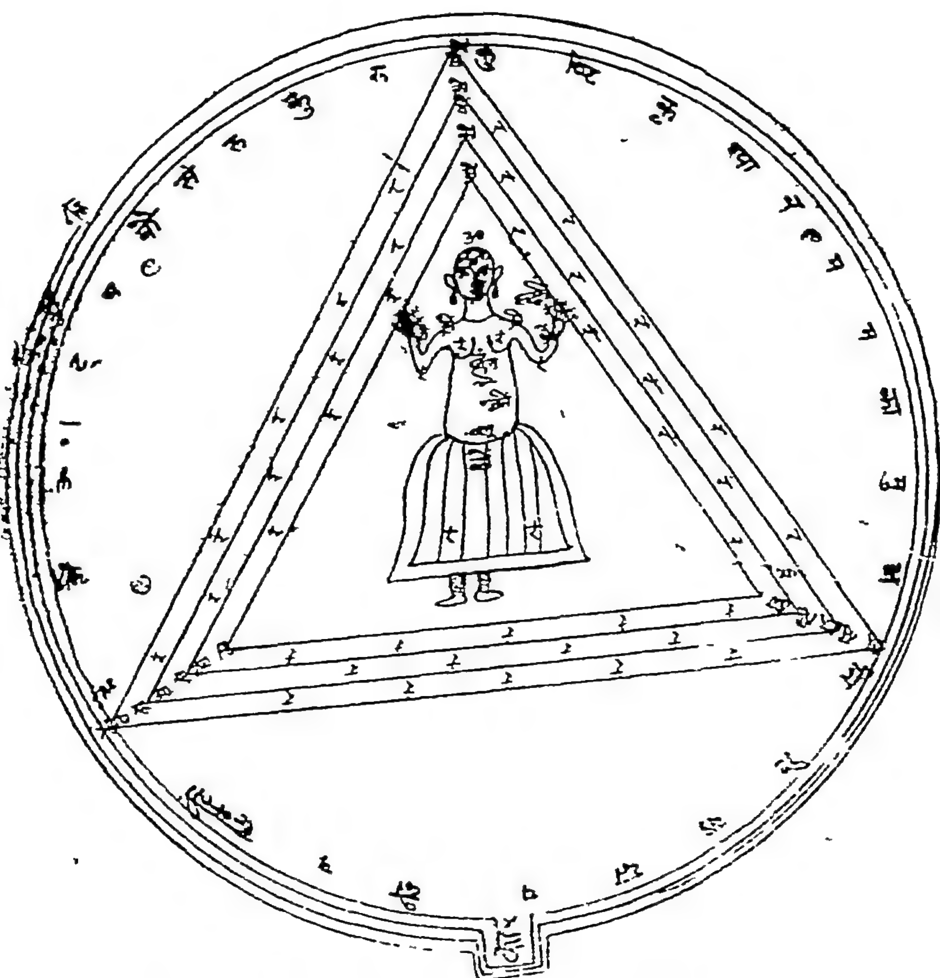
'ॐ ह्रीं ह्स्क्लीं ह्स्क्लीं आं क्रों य्यूं नित्य क्लिन्ने मदद्रवे मदनातुरे अमुकं मम वश्याकृष्टिं कुरु२ संवौषट्।'

लिखित्वा ताम्रपत्रे वा श्मशानोद्भवखर्परे ।
तदङ्गमलधत्तूरविषाङ्गारप्रलेपितम् ॥ ११ ॥

इस यन्त्रको ताम्रपत्र या श्मशानके खप्परपर स्त्रीके अंगके कूचों मल, धतूरे, शृङ्गीविष और अंगारसे लिखना चाहिये।

यंत्र संख्या २९

स्त्री आकर्षण यन्त्र पंचम



ह्रीं वदने योनौ क्लें ह्रक्लीं कण्ठे तु स्मराक्षरं नाभौ।
हृदये द्विरेफयुक्तं हूङ्कारं नामसंयुक्तम्॥ १२॥

भा॰ टी॰—एक चित्र अपनी इच्छित स्त्रीका बनाकर उसके मुखमें ह्रीं, योनिमें ब्लें, कण्ठमें ह्क्ष्रीं, नाभिमें क्लीं, हृदयमें हूं तथा स्त्रीका नाम लिखे।

नाभितले ब्लोङ्कारं वेदादिं मस्तके च संविलिखेत्।
स्कन्धमणिबन्धकूर्परपदेषु तत्त्वं प्रयोक्तव्यम्॥ १३॥

भा॰ टी॰—नाभिके नीचे ब्लूं मस्तकमें ॐ तथा कंधों, हाथकी कलाई कनपटो और पैरोंमें ह्रीं बीजको लिखे।

तस्तले य्यूंकारं सन्धिषु शाखासु शेषतो रेफान्।
त्रिपुटितवह्निपुरत्रयमथ तद्बाह्ये प्रदेशेषु॥ १४॥

हथेलियोंमें य्यूं जोड़, अगुलियो और शेष अगोंमें रेफ लिखकर उसके बाहिर तीन अग्नि मण्डलोंकी पुट बन वे।

कोष्टेषु भुवननाथं कोष्ठाग्रान्तरनिविष्टमङ्कुशबीजम्।
वलयं पद्मावत्या मन्त्रेण करोतु तद्बाह्ये॥ १५॥

भा॰ टी॰—उस अग्नि मण्डलकी पुटके नौ कोठोमें ह्रीं तथा कोठोंके ऊपर क्रों बीज लिखे। उसके चारों ओर पद्मावतीके निम्नलिखित मन्त्रका वलय बनावे।

पद्मावतीका मन्त्र—

'ॐ ह्रीं ह्रैं ह्स्क्लीं पद्मे पद्मकटिनि अमुकां मम वश्याकृष्टिं कुरु कुरु संवौषट्।'

अंकुशरोधं कुर्यात्तद्बाह्ये मायया त्रिधाऽऽवेष्ट्यम्।
यावकमलयजचन्दनकाश्मीराद्यैरिदं लिखेद्यन्त्रम्॥ १६॥

भा॰ टी॰—उसके बाहिर तीनबार ह्रींसे वेष्ठित करके क्रोंसे निरोध करदे। इस यन्त्रको अलक्तक, अगरु, चन्दन तथा केशर आदिसे लिखे।

वस्त्रे रजस्वलायाः खदिराङ्गारेणतापयेद्धीमान् ।
कुरुतेऽभिलषितवनिताऽऽकृष्टिं सप्ताहमध्येन ॥ १७ ॥

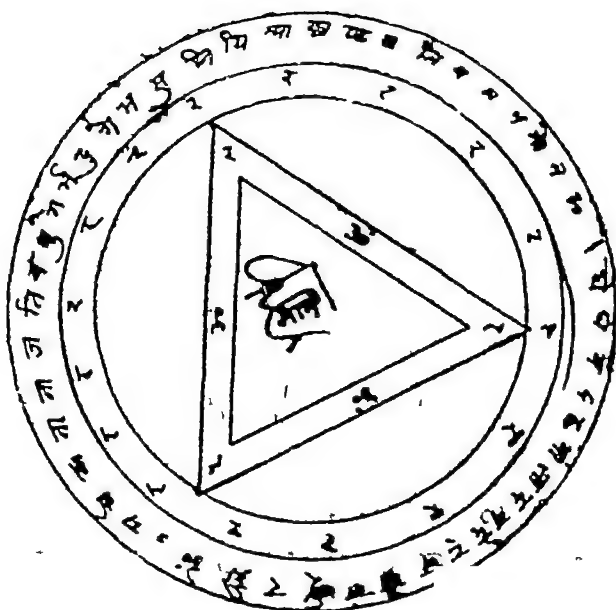
भा० टी०—बुद्धिमान् इस यन्त्रको रजस्वलाके वस्त्रपर लिखकर खैरके अंगारोंपर तपावे तो यह यन्त्र एक सप्ताहके भीतर २ इच्छित स्त्रीका आकर्षण करता है।

रविदुग्धादिविलिप्ते युवतिकपालेऽथवा लिखेद्यन्त्रम् ।
पुरुषाकृष्टौ च पुनः नृकपाले यन्त्रमेवेदम् ॥ १८ ॥

भा० टी०—अथवा इस यन्त्रको आकके दूध, थूहरके दूध, गृहधूम, सफेद सर्सों और नमक आदिसे किसी स्त्रीके कपालपर लिखे। पुरुष आकर्षण करनेमें इसी यन्त्रको पुरुषके कपालपर लिखे।

यत्र संख्या ३०

स्त्री आकर्षण यन्त्र षष्ठ



नाम तत्त्वविगर्भितं बहिरालिखेच्छिखिमण्डलं,
रेफमन्त्रवृतं स्मशानखर्परे विलिखेदिदम् ।
तापयेत्खदिराग्निना हिमकुङ्कुमादिरादरा-
दानयत्यबलां बलाद्दिनसप्तकैर्मदविह्वलाम् ॥ १९ ॥

भा० टी०—नामको ह्रींके अन्दर लिखकर उसके बाहिर अग्नि मण्डल बनावे, उसके चारों ओर रकार लिखकर निम्नलिखित मन्त्र स्मशानके खप्परपर चन्दन, केशर आदिसे आदरपूर्वक लिखकर यदि खैरके अंगारोंपर तपावे तो स्त्री मदसे विह्वल होकर सात दिनके अंदर २ आजाती है।

मन्त्रोद्धार—

ॐ नमो भगवति चण्डकात्यायिनि सुभंग दुर्भगयुवति जननाकर्षयर ॐ ह्रीं र र्म्ल्व्र्यूं संवौषट् देवदत्तायां हृदय घे घे ।

इति भैरवपद्मावती कल्पकी भाषाटीकामें "स्त्री आकर्षणयन्त्राधिकार" नामक षष्ठम परिच्छेद समाप्त ॥ ६ ॥

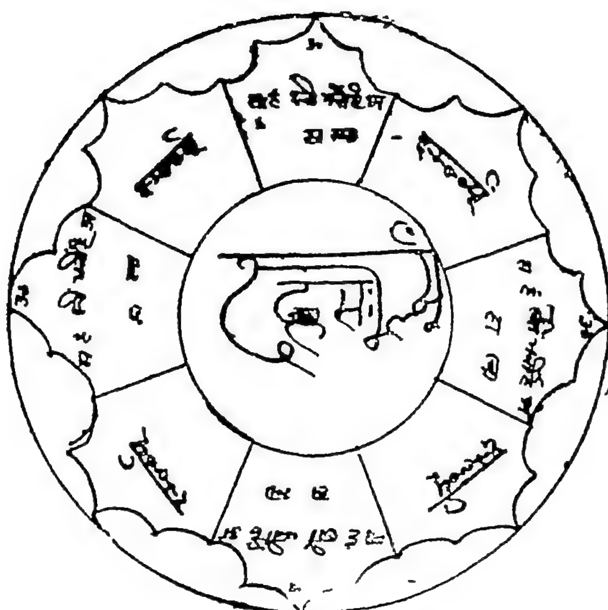


सप्तम परिच्छेद

वश्य यन्त्र

यन्त्र संख्या ३१

दाहज्वर शांत करनेका यन्त्र



हंसः वृताभिधानं मलवरयषष्ठस्वरान्वितं कूटम् ।
बिन्दुयुतं स्वरपरिवृतमष्टदलाम्भोजमध्यगतम् ॥ १ ॥

भा० टी०—हंसः पदसे घिरे हुये नामको क्ष्म्ल्व्र्यूं बीजसे घेरकर उसको स्वरोंसे घेर दे और उसके चारोंओर एक अष्टदल कमल बनावे ।

तेजोऽर्हं सोमसुधाहंसःस्वाहेति दिग्दलेषु लिखेत्।
आग्नेयादिदलेष्वपि पिण्डं यत्कर्णिकालिखितम् ॥२॥

भा० टी०—उस कमलकी पूर्वादि दिशाओंके दलोंमें 'ॐ अर्हं झ्वीं क्ष्वीं हसः स्वाहा' मन्त्र लिखकर विदिशाओंमें क्ष्म्ल्व्र्यूं पिण्डको लिखे।

भूर्जे सुरभिद्रव्यैर्विलिख्य तत्सिक्थकेन परिवेष्ट्य।
नूतनघटेऽम्बुपूर्णे तद्यन्त्रं स्थापयेद्धीमान् ॥ ३ ॥

भा० टी०—बुद्धिमान इस यन्त्रको कुंकुम कपूर आदिसे सुगन्धित द्रव्योंसे भोजपत्र पर लिखे। फिर इसको मोममें लपेटकर जलसे भरे हुये नये घड़ेमें रखदे।

तन्दुलपूर्णं मृन्मयभाजनमप्युपरि तस्य संस्थाप्य।
श्री पार्श्वनाथसहितं करोति दाहज्वरोपशमम् ॥ ४ ॥

भा० टी०—उसके ऊपर चांवलोंसे भरे हुये मिट्टीके बर्तनकी स्थापना करके उसके ऊपर श्री पार्श्वनाथ भगवानकी स्थापना करनेसे यह यन्त्र दाहज्वरको शान्त करता है।

श्रीखण्डेन तद् लिख्य पाययेत्कांस्यभाजने।
महादाहज्वरग्रस्तं तत्क्षणेनोपशाम्यति ॥ ५ ॥

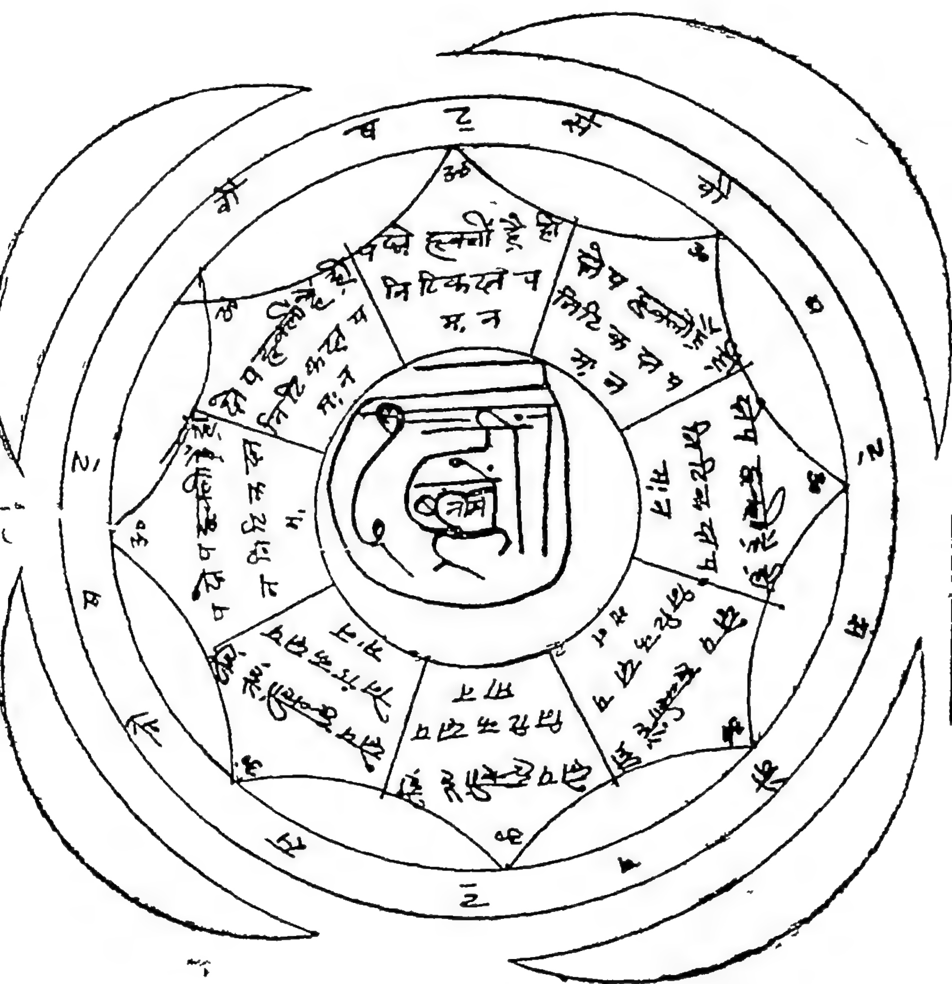
भा० टी०—अथवा इस यन्त्रको कांसेके बर्तनपर श्रीखण्डसे लिखकर पिला देनेसे महा दाहज्वर भी उसी क्षण शांत हो जाता है।

मन्त्रोद्धार—

"ॐ नमो भगवते पार्श्वचन्द्राय क्ष्म्ल्व्र्यूं र्हं झ्वीं क्ष्वीं हंसः अ सि आ उ सा स्वाहा।"

यन्त्र संख्या ३२

वश्य यन्त्र प्रथम



क्लैं तत्त्वकूटेन्दुवृतं स्वनाम तद्बाह्यभागेष्टदलाब्जपत्रम् ।
पत्रेषु पद्मावरमूलमन्त्रं वेष्टयं तदाकर्षणपल्लवेन ॥ ६ ॥

भा० टी०—ब्लैं ह्रीं क्ष और ठ से घिरे हुये अपने नामको लिखकर उसके बाहिर अष्ट दल कमल बनावे। उसके पत्रोंमें पद्मावतीका मूल मन्त्र लिखकर उसको आकर्षण पल्लव (संवौषट्) से वेष्टित करदे।

मन्त्रोद्धार—

"ॐ ह्री हैं हम्क्ली पद्मे पद्मकायिने नमः।"

यन्त्र ततश्चार्द्ध शशिप्रवेष्यं विलिख्य यन्त्रं फलके वटस्य।
गोरोचनासयुक्तकुंकुमाद्यैः साध्यस्य नानारुगचन्दनेन ॥ ७ ॥

भा० टी०—फिर इस यन्त्रको अर्धचन्द्राकार रेखासे घेरकर वटवृक्षकी तखतीपर गोरोचन या केशर आदिसे लिखें। साध्यके नामवाले यन्त्रको लाल चन्दनसे लिखें।

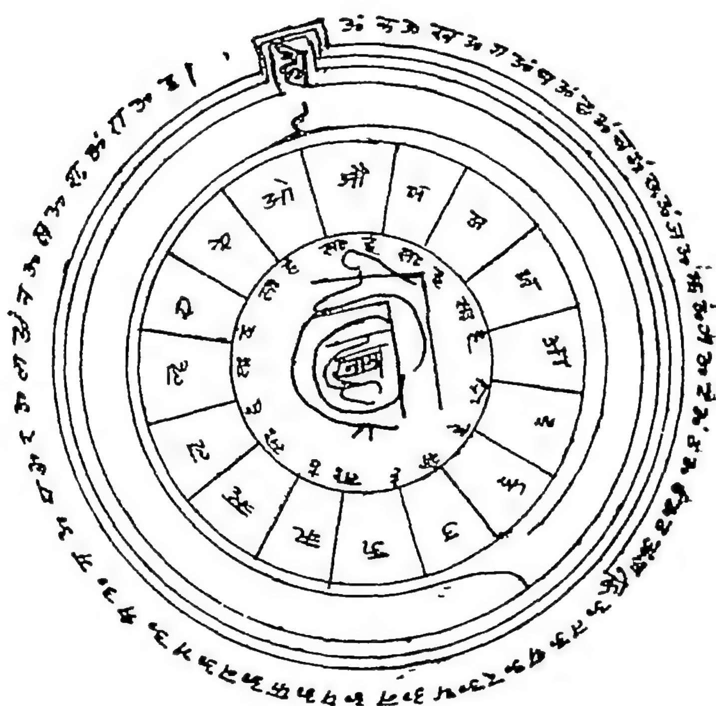
कृत्वा ततश्चोभयसम्पुटञ्च श्रीपार्श्वनाथस्य पुरोनिवेश्य।
सन्ध्यासु नित्य करवीरपुष्पैर्भवेद्वश्य जपतःसुसाध्यम् ॥ ८ ॥

भा० टी०—तब उन दोनोंका मुख मिलाकर श्री पार्श्वनाथ भगवानके सामने रखकर प्रातः साय और दोपहर तीनों संध्याओंमें कनेरके फूलोंसे जप करनेसे यन्त्र सिद्ध होता है।



यंत्र संख्या ३३

वश्य यन्त्र द्वितीय



अन्त्यवर्ग तृतीय तुर्यवकार तत्ववृताह्वयं ।
हंसवर्णवृतं ततो द्विगुणीकृताष्टदलाम्बुजम् ॥
तेषु षोडशसत्कलाशिरसोनशून्यवृत बहि-
र्मायया परिवेष्टितं प्रणवादिकाभिरावृत्तम् ॥ ९ ॥

अन्त्यवर्ग (ऊष्मों) के तृतीय (स) चतुर्थ (ह) और ह्रीं से घिरे युये नामको 'हस' से घेरकर बाहिर सोलह दल कमल बनाकर उनमें सोलह कलायें लिखे। फिर उसको ।शर सहित हकारसे वेष्टित करके माया (ह्रीं) से वेष्टित करे और बाहिर 'ॐक' से लेकर 'ॐ१' तक लिखे।

यन्त्रमाविलिखेदिदं हिमकुङ्कुमागुरूचन्दनैः ।
भूर्जके फलकेऽथवा भुवि गोमयेन विमार्जिते ॥
प्रत्यहं विधिना समं जपतोऽरूणप्रसवै भृशं ।
तस्य पादसरोजषट्पदसन्निभं भुवनत्रयम् ॥ १० ॥

भा० टी०—इस यन्त्रको भोजपत्र, बटकी तखती अथवा गोवरसे लीपकर शुद्ध की हुई भूमिपर कपूर, केशर, अगरु व चन्दनसे लिखकर प्रतिदिन निम्नलिखित मन्त्रका लाल कनेरके फूलोंसे विधिपूर्वक जप करनेवालेके चरण कमलोंमें जगत भौंरेके समान लोटार फिरता है । मन्त्रोद्धार—

'ॐ ह्रीं हस्क्लीं क्लें ह्रं अ सि आ उ सा अनाहत विद्यै नमः ।'

यन्त्र संख्या ३४-वश्य यन्त्र तृतीय



नक्षान्तर्गत नाम मायया परिवेष्टितम् ।
वेष्टितं कमराजेन बाह्ये षोडशपत्रकम् ॥ ११ ॥

भा० टी—नामको क्रमशः ॐ ह्रीं और क्लीं से वेष्टित करके उसके बाहिर सोलह दल कमल बनावे ।

पञ्चबाणा न्यसेत्तेषु स्वाहान्तोङ्कारपूर्वकान् ।
तद्बाह्ये मायया वेष्ट्य क्रोङ्कारेण निरोधयेत् ॥ १२ ॥

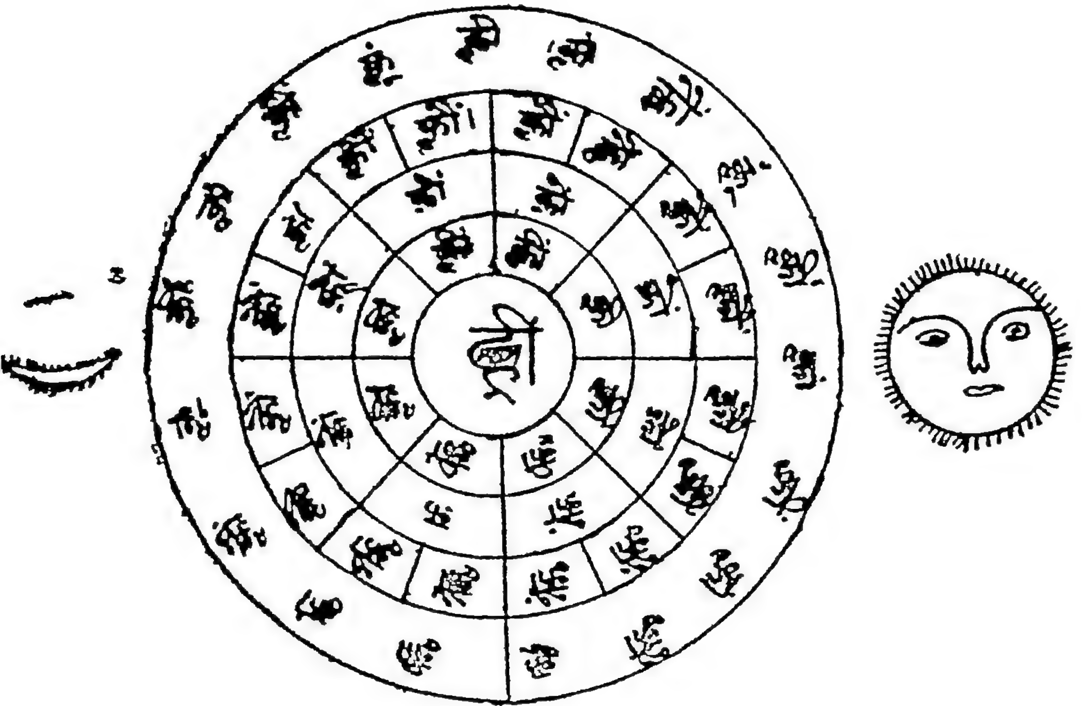
भा० टी०—इन सोलहों दलोंमें 'ॐ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः स्वाहा' इस मंत्रको लिखकर बाहर ह्रीं से वेष्टित करके क्रोंसे निरोध करे ।

भूर्जे पत्रे पटे वाऽपि विलिख्य च हिमादिभिः ।
ॐ द्रीं क्लीं ब्लूं सः कारान्त्य मन्त्रं क्षोभकरं जपेत् ॥ १३ ॥

भा० टी०—इस यंत्रको भोजपत्र या वस्त्र पर कपूर और सुगंधित द्रव्योंसे लिखकर क्षोभन करनेवाले 'ॐ द्रीं क्लीं ब्लूं सः' मन्त्रका जाप करे ।

यंत्र संख्या ३५

वश्य यंत्र चतुर्थ



अष्टदलकमलमध्ये स्वनामकलितं दलेषु चित्तभवम् ।
पुनरप्यष्टदलाम्बुजमिभदवशकरणं ततो लेख्यम् ॥ १४ ॥

भा० टी०—एक अष्टदल कमलकी कर्णिकामें ह्रीं के भीतर नाम लिखकर उसके आठों दलोंमें क्लीं लिखे। उसके पश्चात् फिर आठ दल बनाकर उनमें क्रों लिखे।

षोडश दलगतपद्मं क्लौंकारं वरदेषु सुरभिद्रव्यैः ।
ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं कारैस्तयन्त्रं वेष्टयेत्परितः ॥ १५ ॥



भा० टी०—उसके पश्चात् सोलह दल कमल बनाकर उसके दलोंमें क्ष्रीं को सुगंधित द्रव्योंसे लिखे, और फिर उस यन्त्रको चारों ओर "क्ष्रा क्ष्रीं क्ष्रू क्ष्रौं" घेर देवे।

तद्बाह्येऽर्कशशीभ्यां जपतः शून्यैश्च पञ्चभिर्नित्यम्।
नागनरामरलोकः क्षुभ्यति वश्यत्वमायाति ॥ १६ ॥

भा० टी०—उसके बाहिर सूर्य और चन्द्रमासे वेष्टित करके पञ्च शून्यों 'ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः' जप करनेसे नागलोक, मनुष्यलोक, और देवलोक सभी वशमें हो जाते हैं।

अरिष्टनेमि मन्त्र

अष्टलघुपाषाणात् दिशासु परिजाप्य निक्षिपेद्धीमान्।
चौरादिरौद्रजीवैरभयं सम्पद्यतेऽटव्याम् ॥ १७ ॥

भा०टी०—यदि बुद्धिमान मनुष्य निम्नलिखित मन्त्रको बनमें आठ पत्थरकी कङ्करों पर जपकर उन्हें आठों दिशाओंमें फेंक दें, तो चोर आदि भयङ्कर जीवोंसे भय नहीं रहता।

मन्त्रोद्धार—

"ॐ णमो भयवदो अरिट्ठनेमिस्स अरिट्ठेण बधेण बधामि रक्खसाण भूयाणं खेचराण चाराण दाढीण सायणोण महोरगाण अण्णे जे के विदुट्ठा सम्भवन्ति तेसिं सव्वेसिं मण मुह गई दिट्ठि बंधामि धणुर महाधणुरे ठः ठः ठः ठः ठः ठः हुं फट्।"

यन्त्र संख्या ३६
वश्य यन्त्र पञ्चम



स्वरबीजयुतं शून्यं तत्वेनेङ्कारवेष्टितम् ।
बाह्येऽष्टदलाम्भोज नित्यक्लिन्ने मदद्रवे ॥ १८ ॥
मदनातुरे क्षषडिति विलिखेत्स्वाङ्गान्तविनयपूर्वेण ।
त्रिभुवनवश्यवश्य प्रतिदिनम भवति संजपतः ॥ १९ ॥

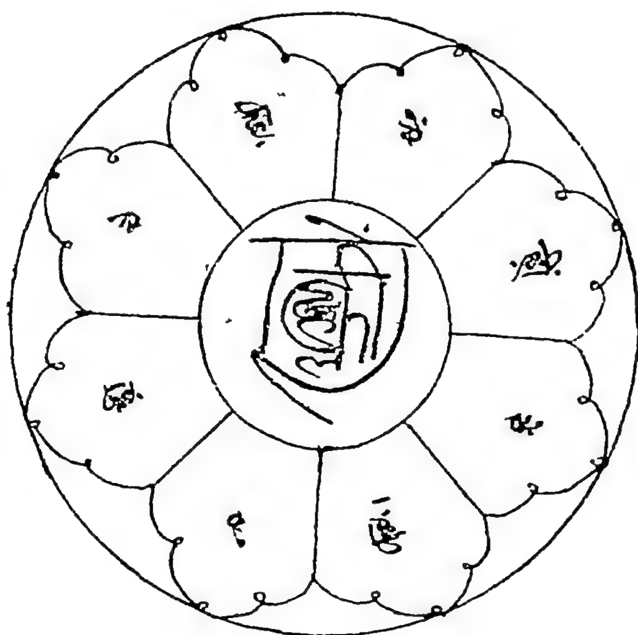
भा० टी—एक अष्टदल कमलकी कर्णिकामें नाम सहित क्ष्ल्रीं ह ह्रीं और ऐं को लिखकर उसके आठों दलोंमें निम्न लिखित मन्त्र लिखकर इसी मन्त्रका प्रतिदिन जप करे तो अवश्य ही वशमें हो जाते हैं।

मन्त्रोद्धार—

'ॐ ह्क्ष्लीं ह्रीं ऐंनित्यक्लिन्ने मदद्रवेमदनातुरे त्रिभुवनं मम वशी भवतु२ वषट स्वाहा ।'

यन्त्र संख्या ३७

वश्य यन्त्र षष्ठ–(त्रैलोक्य क्षोभण यन्त्र)



वर्णान्त मदनयुतं वाग्भवोपरि सस्थितं वसुदलाब्जम् ।
दिक्षु विदिक्षु च माया वाग्भवबीज ततो लेख्यम् ॥ २० ॥

भा० टी०—एक अष्टदल कमलकी कर्णिकामें नामको हक्लीं और ऐंसे वेष्टित करके लिखे । उसकी दिशाओंके चार दलोंमें ह्रीं और विदिशाओंमें ऐं लिखे ।

त्रैलोक्यक्षोभणं यन्त्रं सर्वदा पूजयेदिदम् ।
हस्तेबद्धं करोत्येव त्रैलोक्यजनमोहनम् ॥ २१ ॥

भा० टी०—इस तीन लोकको क्षोभित करनेवाले यन्त्रका

प्रतिदिन पूजन करके इसको हाथमें बांधनेसे यह तीन लोकको मोहित करता है।

मन्त्रोद्धार—

"ॐ ह्र क्लीं ऐं ह्रीं देवदत्तस्य सर्वजनवश्यं कुरु२ वषट्।"

दूसरेको सुलानेका मन्त्र

भ्रम युगलं केशिभ्रम माते भ्रम विभ्रमं च मुह्य पदम्।
मोहय पूर्णः स्वाहा मन्त्रोऽयं प्रणय पूर्वगतः॥ २२॥

मन्त्रोद्धार—

"ॐ भ्रमर केशिभ्रम मातेभ्रम विभ्रमं मुह्य२ मोहय२ पूर्णः पूर्णः स्वाहा।"

एतेन लक्षमेक भूमिमसंप्राप्त सर्षपैर्जप्त्वा।
क्षिप्ते गृहदेहल्यामकालनिद्रां जनः कुरुते॥ २३॥

भा० टी०—इस मन्त्रको पृथ्वीपर न गिरी हुई सरसोंसे एक लक्ष जप कर वह सरसों जिस घरकी देहलीपर डाली जाती है उस घरवालोंको असमयमें निद्रा आ जाती है।

रण्डायक्षिणीकी सिद्धि

मृतविधवाब्राह्मण्याः पादतलालक्तकेन परिलिखितम्।
तद्वक्त्रपिहितवस्त्रे विधवारूपंनिराभरणम्॥ २४॥

भा० टी०—मृतक विधवा ब्राह्मणीके पैरके अलक्तकसे उसके मुखके ढकनेके वस्त्रपर बिना आभरणवाली विधवाका रूप बनावे।

प्रणवं विस्रे मोहे स्वाहान्तं सप्तलक्षजाप्येन।
एकाकिनी निशायां सिध्यति सा यक्षिणी रण्डा॥ २५॥

भा० टी०—"ॐ विस्रे मोहे स्वाहा" इस मन्त्रका अकेले रात्रिके समय सात लक्ष जप करनेसे वह रण्डा यक्षिणी सिद्ध होती है।

यत्साधकाभिलषितं तत्तस्मै वस्तु सा ददात्येव।
क्षोभं प्रयान्ति रण्डाः सर्वा अपि भुवनवर्तिन्यः॥ २६॥

भा० टी०—वह साधककी इच्छा की हुई सभी वस्तुएं देती है, उससे लोकमें रहनेवाली सभी विधवाएं क्षोभको प्राप्त होती हैं।

यंत्र संख्या ३८

स्त्री वशीकरण ध्यान



तत्त्वं मन्मथबीजस्य तत्लोपरि विचिन्तयेत्।
पार्श्वयोरेबल पिण्डं भ्रमन्तमरुणप्रभम्॥ २७॥

भा० टी०—क्लींके ऊपर ह्रींका ध्यान करके उसके दोनों ओर घूमते हुये अरुण प्रभावाले 'ब्लें' का ध्यान करे।

योनौ क्षोभं मूर्धनं मोहनि पातन ललाटस्थम्।
लोचनयुग्मे द्रावं ध्यानेन करोतु वनितानाम्॥ २८॥

भा० टी०—यह ध्यान स्त्रियोंकी योनिमें करनेसे क्षोभ, सिरमें करनेसे मोहन, मस्तकमें करनेसे पातन (विह्वल होकर गिरना), और दोनों नेत्रोंमें करनेसे द्रावण होता है।

शीर्षास्य हृदय नाभौ पादौषानङ्गवाणमथ योज्यम् ।
सम्मोहनमनुलोम्ये विपरीते द्रावणं कुरुते ॥ २९ ॥

भा० टी०—शिर, मुख, हृदय, नाभि और पैरोंमें कामदेवके पांच बाण 'द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः' को इसी सीधे क्रमसे लगानेसे सम्मोहन और उलटे क्रममें लगानेसे द्रावण होता है।

दद्यात्ताम्बूलगन्धादीन्स्मरबाणाभिमन्त्रितान् ।
क्षालयेदात्मवक्त्रं च स स्त्रीणां मन्मथो भवेत् ॥ ३० ॥

भा० टी०—कामके बाणोंसे अभिमंत्रित करके तांबूल इत्र आदि देवे और उसी मन्त्रसे अपने मुखको धोवे, इस प्रकार वह स्त्रियोंका कामदेव हो जाता है।

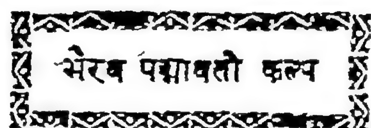
मन्त्रोद्धार—

"ओं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः हक्लीं एं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे ह्रीं सर्वजनं मम वश्यं कुरु २ वषट् ॥"

सिन्दूरारुणवाससन्निभप्रभंब्लेंकारसत्पिण्डकम्,
कान्तागुह्यगत प्रसंचलितमित ध्यात्वा मनोरञ्जितम ।
लाक्षारागमबिन्दुवर्षबर्षं प्रस्यन्दि कामादरात,
सप्ताहेन वशं करोतु वनीतां तत्तत्र चित्रं कुतः ॥ ३१ ॥

भा० टी०—सिन्दूरिया लालवस्त्रके समान प्रभावाले उत्तम पिण्ड ब्लेंको स्त्रीके योनिस्थानमें तेजीसे घूमता हुआ मनको प्रसन्न करनेवाला, लाखकी लालिमाकी बून्दोंके समूहको बरसाकर बहाता हुआ—ध्यान करनेसे स्त्री कामके वेगसे यदि एक सप्ताहके अन्दर ही वशमें आ जावे तो इसमें क्या आश्चर्य है।

विचिन्तयेदेवलपिंडमेकं सिन्दूरवर्णं वनितावराङ्गे ।
तद्द्रावणं दृष्टिनिपातमात्रात्सप्ताहतोऽप्यानयनं करोति ॥ ३२ ॥



भा० टी०— ब्लें बीजको स्त्रियोंके गुह्यस्थानमें सिन्दूरके वर्णका ध्यान करनेसे देखते ही स्त्री द्रवित हो जाती है और सात दिनके अन्दर२ ही आ जाती है।

किसीको ज्वर लानेका मन्त्र

ब्राह्मणमस्तककेशैः कृत्वा रज्जुं तया नरकपालम्।
आवेष्ट्य साध्यदेहोद्वर्तनकेशनखरपादरजः ॥ ३३ ॥

भा० टी०—ब्राह्मणके सिरके बालोंकी रस्सी बनाकर उससे एक नर कपालको लपेटे और फिर साध्य पुरुषके शरीरके मल-विष्टा, केश, नख और पैरकी धूलको लेकर।

मनुजास्थि चूर्णं मिश्रं कृत्वा तन्निक्षिपेत्पुरोक्तपुटे।
ज्वरयति मन्त्रस्मरणात्सप्ताहाद् स्थिमथनेन ॥ ३४ ॥

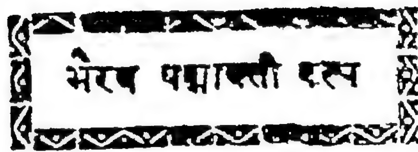
भा० टी०—उसको मनुष्यकी हड्डीमें मिलाकर सबका चूर्ण करके उसको पहिले नर कपालमें डाल दे। तब मन्त्र जपते हुये हड्डीको गलनेसे शत्रुको एक सप्ताहके अन्दर२ ज्वर हो आता है।

मन्त्रोद्धार—

"ॐ नमो चण्डेश्वर चण्डकुठारेण अमुकं ज्वरेण ह्रीं गृह्ण गृह्ण मारय हुं फट् घे घे।"

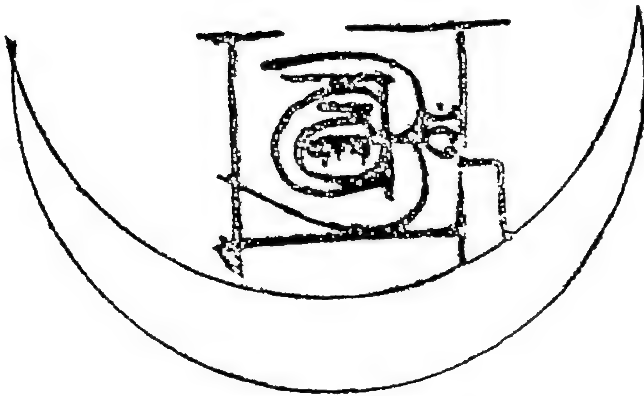
चण्डेश्वराय होमान्तं संजपेद्विनयादिना।
सहस्रदशकं मन्त्री पूर्वमारुणपुष्पकैः ॥ ३५ ॥

भा० टी०—मन्त्री पहिले 'ॐ चण्डेश्वराय स्वाहा' इस मन्त्रका लाल कनेरके पुष्पोंसे दश सहस्र जप कर लेवे।



यंत्र संख्या २९

ज्वर हरण यन्त्र



टान्तपकारप्रणवनजान्तार्द्धशशि प्रवेष्टितं नाम ।
शीतोष्ण ज्वरहरणं स्यादुष्णहिमाम्बुनिक्षिप्तम् ॥ ३६ ॥

भा० टी०—नामको क्रमशः ठ, प, ॐ, झ और अर्द्धचन्द्रसे वेष्टित करके उसको उष्ण जलमें डालनेसे शीतज्वर और शीतल जलमें डालनेसे उष्ण ज्वर नष्ट होता है ।

होम द्रव्य विधान

शाल्यक्षतदूर्वांकुरमलयजहोमेन शांतिकं पुष्टिम् ।
करवीरपुष्पहवनात्कुर्यात्स्त्रीणां वशीकरणम् ॥ ३७ ॥

भा० टी०—शाठीके चांवल, दूबके अंकुर और लाल चन्दनके होमसे शांतिक और पुष्टिकर्म, लाल कनेरके पुष्पोंके हवनसे भी स्त्रियोंका वशीकरण होता है ।

महिषाक्षपद्महोमात् प्रतिदिवसं भवति पुरजनक्षोभः ।
क्रमुकफलपत्र हवनात् राजानो वश्यमायान्ति ॥ ३८ ॥

भा० टी०—महिषाक्ष, गूगल और पद्म (कनेर) के होमसे नगरवासी प्रतिदिन क्षोभको प्राप्त होते रहते हैं। सुपारी और नागरबेल पानके हवनसे राजा लोग वशमें होते हैं ।

तिल धान्यानां होमे राज्यदुतैर्भवति धान्यधनवृद्धिः।
मल्लीप्रसूनहोमात्स्वघृताद्वश्यन्ति योगिजनाः ॥ ३९ ॥

भा० टी०—तिल, धान्य और घृतके होमसे धन धान्यकी वृद्धि होती है। मल्लिका (मोगरा) पुष्पके हवनसे योगिजन वशमें हो जाते हैं।

घृतयुतचूतफलानां वरहोमाद्भवति खेचरीवश्या।
वट्यक्षिणी च होमाद्भवति वशे ब्रह्मपुष्पाणाम् ॥ ४० ॥

भा० टी०—घी और आमके फलोंके हवनसे विद्याधरी वशमें होती है। पलाशके पुष्पोंके होमसे वट्यक्षिणी वशमें होती है।

गृहधूमनिम्बराजी लवणान्वित काकपक्षकृतहोमे ।
एकोदरजातानामपि भवति परस्परं वैरम् ॥ ४१ ॥

भा० टी०—गृह धूम (आगार धूम), नीम, सफेद सरसों, नमक और काकपक्षके होमसे सगे भाइयोंका भी आपसमें द्वेष हो जाता है।

प्रेत वन शल्यमिश्रितर्बिभीतकाङ्गार सदन धूमानाम्।
होमेन भवति मरणं पक्षाद्वैरिलोकस्य ॥ ४२ ॥

भा० टी०—श्मशानकी अस्थि, बहेड़ेके अंगारे और गृहधूमके होमसे शत्रु एक पक्षके अन्दर२ मर जाता है।

इति उभयभाषा कविशेखर श्रीमल्लिषेणसूरि विरचित भैरव पद्मावती कल्पकी पंडिता चन्दाबाईदेवी सरस्वती (धर्मपत्नी काव्यसाहित्य-तीर्थाचार्य प्राच्यविद्यावारिधि श्री चन्द्रशेखर शास्त्री) कृत भाषा टीकामें "वश्य यन्त्राधिकार" नाम सप्तम परिच्छेद समाप्त ॥ ७ ॥

अष्टम परिच्छेद

(निमित्ताधिकार)

दर्पण निमित्तकी प्रथम सिद्धि

सिध्यति सहस्रजाप्यैर्दशगुणितैः प्रणवपूर्वहोमान्त्यः ।
दर्पणनिमित्तमन्त्रश्चलेचुलेप्रभृतिनोच्चार्यः ॥ १ ॥

दर्पण निमित्त नामक निम्नलिखित मंत्र दस सहस्र जापसे सिद्ध होता है—

भा० टी०—"ॐ चलेचुले चुण्डे कुमारिकयोरङ्गं प्रविश्य यथाभूतं यथाभव्यं यथासत्य भवति दर्शय२ भगवति मा विलम्बय विलम्बय ममाशामवहयं पूरय२ स्वाहा ।"

सप्तवाराभिमन्त्रित गोदुग्ध पाययेत्कुमारिकयोः
ब्राह्मणकुलप्रसूत्योः तयोर्द्वयोः सप्तवत्सरयोः ॥ २ ॥

भा० टी०—इस मन्त्रसे गोदुग्धको सातवार अभिमंत्रित करके उसे ब्राह्मणकुलोत्पन्न सातर वर्षकी दो कन्याओंको पिलादे ।

सस्नाप्य ततः प्रातर्दत्त्वा ताभ्यामथ प्रसूनादीन् ।
भूम्यामपतितगोमयसम्मार्जित भूतले स्थित्वा ॥ ३ ॥

भा० टी०—फिर प्रातःकाल स्नान करके पृथिवीपर न गिरे हुये गोबरसे पुते हुये स्थानमें खड़ा होकर उन दोनों कुमारियोंको पुष्प आदि देकर ।

चतुरस्रमण्डलस्थं कलशं गन्धोदकेन परिपूर्णम् ।
तस्योपर्यादर्शं निवेशयेत्पश्चिमाभिमुखम् ॥ ४ ॥

भा० टी०—चौकोर मण्डलमें रक्खे हुये, सुगन्धित जलसे भरे हुये कलशके ऊपर एक दर्पण पश्चिमकी ओर मुख करके रख दे,

तदभिमुखं प्राक्कल्पितकुमारिकायुगलमथ निवेश्य ततः।
तद्धृदये ब्लूंकारं विचिन्तयेत्प्रणवसम्पुटितम् ॥ ५ ॥

भा० टी०—उस दर्पणके सामने पहिले संकल्प की हुई दोनों कन्याओंकी स्थापना करके उनके हृदयमें 'ॐ ब्लू ॐ' इस मंत्रका ध्यान करे।

शशिमण्डलवत्सौम्यं तन्मंत्रमनुस्मरन् स्वय तिष्ठेत्।
आदर्शवीक्ष्यमाण कुमारिकायुगलकं पृच्छेत् ॥ ६ ॥

भा० टी०—चन्द्र मण्डलके समान सौम्य रूपवाले उपरोक्त मन्त्रका ध्यान करता हुआ स्वयं बैठकर दर्पणमें देखती हुई उन दोनो कुमारियोंसे पूछे।

यद्दृष्टं यच्छ्रुत ताभ्यां तत्र रूप वचो यथा।
खड्गाङ्गुष्ठे जलादर्शे तत्सत्य नान्यथा भवेत् ॥ ७ ॥

भा० टी०—वह दोनों कन्याएं शस्त्र, अगुष्ट, जल या दर्पणके निमित्तमें इस प्रकारसे देखे हुये जिस रूपको या सुने हुये जिस वचनको कहेंगी वह अन्यथा नहीं हो सकता।

दर्पण निमित्तकी द्वितीय सिद्धि

दर्पणाङ्गुष्ठदीपादिनिमित्तमवलोकयेत्।
सिध्यत्यष्टसहस्रेण मन्त्रो जाप्येन मन्त्रिणा ॥ ८ ॥

भा० टी०—मन्त्री इसी प्रकरणमें दर्पण, अंगूठे और दीपक आदिके निमित्तको भी देखे।

निम्नलिखित मन्त्र आठ सहस्र जपसे सिद्ध होता है—

"ॐ नमो मेरु महामेरु ॐ नमो धरणि महाधरणि ॐ नमो

गौरि महागौरि ॐ नमः कालि महाकालि ॐ नमो इन्दे महाइन्दे ॐ नमो जये महाजये ॐ नमो विजये महाविजये ॐ णमो पणसमणी महापणसमणी अवतर२ देवि अवतर२ मम चिन्तितं कार्यं सत्य ब्रूहि२ स्वाहा।"

दत्वा दर्भास्तरण दुग्धाहारं पुरा कुमारिकयोः।
संस्नाप्य ततः प्रातर्धवलाम्बरभूषणादीनि ॥ ९ ॥

भा० टी०—पहली रात्रिमें उन दोनों कुमारियोंको दाभकी शय्या और दुग्धका आहार देकर प्रातःकाल उनको स्नान करा कर श्वेत वस्त्र और आभूषण आदि देवे।

कलशादर्शकुमारीस्थानेष्वथ विन्यसेदिमं मन्त्रम्।
विनयं गजवशकरणं क्षां क्षीं क्षूं क्षारहोमान्तम् ॥ १० ॥

भा० टी०—इसके पश्चात् कलशके स्थान, दर्पणके स्थान और कुमारियोके खड़े रहनेके स्थानोंमें 'ॐ क्रों क्षां क्षीं क्षूं स्वाहा' इस मन्त्रका न्यास करे।

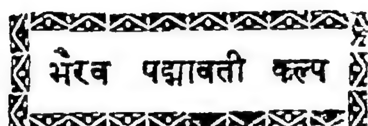
प्रणवादिपञ्चशून्यैरभिमन्त्र्य कुमारिकाकुचस्थाने।
अशितुं तयोश्च दद्याद्घृतेन सम्मिश्रितान्यूपान् ॥ ११ ॥

भा० टी०—उन कुमारियोंके कुचस्थानमें 'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः' इस मन्त्रसे अभिमन्त्रित करके उन्हें भोजनके लिये घीके पूड़े देवे।

अंगुष्ठ निमित्तकी सिद्धि

आलक्तकाभिरञ्जितहस्ताङ्गुष्ठे निरीक्षयेद्रूपम्।
करनिर्वर्तिततैलेनांगुष्ठस्नानकरणेन ॥ १२ ॥

भा० टी०—हाथों पर तिलका तेल लगाकर अंगुष्ठ निमित्तके द्वारा अलक्तकसे रंगे हुये अपने अंगूठेमें मन्त्री रूपको देखे।



दर्पण निमित्तकी तीसरी सिद्धि

प्रणवं पिङ्गलयुग्म पण्णति द्वितयं महाविद्येयम्।
टान्तद्वयश्च होमो दर्पण मन्त्रो जिनोद्दिष्टः॥ १३॥

'ॐ पिङ्गल २ पण्णति २ महाविद्ये ठः ठः स्वाहा।' इस महामन्त्रको जिनेन्द्र भगवान्ने दर्पण मन्त्र कहा है।

जाप्यं मानुसहस्रैः सितपुष्पैश्चन्द्रकिरणसंकाशैः।
सिध्यति दशांसहोमेनादर्शनिमित्तमन्त्रोऽयम्॥ १४॥

भा० टी०—यह दर्पण निमित्त मन्त्र बारह सहस्र जप और चन्द्रमाकी किरणोंके समान सफेद पुष्पोंके दशांस होमसे सिद्ध होता है।

चितिभस्मनैकविंशतिवाराश्चिमर्द्य दर्पण पूर्वम्।
शाल्यक्षतोपरिस्थितनवाम्बुपरिपूर्णनवकुम्भे॥ १५॥

भा० टी०—पहिले दर्पणको स्मशानकी राखसे इक्कीस वार मलकर उसको शालीके चांवलोंके ऊपर रक्खे हुये नवीन जलसे भरे हुये नये कलशके ऊपर रक्खे।

तं प्रतिनिधाय तस्मिन्नेककुलोद्भूतकन्यकायुगलम्।
त्रिषु वर्णेष्वन्यतम स्नान धवलाम्बरोपेतम्॥ १६॥

भा० टी०—उस दर्पणको कलशपर रखकर ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा वैश्य तीनों वर्णोंमेंसे किसी एक वर्णकी दो कन्याओंको स्नान कराकर श्वेत वस्त्र पहिनावे।

अभ्यर्च्य गन्धतन्दुलनिवेद्यकुसुमादिभिस्तत' कलशम्।
दत्त्वा ताम्बूलादीन्नादर्शं दर्शयेत्ताभ्याम्॥ १७॥

भा० टी०—फिर कलशका चन्दन, अक्षत नैवेद्य और पुष्प आदिसे पूजन करके और पान आदि देकर उन दोनो कन्याओंको दर्पण दिखलावे।

मत्री मन्त्र पठन् कुमारिकायुगल तथा पृच्छेत्।
दृष्टं श्रुतञ्च कथयति रूपं वचनञ्च मुकुरन्दे॥ १८॥

भा० टी—उस समय मन्त्री मन्त्रको पढ़ता हुआ उन दोनों कुमारियोंसे प्रश्न करे। वह उस दर्पणमें देखे हुये रूप और सुने हुये वचनको ठीकर कहेंगी।

यंत्र संख्या ४०

दीपक निमित्तवाला सुन्दरी यन्त्र



अष्टसहस्रैर्जातीपुष्पैः श्री वीरनाथजिनपुरतः।
जप्ते सुन्दरी देवी सिध्यति मन्त्रेण सद्भक्त्या॥ १९॥

भा० टी०—श्री महाबीर भगवानके सामने अष्ट सहस्र

जाती (मालती) पुष्पोंसे भक्तिपूर्वक जप करनेसे 'सुन्दरी' नामकी देवी सिद्ध होती है।

जपनेके मन्त्रका उद्धार

'ॐ सुन्दरी परमसुन्दरी स्वाहा'।

ब्रह्मादिसुन्दरीशब्द होमान्त कर्णिकान्तरे।
अष्टपत्रेषु सर्वेषु लिखेत्परमसुन्दरी ॥ २० ॥

भा० टी—एक अष्ट दल कमलकी कर्णिकामें 'ॐ परम सुन्दरी स्वाहा' लिखकर आठों दलोंमें 'ॐ सुन्दरी स्वाहा' लिखे।

कृष्णतिलतैलपूर्णे कुलालकरमृत्तिकाकृते पात्रे।
आर्कतूलकृतवर्त्या दीपे न्यग्रोधवह्निभवे ॥ २१ ॥

भा० टी०—कुम्हारके हाथकी मिट्टीके बनाये हुये दीप पात्रमें काले तिलोंका तेल भरकर अकतूलकी बनी हुई बत्ती डालकर वट वृक्षकी लकड़ीकी आगसे दीपकको जलावे।

शेष क्रिया पहिलेके समान है।

कर्णपिशाचनी मन्त्र

श्रवणपिशाचिनि मुण्डे स्वाहान्तः प्रणवपूर्वकोऽयं।
सिध्यति च लक्षजाप्यात्कर्णपिशाचीत्ययं मन्त्रः ॥ २२ ॥

'ॐ श्रवणपिशाचिनि मुण्डे स्वाहा।'

भा० टी०—यह कर्णपिशाचिनी मंत्र एक लक्ष जपसे सिद्ध होता है।

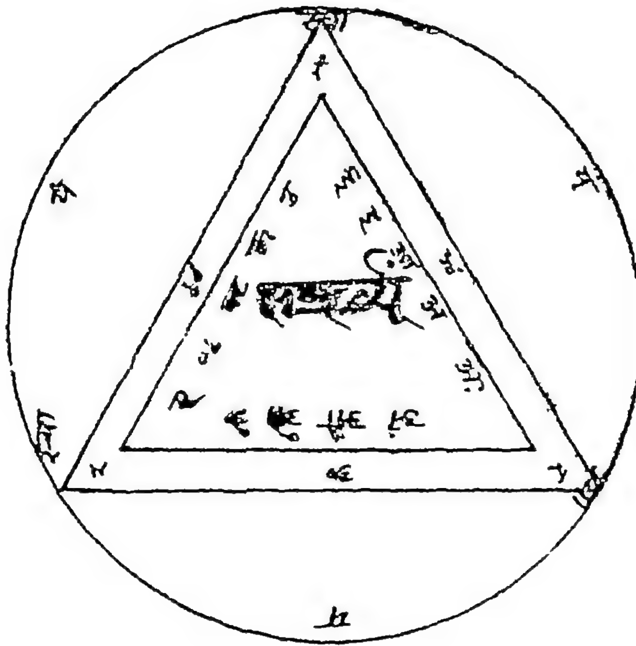
मन्त्रपरिजप्तकुष्ठं हन्मुखकर्णद्वियुगलमालिप्य।
सुप्तस्य कर्णमूले कथयति यच्चिन्तितं कार्यम् ॥ २३ ॥

भा० टी०—इस मन्त्रसे कुठको २१ बार अभिमंत्रित करके उसको पीसकर हृदय, मुख, दोनो कान और दोनों पैरों पर

लगाकर सोवे तो कर्णपिशाचिनी देवी सोते समय सोचे हुये कार्यको कानमें कहती है।

यंत्र संख्या ४१

ग्रहहरण यन्त्र



मलवरयूं कारचतुर्दशकलान्वितं कूटबीजकं विलिखेत्।
शिखिवायुमण्डलस्थं सनामखरताडपत्रगतम् ॥ २४ ॥

भा० टी०—एक खुरदड़े ताड़ पत्र पर नाम सहित क्ष्म्ल्व्र्यूं बीजको चौदह कलाओं (ऌ और ॠ के बिना सोलह स्वरों) के अंदर लिखकर बाहिर अग्निमण्डल और वायुमण्डल बनावे।

मार्तण्डस्नुग्दुग्धत्रिकटुकद्वयसन्धसर्षपसद्मभवधूमैः।
आक्षिप्यललाटस्थं ग्रहिणां कुरुते ग्रहावेशम् ॥ २५ ॥

भा० टी०—इस यन्त्रको आकके दूध, थूहरके दूध, त्रिकटु (सोंठ, पीपल, काली मिरच), असगंध और गृहधूमसे बनाकर ग्रहसे पकड़े हुयेके मस्तक पर रखनेसे ग्रह दूर हो जाते हैं।

धनदर्शक दीपक

कुनटीगन्धकतालकचूर्णं कृत्वासितार्कतूलेन।
संवेष्ट्य पद्मनालकसूत्रेण च वर्तिरिह कार्या ॥ २६ ॥

भा० टी०—मनःशिला, गन्धक और हरितालके चूर्णको सफेद आककी रुई और कमल दण्डोके सूतसे लपेटकर बत्ती बनावे।

सा कङ्गुतैलभाव्या तया प्रदीप विबोधयेन्मन्त्री।
यत्राधोमुखमगमद्दो पस्तत्रास्ति वसुराशिः ॥ २७ ॥

भा० टी०—मन्त्री उस बत्तीको कगनीके तेलमें भिगोकर दीपक जलावे। वह दीपक जहां नीचेको मुखवाला हो जावे वहीं धनकी राशि जाननी चाहिये।

विनयादिप्रज्वलितज्योतिदिशायां मरुद्भभोऽन्तपदम्।
प्रपठन्मनसा मन्त्रं प्रदीपमालोकयेन्मन्त्री ॥ २८ ॥

भा० टी०—मन्त्री 'ॐ प्रज्वलितज्योतिदिशायां स्वाहा' इस मन्त्रको मनमें पढ़ता हुआ दीपककी बत्तीको घोड़ेके सुम या छुरी पर रखकर देखे।

गणितका निमित्त

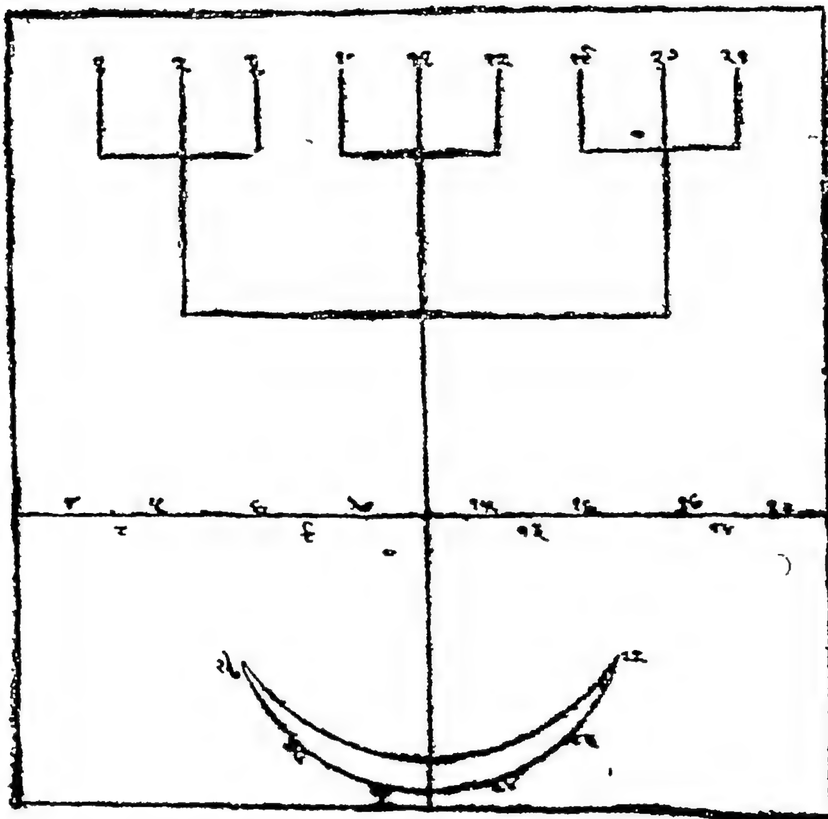
प्रायोर्वीशनदीनवग्रहनगव्याधिप्रसूनाक्षरा-
ण्येकीकृत्य नखान्वितं त्रिगुणित तिथ्यापुनर्भाजितम्।
त्रयादुद्धरिताच्छुभाशुभफल वैषम्यसाम्ये सुधी-
रेतत्तथ्यमिहोदितं मुनिवरैर्भव्याब्जघर्मांशुभिः ॥ २९ ॥

भा० टी०—प्रायः चक्रवर्तियों, महानदियों, नवग्रहों, पर्वतों, रोगों और पुष्पोंमेंसे एकर के अक्षरोंको गिनकर जोड़े। उस

योगफलमें नख (वीस) को जोड़कर तीनसे गुणा दे और गुणनफलको पन्द्रहका भाग दे। यदि शेषमें सम अक्षर हो तो विरुद्ध फल और विषम अंक हो तो शुभ फल कहना चाहिये। यह प्रयोग भव्यरूपी कमलोंको सूर्यके समान खिलानेवाले उत्तम२ मुनियोंने कहा है। यंत्र संख्या ४२

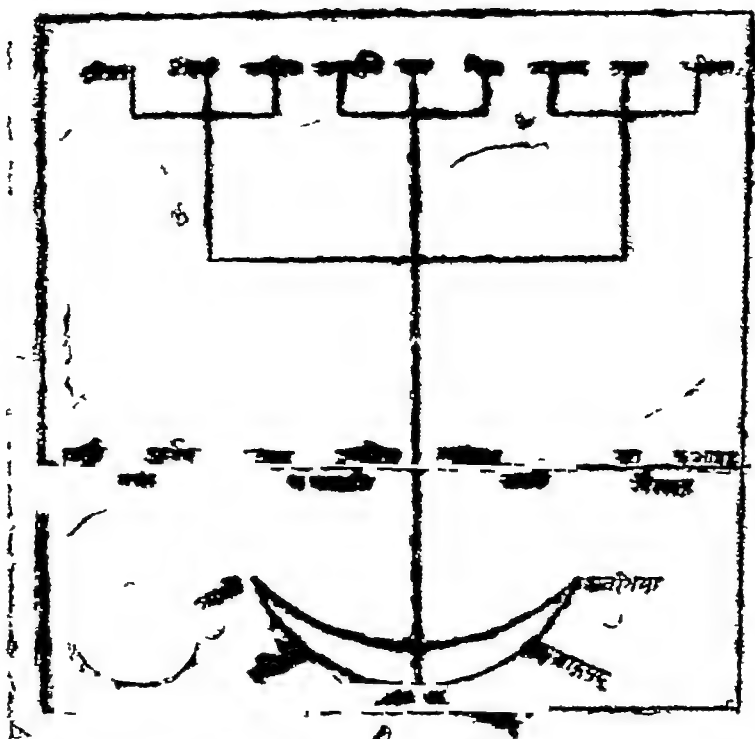
युद्धमें अर्द्धेन्दुत्रिशूल यन्त्र

अर्द्धेन्दुरेखाग्रगतं त्रिशूलं मध्ये च सम्यक् प्रविलिख्य धीमान्।
ऋक्षेऽमवास्या प्रतिपद्दिने तु यस्मिन्मृगाङ्को व्यवतिष्ठतेऽसौ ॥ ३० ॥



अर्थात् यदि अमावस्या और प्रतिपद् के सोम के दिन चन्द्रमा मूलनक्षत्र में हो तो यन्त्र निम्न लिखित प्रकार से बना लिया जावे-

यंत्र संख्या ४३—युद्धमें अर्द्धेन्दुत्रिशूल चक्र



भा० टी०—एक अर्द्ध चन्द्राकार रेखा के ऊपर तीन त्रिशूल बनाकर उनमें भली प्रकारसे सत्ताइसों नक्षत्र इस प्रकार लिखें कि अमावस्या और प्रतिपद्के योगके दिन चन्द्रमा जिस नक्षत्रमें हो।

कृत्वा तदादि विगणय्य युद्धे विद्यात्त्रिशूलाग्रगतेषु मृत्युम्।
मार्तण्डसंख्येषु जयं च तेषु पराजयं षट्सु बहिस्थितेषु ॥३१॥

भा० टी०—उसको निम्नलिखित यन्त्रमें १ के स्थान पर लिखकर उससे आगेके नक्षत्रोंके अंक क्रमसे लिख दे।

भा० टी०—युद्धको जाते हुये मनुष्यका जन्म नक्षत्र इनमेंसे जिस स्थानपर हो उससे फल जानना चाहिये। यदि जन्म

नक्षत्र त्रिशूलोंके अन्दर पड़े तो मृत्यु हो। यदि वह नक्षत्र मध्यके बाहर नक्षत्रोंमेंसे कोई हो तो विजय हो, अथवा वह बाहिर अर्थात् अर्द्धचन्द्राकार रेखाके बाहिर छह नक्षत्रोंमेंसे किसी स्थान पर पड़े तो पराजय हो।

गर्भमें पुत्र है या पुत्री

दिशि विदिशि तदुभयान्तरवर्तिभ्यां दिशतु पृच्छके मन्त्री।
क्रमशो बालं बालीं नपुंसकं पूर्णगर्भिण्याः ॥ ३२ ॥

भा० टी०—यदि मन्त्रीसे कोई पुरुष किसी पूर्ण समयवाली गर्भिणीकी भावी सन्तानका फल पूछने आवे तो यदि वह पूछनेवाला दिशामें खड़ा हो तो पुत्र अथवा यदि वह विदिशामें खड़ा हो तो पुत्री और यदि वह दोनोंके मध्यमें हो तो नपुंसक सन्तान फल बतलावे।

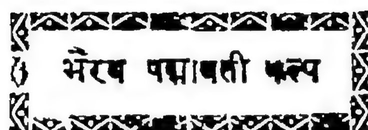
स्त्री अथवा पुरुष किसकी मृत्यु होगी

वर्णमात्रांश्च दम्पत्योरेकीकृत्य त्रिभाजितान्।
शून्यैकेन मृतिं पुंसो नार्या द्वयङ्केन निर्दिशेत् ॥ ३३ ॥

भा० टी०—स्त्री और पुरुषके नामोंमेंके व्यंजन और स्वरोंको पृथक्२ लिखकर उनको गिनकर तीनका भाग दे। यदि शेष शून्य अथवा एक हो तो पुरुषकी मृत्यु अथवा यदि शेष दो बचे तो स्त्रीकी मृत्यु बतलावे।

इति उभयभाषा कविशेखर श्री मल्लिषेणसूरि विरचित भैरव-पद्मावती कल्पकी पंडिता कमलावतीदेवी सरस्वती (धर्मपत्नी काव्यसाहित्य-तीर्थाचार्य प्राच्यविद्यावारिधि श्री चन्द्रशेखर शास्त्री) कृत भाषा टीकामें 'निमित्ताधिकार' नामका अष्टम परिच्छेद समाप्त ॥ ८ ॥





नवम परिच्छेद
(तन्त्राधिकार)

मोहन तिलक

लवङ्गकुङ्कुमोशीरनागकेशरराजिकाः ।
एलामनः शिलाकुष्ठतगरोत्पलरोचनाः ॥ १ ॥

भा० टी०—लवंग, केशर, चन्दन, नागकेशर, सफेद सर्सों, इलायची, मनशिल, कूठ, तगर, सफेद कमल, गोरोचन,

श्रीखण्ड तुलसी, पिक्का पद्मकं कुटजान्वितम् ।
सर्वं समानमादाय नक्षत्रे पुष्यनामनि ॥ २ ॥

भा० टी०—लाल चन्दन, तुलसी, पिक्का (गन्ध द्रव्य), पद्माखा और कुटजको पुण्य नक्षत्रमें बराबर २ लाकर,

कन्यया पेषयेत्सर्वं हेममूतेन वारिणा ।
कुरु चन्द्रोदये जाते तिलक जनमोहनम् ॥ ३ ॥

भा० टी०—सबको धतूरेके रसमें कुमारी कन्यासे पिसवा कर उसका चन्द्रोदय होने पर तिलक करनेसे ससार मोहित हो जाता है।

स्त्रीवश्य पान

बर्हिशिखा सितगुञ्जा गोरम्भा भानुकीटकस्य मलम् ।
निजपञ्चमलोपेतं चूर्णं वनितां वशीकुरुते ॥ ४ ॥

भा० टी०—मयूरशिखा, सफेद गुञ्जा, गोरंगा (गोभी), आकका पत्ता, कीटकका मल और अपने पांचों मलोंका चूर्ण स्त्रीको वशमें करता है।

(कान, आंख, दांत और जीभके मल तथा वीर्यको अपने पांचों मल कहते हैं।)

स्त्रीवश्य गुटिका

करवीरभुजङ्गाक्षीब्रह्मदण्डीन्द्रवारुणी-

गोबन्धिनीसलज्जानां विधाय वटिका बहुः ॥ ५ ॥

भा० टी०—लाल कनेर, भुजंगाक्षि जटा ब्रह्मदण्डी, इन्द्रायन, गोबन्धनी, (अधोपुष्पी या प्रियंगु), लज्जावतीके चूर्णकी गोलियां बनावे।

वटिकाभिः समं क्षिप्त्वा लवणं शुभभाजने।

पक्त्वास्वमूत्रतो दद्यात्खाद्यं स्त्रीजनमोहनम् ॥ ६ ॥

भा० टी०—उन गोलियोंको बराबर नमक सहित एक बर्तनमें डालकर अपने मूत्रमें पकावे। इन गोलियोंको भोजन आदिके साथ खिलानेसे स्त्री वशमें होती है।

वश्य चूर्ण

मृतभुजगवदनमध्ये लज्जरिकांसनिधाय सितगुञ्जाम्।

रुद्रजटासम्मिश्रामाकृष्य दिनत्रयं यावत् ॥ ७ ॥

भा० टी०—मृत सर्पके मुखमें लज्जरिका (लज्जालु,) सफेदगुञ्जा और रुद्रजटाको रखकर तीन दिन पश्चात् निकाले।

लाङ्गलिकायाः कन्दे गोमयलिप्ते परिक्षिपेच्चूर्णम्।

परिभाव्य शुनिपयसा स्वमलैः पञ्चाङ्गसम्भूतैः ॥ ८ ॥

भा० टी०—उस चूर्णको काली कुत्तीके दूध और अपने पांचों मलोंमें भावित करके गोबरसे लिपे हुये कलिहारी कन्दमें डाले।

पक्त्वा चूर्णमिदं पञ्चाज्जगद्वश्यकरं परम्।

दद्यात्खाद्यान्नपानेषु स्त्रीपुंसोश्च परस्परम् ॥ ९ ॥

भा० टी०— इस चूर्णको पकाकर यदि स्त्री पुरुषको और पुरुष स्त्रीको खाने पीने आदिमें देवे तो संसारभर वशमें हो जाता है।

पञ्चाङ्ग मल

नेत्रश्रोतृमल शुक्रं दन्तजिह्वा मल तथा।
वश्यकर्मणि मन्त्रज्ञैः पञ्चाङ्गमलमुच्यते ॥ १० ॥

भा० टी०—आंख तथा कानका मल, वीर्य दांत और जीभके मैलोंको मंत्र शास्त्रियोंने वशीकरण कर्ममें पञ्चाङ्गमल कहा है।

वश्य दीपक

पञ्चपयस्तरुपयसा पोतकयण्डकरसेन परिभाव्या।
तिलतैलदीपवर्तिस्त्रिभुवनजनमोहकृद्भवति ॥ ११ ॥

भा० टी०—वड़, गूला, पीपल, पिलखन और अजीरके दूध तथा पड़की (पोतकी) के अंडेके रसमें वन कपास, आक, कमलसूत्र, सेंभलकी रुई और पटसन (सन) की बनी हुई (पञ्चसूत्रवर्ति) बत्तीको भावना देकर काले तिलोंका दीपक जलानेसे तीनों लोक वशमें हो जाते हैं।

वशीकरण प्रयोग

विषमुष्टिकनकहलिनीपिशाचिकाचूर्णमम्बुदेहभवम्।
उन्मत्तकभाण्डगतं क्रमुकफल तद्वशं कुरुते ॥ १२ ॥

भा० टी०—पोस्त (विषमुष्टि), कनक (काला धतूरा), हलिनी (कलिहारी), पिशाचिका (छोटी जटामांसी) को अपने मूत्रमें मिलाकर उन्मत्तक (सफेद धतूरे) के बर्त्तनमें सुपारी सहित रखनेसे वशीकरण होता है।

स्त्रीवश्यमदनक्रमुक

क्रमुकं फणिमुखनिहितं तस्माद्दिवसत्रयेण संगृह्य ।
कनकविषमुष्टिहलिनी चूर्णैः प्रत्येकशः क्षिप्त्वा ॥ १३ ॥

भा० टी०—सर्पके मुखमें तीन दिन तक रखी हुई सुपारीको काले धंतूरेकी जड़के चूर्ण, विषमुष्टि (विषडोड्डिका) के चूर्ण और हलिनी (विशल्या कन्द) के चूर्णके साथ पृथक् २ पीसकर,

खरतुरगशुनिक्षीरैः क्रमशः परिभाव्य योजयेत्खाद्ये ।
अबलाजनवशकरणं मदनक्रमुकं समुद्दिष्टम् ॥ १४ ॥

भा० टी०—उसको क्रमशः गधी, घोड़ी और कुतियाके दूधमें भावित करे। यह मदन क्रमुक स्त्रियोंको वशमें करता है।

वश्य काजल

पुत्रञ्जारी कुंकुमशरपुङ्खामोहिनीशमीकुष्टम् ।
गोरोचनाहिकेशरतगररुदन्ती च कर्पूरम् ॥ १५ ॥

भा० टी०—पुत्रजारी, केशर, सरफोंका, मोहिनी, शमी, कूठ, गोरोचन, नागकेशर, तगर, रुदन्ती और कपूर,

कृत्वैतेषां चूर्णं पावकमध्ये ततः परिक्षिप्य ।
पङ्कजभवतन्तुकृता वर्तिः कार्या पुनस्तेन ॥ १६ ॥

भा० टी०—इन सबका चूर्ण करके इनको अरुक्कके पटलमें रखकर और कमल सूत्रसे लपेटकर इनकी बत्ती बनावें।

कठकिकुषभवपयसा त्रिवर्णयोषास्तनक्षीरैः ।
परिभाव्य ततः कपिलाघृतेन परिभावयेद्दीपम् ॥ १७ ॥

भा० टी०—फिर उस बत्तीको क्रमशः पांच कारुकी, ब्राह्मणी, क्षत्रियाणी और वैश्य स्त्रीके दूधमें भावित करके कपिला गौ के घीसे दीपक जलावे।

उभयग्रहणे दीपोत्सवे च नवखर्परेऽञ्जनं दार्यम्।
गोमयविलिप्तभूम्यां स्थित्वा मन्त्राभिषिक्तायाम्॥ १८॥

भा० टी०—फिर सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण या दीपमालिकाको गोबरसे लिपी हुई तथा निम्नलिखित मन्त्रसे अभिषेक की हुई पृथिवी पर बैठकर नवीन खरपर स्याही बनावे।

पृथिवीको साफ करनेका मन्त्र

ॐ भूमूंमिदेवते तिष्ठतिष्ठ ठः ठः।

निम्नलिखित मन्त्रसे खर्परको अभिमन्त्रित करे।
ॐ ऐन्द्रदेवते कज्जल गृण्ह २ स्वाहा।

निम्नलिखित मन्त्रसे काजल पाडे

ॐ नमो भगवते चन्द्रप्रभाय चन्द्रेन्द्रमहिताय नयन मनोहराय हारिणि २ सर्वजनवश्यं कुरु २ स्वाहा।

निम्नलिखित मन्त्रसे काजल आंखोंमें लगावे—

ॐ नमो भूतभावनाय समाहिताय कामाय रामाय ॐ चुलु २ गुलु २ नील भ्रमरि २ नयन मोहिनी नमः।

कज्जलरञ्जितनयनां दृष्ट्वा तां वशयतीति मदनोऽपि।
नरमध्यरञ्जितनेत्रं भूपाद्या यान्ति तस्य वशम्॥ १९॥

भा० टी०—इस काजलको नेत्रोंमें लगाई हुई स्त्रीको देखकर

कामदेव भी वशमें हो जाता है। इस काजलके नेत्रवाले पुरुषके भो राजा आदि वशमें हो जाते हैं।

पिशाची पान

विषमुष्टिकनकमूल शालाक्षतवारिणा ततः पिष्टम्।
तद्रसभावितपत्रं पिशाचयत्युदरमध्यगतम् ॥ २० ॥

भा० टी०—महानिम्ब (विषदौड़ी) और धतूरेकी जड़को कंगुनीके चावलोंके पानीके साथ पीसकर उस रसमें भावित किया हुआ पान पेटमें जाने पर पुरुष या स्त्रीको पिशाच बना देता है।

शत्रुभयकरण काजल

चिक्कणिकेऽसितरूपा पिशाचिका सार्द्रचितामषिमथिते।
नृकपाले मातृग्रहे काननकार्पासकृतवर्त्या ॥ २१ ॥

भा० टी०—चिक्कणिका (सुपारी) मोम और कोंचको पीसकर उनको जगली कपासमें मिलाकर वत्तो बनावे। उस वत्तीसे सप्त मातृकाके ग्रहोंमें गीली चिताकी स्याहीसे मथे हुये मनुष्यके कपालपर,

दार्यं कृष्णाष्टम्यामञ्जनमेतन्महाधृतोद्भूतम्।
तेन त्रिशूलमञ्जनमपि कुर्यादङ्कभीत्यर्थम् ॥ २२ ॥

भा० टी०—इस महाघृतसे कृष्णपक्षकी अष्टमी अथवा चतुर्दशीको अञ्जन बनावे। इस अजनको आंखोंमें डालकर उसके शत्रुको भय उत्पन्न करनेके लिये मस्तक पर त्रिशूलका चिह्न बनावे।

काजल पाड़नेका मन्त्र

"ॐ नमो भगवति हिडिम्बवासिनि अल्लमांसप्रिये नह्यल

मडलय इट्ठिये तुहरणमंते पहरणदुत्थे आयासमंडि पायालमडि सिद्धमंडि जोइणिमंडि सव्व मुहमडि कज्जलं पडउ स्वाहा।

इस काजलको ईशानकोणकी ओर मुख करके पाड़े।

अदृश्य गुटिका

चितवह्निदग्धभूतद्रुमयमशाखामषिं समाहृत्य।
अङ्कोलतैलसूतककृष्णबिडाली जरायुश्च ॥ २३ ॥

भा० टी०—चिताकी अग्निसे जले हुये बहेड़ेके वृक्षकी दक्षिण दिशाकी स्याहीको लेकर उसको अकोलके तेल, पारदरस और काली बिल्लीकी जरायु सहित,

धूकनयनाम्बुमर्दितगुटिकां धृत्वा त्रिलोह संमठिताम्।
कृत्वा तामात्ममुखे पुरुषोऽदृशत्वमायाति ॥ २४ ॥

भा० टी०—उल्लूकी आंखोंके पानीमें मलकर गोली बनावे। उसको त्रिलोहके साथ सोलह अग्नि देकर अपने मुखमें रक्खे तो अदृश्य हो जावे।

वीर्यस्तंभक गुटिका

सितशरपुंख मूल हृत्वा सितकोकिलाक्षबीजञ्च।
बनवसलारसपिष्टं बीर्यस्तम्भे मुखे संस्थाम् ॥ २५ ॥

भा० टी०—सफेद सरफोंकेकी जड़ और सफेद कोकिलाक्षके बीजोंको जंगली पोदीनेके रसमें पीसकर गोली बनाकर मुखमें रखे तो बीर्य स्तम्भन होता है।

वीर्यस्तम्भक अस्थि

कृष्णवृषदंशजंघायाः शल्यखण्डमादाय।
बद्ध कटिप्रदेशे वीर्यस्तम्भं नृणां कुरुते ॥ २६ ॥

भा० टी०—काले बिलावकी दाहिनी जांघकी हड्डी लेकर कमरमें बांधनेसे वीर्य स्तम्भन होता है।

वीर्यस्तम्भक दीपक

कपिलाघृतेन बोधितदीपः सुरगोपचूर्णसम्मिलितः।
स्तंभयति पुरुषवीर्यं रत्यारम्भे निशासमये ॥ २७ ॥

भा० टी०—कपिला गौके घीसे जलाया हुआ और इन्द्रगोपके चूर्णसे युक्त दीपक रात्रिमें रतिके समय पुरुषके वीर्यका स्तम्भन करता है।

द्रावण लेप

टंकणपिप्पलिकामासूरणकर्पूरमातुलिंगरसैः।
कृत्वात्मांगुलिलेपं कुरुते स्त्रीणां भगद्रावम् ॥ २८ ॥

भा० टी०—सुहागा, पीपल, जमीकन्द, कपूर और बिजौरेके रससे अपनी अंगुलीको लेप करनेसे स्त्रियोंका भग द्राव होता है।

द्यूत तथा वादविजय मूल

मूलं श्वेतापमार्गस्य कुबेरदिशि संस्थितम्।
उत्तरात्रितये ग्राह्यं शीर्षस्थं द्यूतवादजित् ॥ २९ ॥

भा० टी०—सफेद चिरचिटेकी जड़को उत्तर दिशामेंसे उत्तरफाल्गुणि, उत्तराषाढ या उत्तराभाद्रपद नक्षत्रमें उखाड़ कर शिर पर रखे तो द्यूत और वादमें विजय पावे।

रतिदायक लेप

अग्न्या वर्तितनागे हरवीर्यं निक्षिपेत्ततो द्विगुणम्।
मुनिकनकनागसर्पज्योतिष्मत्यतसिभ्यां च ॥ ३० ॥

भा० टी०—अग्निसे जलाये हुये नागमें उसका दुगना पारद रस डालकर उसको अगस्त्य, काले धतूरे, नागदमन और मालकंगनी,

डिक्केन मर्दयित्वा गणिकार्या मदन वलयकं कृत्वा।
रतिसमये वनितानां रतिदर्पविनाशनं कुरुते ॥ ३१ ॥

भा० टी०—और कनेरके रसोंके साथ मल कर लिंगपर लेप करनेसे रतिकालमें मद नष्ट हो जाता है।

द्रावण लेप-(द्वितीय)

व्याघ्रीवृहतीफलरससूरणकण्डुतिचर्णकपत्राम्बु।
कपिलकच्छुवज्रवल्लीपिप्पलिकामाळिकाचूर्णम् ॥ ३२ ॥

भा० टी०—व्याघ्री और वृहतीके फलोंका रस सफेद जमीकन्द कंडुति (अग्निक), चर्णकके पत्तोंका रस, कौंच, वज्रवेल, पीपल और माळिकाके चूर्णको लेकर,

अग्न्या वर्तितनागं नववार भावयेदिदं द्रव्यैः।
स्मरवलयं कृत्वैवं वनितानां द्रावणं कुरुते ॥ ३३ ॥

भा० टी०—इन द्रव्योंमें अग्निसे जलाये हुये नागको नौ बार भावना देकर यदि लिङ्ग पर लेप करे तो स्त्रियां द्रवित होती हैं।

द्रावण जलूका

भानुस्वरजिनसङ्ख्याप्रमाणसूतकग्रहीतदीनारान्।
अकोल राजवृक्ष कुमारीरसशोधन कुर्यात् ॥ ३४ ॥

भा० टी०—बारह, सोलह और २४ दीनार (आधा तोला) अर्थात् ६ तोले ८ तोले और १२ तोले प्रमाण पारद रसको पृथक्२ लेकर उसे अंकोलके रस, राज वृक्ष (अमलतास) के रस तथा घी कुवारके रसमें शोधन करे।

शशिरेखाखरकर्णीकोकिलनयनापमार्गकनकानाम् ।
चूर्णे सहैकविंशतिदिनानि परिमर्दयेत्सूतम् ॥ ३५ ॥

भा० टी०—फिर उस शोधे हुये पारद रसको शशिरेखा (गिलोय) खरकर्णी, कोकिलाक्षबीज, चिरचिटेके बीज और काले धतूरेके बीजोंके चूर्णके साथ २१ दिन तक खरल करे।

निशायां कांजिकं धूपं दत्त्वा योनौ प्रवेशयेत् ।
बालां मध्यां गतप्रायां योषां विज्ञाय तत्क्रमात् ॥ ३६ ॥

भा० टी०—उसको रात्रिमें कांजीकी धूप देकर योनिमें डाल दे। बालाके लिये बारह गद्याण प्रमाण, मध्यमाके लिये सोलह गद्याण प्रमाण और प्रौढ़ाके लिये २४ गद्याण प्रमाण डाली लेवे।

नीरसतां बिभ्राणां योषां रतिसंगरे महोन्मत्ताम् ।
द्रावयति तादृशीमप्येष जलूका प्रयोगस्तु ॥ ३७ ॥

भा० टी०—इस जलूकाका प्रयोग रति कालमें सदा नीरस रहनेवाली और महान् उन्मत्त स्त्रीको भी द्रावित कर देता है।

शाकनीहरण तिलक

सोमाशाश्रितमूल कपिकच्छोर्गोजलेन सम्पिष्टम् ।
निजतिलकप्रतिबिंब सम्पश्यति शाकिनी शीर्षे ॥ ३८ ॥

भा० टी०—उत्तर दिशामें उत्पन्न हुई कौंचकी जड़को गोमूत्रमें पीसकर उसका मस्तकपर तिलक करनेसे शाकिनी उसमें अपना प्रतिबिंब देखती है।

दिव्यस्तंभक चूर्ण

आदित्याक्षतदिव्यस्तम्भविधौ मरिचपिप्पलीकामम् ।
सर्पेरदिव्यस्तम्भे पुटशुन्ठीचूर्णं च भक्षयेद्धीमान् ॥ ३९ ॥

भा० टी०—बुद्धिमान् पुरुष दिव्य स्तम्भनके विधानमें आदित्य (आक) और अक्षत अथवा मिरच, पीपल, काम (ऊषण)का

सेवन करे। वही खर्पर दिव्यके स्तम्भनमें सोंठके चूर्णको खावे।

अग्नि तथा तुलास्तम्भन

तज्जरिका भेकवसा करलिप्तं स्तम्भनं करोत्यग्नेः।
श्वासनिरोधेन तुलादिव्यस्तम्भो भवत्येव ॥ ४० ॥

भा० टी०—तज्जरिका और मेंढककी चर्बीको हाथपर लगा लेनेसे अग्निका स्तम्भन और श्वास निरोधसे तुला दिव्यका स्तम्भन होता है।

अच्छा रोजगार चलाना

निर्गुण्डिका च सिद्धार्थो गृहे द्वारेऽथवा पणे।
बद्ध पुष्यार्कयोगेन जायते क्रयविक्रयम् ॥ ४१ ॥

भा० टी०—यदि पुष्य नक्षत्रमें निर्गुण्डी और सफेद सरसों घरके द्वार अथवा दूकानके द्वारपर रक्खी जावे तो अच्छा क्रय विक्रय होता है।

गर्भ निवारण

पिवति प्रसूनसमये जवाप्रसून विमर्द्य कांचिकया।
न बिभर्ति सा प्रसूनं धृतेऽपि तस्या न गर्भः स्यात् ॥४२॥

भा० टी०—जो स्त्री कांचिका (सौवीर) के साथ जवेके फूलको मलकर ऋतुकालमें पीती है वह फिर मासिकसे नहीं होती। यदि वह मासिकसे हो भी जावे तो उसको गर्भ नहीं रहता।

इति उभयभाषा कविशेखर श्रीमल्लिषेणसूरि विरचित भैरव-पद्मावती कल्पकी पण्डिता कलावतीदेवी सरस्वती (धर्मपत्नी काव्यसाहित्य-तीर्थाचार्य प्राच्यविद्यावारिधि श्री चन्द्रशेखर शास्त्री) कृत भाषा टीकामें "वश्य तन्त्राधिकार" नाम दशम परिच्छेद समाप्त ॥ ९ ॥

दशम परिच्छेद

(गारुडाधिकार)

गारुड़ विद्याके आठ अंग

सग्रहमङ्गन्यासं रक्षां स्तोभं च वक्ष्य संस्तम्भम् ।
विषनाशनं सचोद्यं खटिकाफणिदशन दंशञ्च ॥ १ ॥

गारुड़ विद्याके आठ अग होते हैं।

भा० टी—(१) संग्रह (२) अंगन्यास (३) रक्षा (४) स्तोभ (५) स्तंभन (६) विषनाशन (७) सचोद्य (८) खटिकाफणिदशन।

भा० टी०—डसे हुयेको जीवित या मृत जाननेके उपायको संग्रह कहते हैं। शरीरके अवयवोंमें बीजोंकी स्थापना करनेको अंगन्यास कहते हैं। शरीरकी रक्षा करनेको रक्षा कहते हैं। दुष्ट पुरुषके जगानेको स्तोभ और विष न बढ़ने देनेको स्तंभन कहते है। विष दूर करनेको विषनाशन कहते हैं। सर्पसे क्रीड़ा करनेको सचोद्य और खटिकाके नागमें काटनेकी शक्ति भरनेको खटिकाफणि दशन कहते हैं।

(१) संग्रह विधान—

समविषमाक्षरभाषिणि शशिदिनकरौ च वहमानौ ।
दष्टस्य जीवितव्य तद्विपरीते मृति विद्याव ॥ २ ॥

भा० टी०—यदि सर्पके काटनेकी खबर लानेवाला दूत चद्रस्वरमें सम अक्षर कहे तो समझना चाहिये कि सर्पदष्ट पुरुष बच जावेगा। अथवा यदि दूत सूर्यस्वरमें विषम अक्षर कहे तो उसकी मृत्यु समझनी चाहिये।

दूतमुखोत्थितवर्णान्द्विगुणो कृत्व त्रिभिर्हरेद् भागम् ।
शून्येनोद्धरितेन च मृतजीवितमादिशेत्प्राज्ञः ॥ ३ ॥

भा० टी०—बुद्धिमान पुरुष दूतके मुखसे निकले हुये अक्षरोंको गिनकर उनको दुगना करके तीनका भाग दे। यदि शेष शून्य हो तो मृत्यु अन्यथा जीवित समझना चाहिये।

ह्मां वं क्षः मन्त्र मंत्रिततोयेनोक्षति यस्य गात्रं चेव् ।
स च जीवत्यथवाक्षिस्पन्दनतोनान्यथा दृष्टः ॥ ४ ॥

भा० टी०—'ह्मां वं क्षः इस मंत्रसे जल पढ़कर दष्ट पुरुषके ऊपर डालनेसे यदि वह कांपने लगे अथवा नेत्र हिलाने लगे तो उसको जीवित अन्यथा मृतक समझना चाहिये।

इति संग्रह परिच्छेद ।

(२) अंगन्यास विधान—

क्षिप ॐ स्वाहा बीजानि विन्यसेत्पादनाभिहृन्मुखशीर्षे ।
पीतसितकाञ्चनासितसुरचापनिभानि परिपाट्या ॥ ५ ॥

भा० टी०—'क्षिप ॐ स्वाहा' इन पांच बीजोंको क्रमसे निम्न प्रकारसे अंगोंमें स्थापन करे—

'क्षि' बीजको पीतवर्णका दोनों पैरोंमें।
'प' बीजको श्वेतवर्णका नाभिमें।
'ॐ' बीजको कांचन वर्णका हृदयमें।
'स्वा' बीजको कृष्ण वर्णका मुखमें।
'हा' बीजको इन्द्र धनुषके वर्णका शिरमें स्थापित करे।
यह अंग न्यास क्रम है।

(३) रक्षा विधान—

पद्मं चतुर्दलोपेतं भूतान्तं नामसंयुतम् ।
दलेषु शेषभूतानि मायया परिवेष्टितम् ॥ ६ ॥

भा० टी०—एक चतुर्दल कमलकी कर्णिकामें नाम सहित 'हा' लिखकर उसके चारों दलोंमें 'क्षिप ॐ स्वा' बीज लिखकर ह्रींसे वेष्टित और क्रोंसे निरोध करे। इस यन्त्रको चन्दनसे लिखकर दुष्ट पुरुषके गलेमें बांध दे।

इति रक्षा विधान।

(४) स्तोभन विधान—

वह्निजलभूमिपवनव्योमाग्रे दह दहपचद्वयं योज्यम् ।
स्तोभययुगलं स्तोमं मध्यमिकाचालनाद्भवति ॥ ७ ॥
"ॐ पक्षि स्वाहा दह २ पच स्तोभय स्तोभय"

भा० टी०—इस मन्त्रको मध्यमा उंगली पर जपनेसे दुष्ट पुरुष कुछ जागने लगता है।

इति स्तोभन विधान।

(५) स्तंभन विधान—

आद्यन्ते भूबीजं मध्ये जलवह्निमारुतं योज्यम् ।
स्तंभय युगल स्तम्भो वामकरांगुष्टचालनतः ॥ ८ ॥
"क्षिप ॐ स्वा स्तम्भय स्तम्भय क्षि।"

भा० टी०—इस मन्त्रको बांये हाथके अंगूठे पर जपनेसे विषका स्तम्भन होता है।

इति स्तम्भन विधान।

(६) विषनाशन विधान—

जलभूमिवह्निमारुतगगनैः सम्प्लावयद्द्वयोपेतैः।
भवति च विषापहारस्तर्जन्या चालनादचिरात् ॥ ९ ॥

"पक्षि ॐ स्वाहा सम्प्लावय सम्प्लावय।"

भा० टी०—इस मन्त्रको बायें हाथकी तर्जनी द्वारा चलानेसे विष शीघ्र ही दूर हो जाता है।

इति विषनाशन विधान।

(७) सचोद्य विधानमें—

विषसंक्रमण मन्त्र

मरुदग्निवारिधात्रीव्योमपद संक्रमबीज द्वितीयम्।
चालनयाऽनामिकया नितरां विषसंक्रमो भवति ॥ १० ॥

"स्वा ॐ पक्षि हा सक्रम २ व्रज व्रज।"

भा० टी०—इस मन्त्रको अनामिका द्वारा चलानेसे विष संक्रमण हो जाता है।

नागावेशन मन्त्र

व्योमजलवह्निपवनक्षितियुतमन्त्राद्भवत्यथावेशः।
सक्षिपहः पक्षिपहः पठनेन कनिष्ठिकाभिचालनतः ॥११॥

"हा प ॐ स्वाक्षि संक्षिपहः पक्षिपहः"

भा० टी०—इस मन्त्रका बाए हाथकी कनिष्ठा द्वारा जपनेसे पुरुषके शरीरमें नाग आवेश करता है।

विषनाशन मन्त्र प्रथम

कर्णजाप्येन भेरुण्डा निर्विषं कुरुते नरम्।
विद्यासुवर्णरेखाऽपि दष्टतोयाभिषेकतः ॥ १२ ॥

भा० टी०—निम्नलिखित भेरुण्डादेवीके मन्त्रको दष्ट पुरुषके कानने जपने और उसको निम्नलिखित सुवर्ण रेखा मन्त्रके जलसे स्नान करानेसे दष्ट पुरुषका विष उतर जाता है।

भेरुण्डादेवीका मन्त्र

ॐ एहिर मारते भेरुण्डेविज्ञाभरियकरण्डे तन्तु मन्तु आद्येसह हुंकारेण लिखणासइ थावरजंगमक्रित्तिमअगजू ह्रीं देवदत्तस्य विष हर हर ॐ हुं फट्।

सुवर्णरेखा मन्त्र

"ॐ सुवर्णरेखे कुक्कुटविग्रहरूपिणि स्वाहा।"

विषनाशन मन्त्र द्वितीय

भूजलमरुगगनोऽक्षरमन्त्रेण घटाम्बुमंत्रितं कृत्वा।
पादादिविहितधारानिपातनाद्भवति विषनाशः॥ १३॥

"क्षिप स्वाहा।"

भा० टी०—इस मंत्रसे घड़ेके जलको मंत्रित करके सिरसे पैर तक डालनेसे विष नष्ट होता है।

आठ प्रकारके नागोंका वर्णन

अनन्तो वासुकिस्तक्षः कर्कोटः पद्मसंज्ञकः।
महासरोजनामा च शंखपालस्तथा कुलिः॥ १४॥

भा० टी०—अनन्त, वासुकि, तक्षक, कर्कोट, पद्म, महापद्म, शंखपाल और कुलिक यह नागोंके आठ भेद होते हैं।

क्षत्रियकुलसम्भूतो वासुकिशंखौ धराविषौ रक्तौ।
कर्मोटकपद्मावपि शूद्रौ कृष्णौ च वारुणीय गरौ॥ १५॥

भा० टी०—वासुकि और शंखपाल नाग क्षत्रिय कुलोत्पन्न,

रक्तवर्ण और पृथ्वीके बडे तेज विषवाले होते हैं। करकोटक ओर पद्मनाग शूद्रकुलोत्पन्न, कृष्णवर्ण और जलके हलके विषवाले होते हैं।

विप्रावनन्तकुलिकौ वह्निगरौ चन्द्रकांतसकाशौ।
तक्षकमहासरोजौ वैश्यौ पीतौ मरुद्गरलौ ॥ १६ ॥

भा० टी०—अनन्त और कुलिक नाग ब्राह्मण कुलोत्पन्न चन्द्रमाके समान उज्वल वर्णवाले और अग्निके विषवाले होते हैं। तक्षक और महापद्म वैश्य कुलोत्पन्न पीतवर्ण और वायुके विषवाले होते हैं। (जय और विजय नाग देवकुलके होते हैं। यह आशीविश कहलाते हैं। किंतु उनके इस पृथ्वीपर न होनेसे उनका वर्णन यहां नहीं किया गया।)

विषोंके लक्षण

पार्थिवविषेण गुरुता जड़ता देहस्य सन्निपातत्वम्।
लालाकण्ठनिरोधो गलिनं दन्तस्यतोयविषात् ॥ १७ ॥

भा० टी०—पृथिवी विषसे शरीर भारी, जड़ और सन्निपातकी अवस्था हो जाती है। जलके विषसे मुखसे लार गिरती है और दांत गलने लगते हैं।

गण्डोद्गमतां दृष्टेरपाटवं भवति वह्निविषदोषात्।
विच्छायतास्य शोषणामपि मारुतगरलदोषेण ॥ १८ ॥

भा० टी०—अग्निके विषसे गण्डस्थल फूलने लगते हैं और नेत्रोंसे भी दिखलाई नहीं देता। वायुके विषसे शरीरमें चचलता, नींद न आना और मुखशोषण होने लगता है।

विषहरण मन्त्र

ॐ नमो भगवत्यादि मन्त्रमष्टोत्तरशतं।
पठित्वा क्रोशपटहं ताडयेद्दष्ट सन्निधौ ॥ १९ ॥

भा० टी०—विषको दूर करनेके लिये निम्न लिखित मंत्रको एकसौ आठ बार पढ़कर दष्ट पुरुषके सामने खूब बाजे बजावे।

मन्त्रोद्धार

ॐ नमो भगवती वृद्धगरुडाय सर्वविषनाशिनि छिन्द२ भिन्द२ गृह२ एहि२ भगवतिविद्ये हर२ हुं फट् स्वाहा।

धृत्वार्द्धचन्द्रमुद्रां दक्षिणभागेऽह्विदंशिनः स्थित्वा।
वदतु तव गौरिदानीं तस्करलोकेन नीतेति॥ २०॥

भा० टी०—इसके पश्चत् मंत्री सर्पदष्ट पुरुषके दाहिनी ओर बैठकर बायें हाथके अंगूठे और तर्जनी अंगलीसे अर्द्धचद्र मुद्रा बनाकर कहे 'तव गौरिदानीं तस्करलोकेन नीता' अर्थात् तेरी गौको अभीर चोर ले गये हैं।

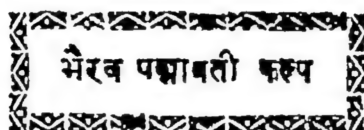
तं समाहत्यपादेन याहीत्युक्ते स धावति।
उत्थापयति तं शीघ्रं मन्त्रसामर्थ्यमीदृशम्॥ २१॥

भा० टी०—फिर उस दष्ट पुरुषको पैरसे मार कर कहे 'जा भाग जा' इस मंत्रकी सामर्थ्य ऐसी है कि वह यह सुनते ही भागने लगता है।

नागाकर्षण मन्त्र

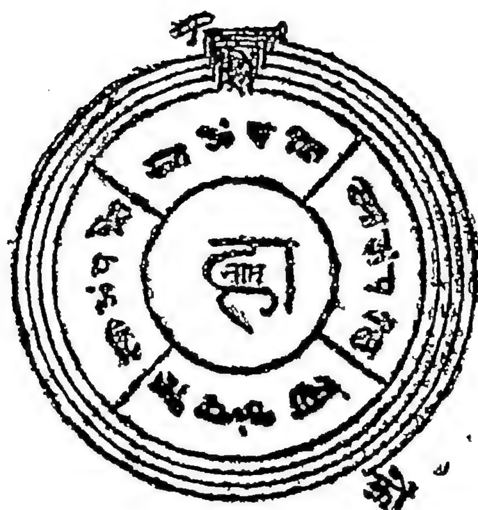
नियुतजपात्संसिध्यति दशांशहोमेन फणिसमाकृष्टिः।
प्रणवादिः स्वाहान्तश्चिरिचिरि शब्दादिको मंत्रः॥ २२॥
"ॐ चिरि चिरि इन्द्रवारुणि एह्नि२ कड२ स्वाहा।"

भा० टी०—यह नागाकर्षण मंत्र एक लक्ष जप और दशांश होमसे सिद्ध होता है।



यन्त्र संख्या ४४

नागप्रेषण मन्त्र



नागप्रेषणमंत्रोऽशीतिसहस्रैर्दशांशहोमेन ।
सिध्यति जाप्येन पुनः शोणित करवीर पुष्पाणाम् ॥ २३ ॥

"ॐ नमो नागपिशचि रक्ताक्षीशिभृकुमुखी उच्छिष्ट दीप्त तेजसे एहि२ भगवति गृह२ हुं फट् स्वाहा ।"

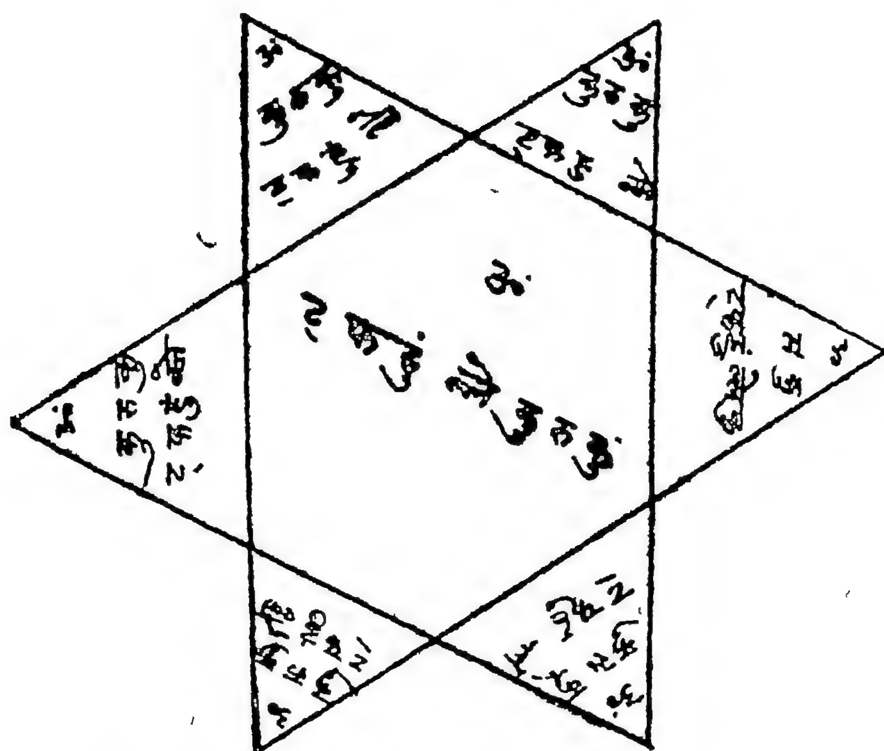
यह नामको छोटे२ कामोंमें लगानेका मन्त्र अस्सी सहस्र जप और लाल कनेरके फूलोंके दशांश होमसे सिद्ध होता है ।

वल्मीकनिकटे होम कुर्यात्त्रिमधुगन्वितम् ।
मन्त्रसिद्धौ तमाज्ञाप्य प्रेषयेदुरगेश्वरम् ॥ २४ ॥

भा० टी०—इस अनुष्ठानको घृत, मधु और दुग्ध सहित वल्मीकके पास करे । जब मंत्र सिद्ध होने पर नाग आवे तो उसे इच्छित स्थान पर भेजे ।

यंत्र संख्या ४५

सर्प निवारण यन्त्र

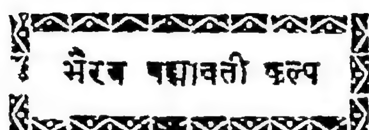


प्रेषितो हवनेनेति मा कस्यापि पुरो वदेत् ।
अन्यमन्त्रेण मा गच्छ मानवं भक्षयामुकम् ॥ २५ ॥

भा० टी०—और इससे कहे 'तू इसके अतिरिक्त दूसरे मन्त्रसे मत जा और अमुक व्यक्तिका भक्षण कर।' किन्तु इस प्रकार उसको हवनके द्वारा भेजनेका वृतान्त किसीसे न कहे।

दूतको गिराकर रोगीको अच्छा करना

फणिदष्टशरीरान्तः स्वाहामन्त्रतो विषम् ।
हत्वा सोमं सपद्माकारूतं मन्त्रेण पातयेत् ॥ २६ ॥



भा० टी०—" ॐ स्वाहा " इस मन्त्रसे दष्ट पुरुषके शरीरसे विषको खींचकर मस्तकसे अमृत चुवाता हुआ निम्नलिखित दूत मन्त्रसे दूतको गिरावे।

दूतमन्त्रोद्धार—

" ॐ नमो भगवत्यै वज्रतुण्डाये स्वाहा रक्ताक्षि कुनखि दूतं पातय २ मर २ बर २ ट ट ट हुं फट् घे घे।"

दष्टपातन और पटाच्छादन मन्त्र

ई ठामों फट् मन्त्रोच्चारणतः पतति भोगिना दष्टः।
ॐ ह्रोमादिपदान्तो दष्टपटाच्छादनो मन्त्रः॥ २७॥

भा० टी०—' ई ठां ॐ फट् ' इस मन्त्रके उच्चारणसे सर्प दष्ट पुरुष पृथिवी पर गिर जाता है। फिर—

' ॐ स्वाहा ठ ठ ठ ठ ठ हूण्णां सर्वं संहारय २ ॐ य ॐ ॐ गरुडाक्षि फट् ॐ फट् ॐ स्वाहा।"

इस मन्त्रसे उस गिरे हुये सर्पदष्ट पुरुषको वस्त्र ओढ़ाना चाहिये।

पवननमोक्षरमन्त्रेणाकृष्य च धावने ततो वस्त्रम्।
अनुधावति तत्पृष्ठं यत्र पटः पतति तत्रासौ॥ २८॥

भा० टी०—फिर यह सर्प दष्ट पुरुष ' स्वाहा ' इस मन्त्रसे वस्त्र उठाकर भागनेवाले पुरुषके पीछे भागता है और जहां कहीं वस्त्र गिरता है वहीं वह सर्पदष्ट पुरुष भी गिर जाता है।

निर्विषकरण मन्त्र

मन्त्रेणानेन फणिविषमुक्तो भवति जल्पितेन शनैः।
अपहरति निजस्थानाद्दशितेऽपि विष न संक्रमते॥ २९॥

"ॐ नमो भगवते पार्श्वतीर्थङ्कराय हंसः महाहंसः पद्महंसः शिवहंसः कोहंसः हूंहंसः पक्षि महाविषं भक्षि हुं फट्।"

भा० टी०—इस मन्त्रको धीरे २ बोलनेसे सर्पका विष अपने स्थानसे इस प्रकार दूर हो जाता है कि फिर सर्पके काट लेने पर भी विष नहीं चढ़ता।

नागको साथ २ चलाना

तेजोनमः सहस्रादिमन्त्रं प्रपठतः फणिः।
अनुयाति ततः पृष्ठ याहीत्युक्ते निवर्तते ॥ ३० ॥

"ॐ नमः सहस्रजिव्हे कुमुदभोजिनि दीर्घकेशिनि उच्छिष्ट-भक्षिणि स्वाहा।"

भा० टी०—इस मन्त्रको पढ़नेसे सांप पीछे २ चलता है और "याहि" अर्थात् जाओ ऐसा कहनेसे चला जाता है।

सर्पके मुखको कीलनेका मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं ग्लौं हूं क्ष्रूं टान्तद्वितीयेन फणिमुखस्तम्भः।
हूं क्ष्रूं ठठेति गमनं दृष्टिं ह्रां क्ष्रां ठठेति बध्नाति ॥३१॥

भा० टी०—"ॐ ह्रीं श्रीं ग्लौं हूं क्ष्रूं ठः ठः" इस मन्त्रसे सर्पका मुख कीला जाता है।

सर्पकी गतिको कीलनेका मंत्र

"हूं क्ष्रूं ठः ठः" इस मंत्रसे सर्पकी गतिको कीला जाता है।

सर्पकी दृष्टिको कीलनेका मंत्र

"ह्रां क्ष्रां ठः ठः" इस मंत्रसे सर्पकी दृष्टिका स्तम्भन होता है।

सर्पको कुण्डलाकार बनानेका मंत्र

बामं सुवर्णरेखाय गरुडाज्ञापयत्यत: ।
स्वाहान्तमन्त्रमुच्चार्य कुण्डलीकरणं कुरु ॥ ३२ ॥

'ॐ सुवर्णरेखाय गरुडाज्ञायति कुण्डलीकरणं कुरु२ स्वाहा ।" यह सर्पको कुण्डलाकार बनानेका मत्र है ।

सांपको घड़ेमें घुसानेका मंत्र

सप्रणव: स्वाहान्तो ठठ ठठ ठालेति संयुतं कुरुते ।
मन्त्रं घटप्रवेश क्षणेन नागेश्वरस्यापि ॥ ३३ ॥
'ॐ ठ ठ ठ ठ ठा ठा कुरु स्वाहा'

भा० टी०—यह मन्त्र नागोंके राजाको भी घड़ेमें घुसा देता है ।

नागस्तम्भक रेखाका मंत्र

'ॐ ह्रां ह्रीं गरुडाज्ञा ठठेति तन्मुद्रया कृतां रेखाम् ।
भुजगो मरणावस्थो न लङ्घते तां कदाचिदपि ॥ ३४ ॥
"ॐ ह्रां ह्रीं गरुडाज्ञा ठ ठ:"

भा० टी०—इस मत्रसे बनाई हुई रेखाको सांप मरता हुआ भी उलंघन नहीं करता ।

(८) खटिकाफणिदर्शन विधान—

कपिकच्छुकरसभावितखटिका प्रणवादिनीलपरिजप्ता ।
लेख्यस्तयोपदेशात्खटिकासर्प: शनेर्वारे ॥ ३५ ॥

भा० टी०—खड़िया मिट्टीको कौंचके रसमें भावना देकर उसको निम्नलिखित मंत्रसे मंत्रित करके उससे शनिवारको शास्त्रके उपदेशके अनुसार एक खड़ियाका सर्प बनावे ।

मन्त्रोद्धार—

"ॐ नीलविष महाविष सर्पसंक्रामिणि स्वाहा।"

यो हन्यात् तद्वक्त्र त भोगी दशति नाऽत्र सन्देहः।
दृष्ट्वा करतलदंश मूर्च्छति विषवेदनाऽऽकुलितः॥ ३६॥

भा० टी०—जो कोई पुरुष उस खटिका सर्पके मुखपर मारता है वह खटिका सर्प उसीको डस लेता है। तब वह दष्ट पुरुष हाथमें डसनेके चिह्नको देखकर विषकी वेदनासे पीड़ित होकर मूर्च्छित हो जाता है।

फिर बुद्धिमान पुरुष उस खटिका सर्पके द्वारा डसे हुये पुरुषके हृदय, कण्ठ, मुख, मस्तक और शिरको क्रमशः देखे कि स्तम्भन ही है या आंखोंको धोखा है।

स्तम्भनका निश्चय हो जानेपर खटिकामें उतारे हुए सर्प पर "ॐ क्षां क्षीं" इस मन्त्रके पढ़नेसे वह दष्ट पुरुष विषको छोड़कर भोजन कर सकता है अर्थात् निर्बिष हो जाता है।

इति खटिका फणि दर्शन विधान

विषभक्षण मंत्र

ॐ क्रौं प्रौं त्रीं ठः मन्त्रेण विष हूंकारमध्यगम्।
जप्त्वा सूर्यं दृशाऽऽलोक्य भक्षयेत्पूरकात्ततः॥ ३७॥

भा० टी०—हथेलीपर हूं लिखकर उसके अन्दर स्थावर विषको रखे फिर उस विषको 'ॐ क्रौं प्रौ त्रीं ठः ठः' इस मंत्रसे मंत्रित करके सूर्यकी ओर देखकर पूरक योगसे विषको खा जावे।

विषसे शत्रुनाशन

प्रतिपक्षाय दातव्यं ध्यात्वा नीलनिभं विषम्।
ग्लौं क्रौं मंत्रयित्वा तु ततो घे घेति मंत्रिणा॥ ३८॥

भा० टी०—मन्त्री "ग्लौं कुौं घे घे" इस मन्त्रसे विषको मन्त्रित करके उसको नील वर्णका ध्यान करके शत्रुको देवे।

विषनाशन तन्त्र

मुनिह्यगन्धा घोषा वन्ध्याकटुतुम्बिका कुमारी च।
त्रिकटुककुष्टेन्द्रयवा घ्नन्ति विषं नस्य पानेन ॥ ३९ ॥

भा० टी०—अगस्त्य, असगध, घोषा (तोरई), वन्ध्या (कर्कोटी), कड़वी तुम्बी, घृतकुमारी, त्रिकटु (सोठ, पीपल, कालीमिरच), कूठ और इन्द्रजौको सुंघाने और पिलानेसे स्थावर और जंगम सभी विष नष्ट हो जाता है।

बिच्छु विषनाशन तन्त्र

द्विपमलमूतचछत्रं रविदुग्धं श्लेष्मतरुफलोपेतम्।
वृश्चिकविष सक्राम बदरीतरुदण्डसयोगात् ॥ ४० ॥

भा० टी०—हाथीकी लीद, छतौना, आकका दूध और बहेडेके फलको पीसकर रक्खे। और पुष्य नक्षत्रमें ऊपर और नीचे कांटोवाली बेरकी सलाईको लेकर उससे इस औषधिका लेप करे, ऊपरके कांटेसे विषको उतारकर नीचेके कांटेसे बिच्छूके विषको किसी औरपर चढ़ा दे।

घरमेंसे सर्प भगानेका यन्त्र

षट्कोणभवनमध्ये कुरुकुल्लां योलिखेद्गृहे विद्याम्।
तत्र न तिष्ठति नागा लिखिते नागारिबन्धेन ॥ ४१ ॥

भा० टी०—घरकी देहलीमें एक षट्कोण यन्त्र बनाकर उसमें निम्नलिखित गरुड बन्ध मन्त्र लिखनेसे सर्प उस घरसे भाग जाता है।

यंत्र संख्या ४६

गरुडबन्ध मन्त्र



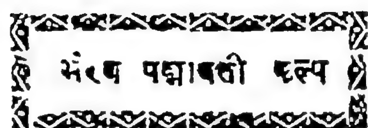
"ॐ कुरुकुल्ले हुं फट्"

शिष्यको विद्या देनेका विधान

चतुरस्रं मण्डलमतिरमणीयं पञ्चवर्णचूर्णेन ।

प्रविलिख्य चतुःकोणे तोयभृतान्स्थापयेत्कलशान् ॥ ४२ ॥

भा० टी०—एक चौकोर मण्डलको श्वेत, रक्त, पीत, हरित



और कृष्ण इन पांच रंगोंके चूर्णसे बनाकर उसके चारों कोनोंमें जलसे भरे हुवे कलश रखे।

तस्योपरिविपुलतरं मण्डलमतिसुरभिपुष्पमाकीर्णम्।
चन्द्रोपमध्वजतोरणघण्टावरदर्पणोपेतम् ॥ ४३ ॥

भा० टी०—उसके ऊपर अत्यन्त विस्तृत मण्डल बनावे, जो सुगन्धित पुष्पोंसे भरा हुआ हो और चन्द्रमाके समान उज्ज्वल, ध्वजा, घण्टों और सुन्दर दर्पणोंसे युक्त हो।

पञ्चपरमेष्ठि मन्त्रं प्रत्येकं प्रणवपूर्वहोमान्तम्।
अष्टदलाम्बुजमध्ये हिमकुंकुममलयजैर्विलिखेत् ॥ ४४ ॥

भा० टी०—तब कपूर, केशर और चन्दनसे एक अष्टदल कमल बनाकर उसकी कर्णिकामें निम्नलिखित मन्त्रोंको लिखे।

कर्णिकाके मन्त्र—ॐ अर्हद्भ्यः स्वाहा।
ॐ सिद्धेभ्यः स्वाहा।
ॐ सूरिभ्यः स्वाहा।
ॐ पाठकेभ्यः स्वाहा।
ॐ सर्वसाधुभ्य स्वाहा।

पूर्वाग्न्यादिषु दलेष्वाज्जयादि जम्भादिदेवता ह्येताः।
तद्दक्षिणदिग्भागे हेममयीं पादुकां देव्याः ॥ ४५ ॥

भा० टी०—इस कमलके पूर्व आदि दिशाओंके दलोंमें जया आदि देवियों और अग्निकोण आदिके दलोंमें जम्भा आदि देवियोंको लिखकर इस कमलकी दक्षिण दिशाके भागमें देवीकी स्वर्णमयी पादुका बनावे।

दशोंके मन्त्र—पूर्व-ॐ जयायै स्वाहा।
अग्नि-ॐ जम्भायै स्वाहा।
दक्षिण-ॐ विजयायै स्वाहा।
नैऋत्य-ॐ मोहायै स्वाहा।
पश्चिम-ॐ अजितायै स्वाहा।
वायव्य-ॐ स्तम्भायै स्वाहा।
उत्तर-ॐ अपराजितायै स्वाहा।
ईशान-ॐ स्तंभिन्यै स्वाहा।

अभ्यर्च्य गन्धतन्दुलकुसुमैर्नैवेद्यदीपधूपफलैः।
परमेष्ठियन्त्रमन्त्रं भैरवपद्मावती पादौ॥ ४६॥

भा० टी०—फिर इस परमेष्ठि यन्त्र, मन्त्र और पद्मावतीदेवीके चरणोंकी चन्दन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, और फलोंसे पूजा करे।

परसमयतत्वविरक्तं शिष्यं जिनसमयदेवगुरुभक्तम्।
कृतवस्त्रालंकारं संस्नात मण्डलाभिमुखम॥ ४७॥

भा० टी० -फिर अन्य शास्त्र और गुरुओंसे विरक्त जिनदेव और जैन शास्त्र और जैन गुरुमें भक्ति रखनेवाले शिष्यको स्नान कराकर, वस्त्र तथा अलंकार पहिनाकर मण्डलके सामने लावे।

संस्नाप्य चतुः कलशैः सहिरण्यैस्तं ततोऽन्यवस्त्रादैन्।
दत्वा तस्मै मन्त्रं निवेदयेद्गुरुकुलायाथम्॥ ४८॥

भा० टी०—उस शिष्यको पहिले रक्खे हुये चार कलशोंसे

स्नान कराकर अन्य वस्त्र आदि देकर गुरु क्रमसे चला आया हुआ मन्त्र दे और कहे—

भवतोऽस्याभिर्दत्तो मत्रोऽय गुरुपरम्परायात:
साक्षीकृत्य हुताशनरविशशितारामम्बरादिगणान् ॥ ४९ ॥

भा० टी०—'तुमको मैं यह गुरुपरम्परासे चला आया हुआ मत्र अग्नि, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र और आकाशकी साक्षीपूर्वक देता हू।

भवताऽपि न दातव्य: सम्यक्त्वविवर्जिताय पुरुषाय।
किन्तु गुरुदेवसमये भक्तिमते गुणसमेताय ॥ ५० ॥

भा० टी०—तुम भी इसको सम्यक्त्वसे रहित पुरुषको न देना। किन्तु देव, शास्त्र और गुरुमे भक्ति रखनेवाले गुणी पुरुषको ही देना।

लोभादथवा स्नेहाद्दास्यसि चेदन्यसमयभक्ताय।
बालस्त्रीमुनिगोवधपापं यत्तद्भविष्यतीति ॥ ५१ ॥

भा० टी०—यदि तुम लोभ या प्रेमसे अन्य मतावलम्बीको दोगे तो तुमको बालहत्या, स्त्रीहत्या, मुनिहत्या और गोहत्याका पाप लगेगा।

इत्येव श्रावयित्वा तं सन्निधौ गुरुदेवयो:।
मन्त्री समर्पयेन्मन्त्र मन्त्रासाधनयोगत: ॥ ५२ ॥

भा० टी०—मत्री उसको इस प्रकार गुरु और देवताके सामने शपथ देकर मंत्रसाधनके विधानके अनुसार मत्र दे दे।

ग्रन्थकारकी गुरुपरम्परा

सकलनयमुकुटघटितचरणयुगः, श्रीमदजितसेनगणिः ।
जयतु दुरितापहरी, भव्यौघभवार्णवोत्तारी ॥ ५३ ॥

भा० टी०—जिनके चरण युगल समस्त राजाओंके समूहके मुकुटोंसे छुपे जाते हैं, जो पापको नष्ट करनेवाले हैं, और जो भव्योंके समूहको संसाररूपी समुद्रसे तारनेवाले हैं ऐसे श्री अजितसेनगणि मुनि जयवन्त हो।

जिनसमयागमवेदी गुरुतरसंसारकाननोच्छेदी ।
कर्मेन्धनदहनपटुस्तच्छिष्यः कनकसेनगणिः ॥ ५४ ॥

भा० टी०—जैन शास्त्रोंको जाननेवाले, अत्यत कठिन संसार-रूपी वनको नष्ट करनेवाले कर्मरूपी इन्धनके जलानेमें चतुर श्री कनकसेनगणि उनके शिष्य थे।

चारित्रभूषिताङ्गो निस्सङ्गो मथितदुर्जनाऽनङ्गः ।
तच्छिष्योजितसेनो बभूव भव्याब्जधर्मांशुः ॥ ५५ ॥

भा० टी०—चारित्रसे शोभायमान अंगवाले, परिग्रहरहित, दुर्जय कामदेवको नष्ट करनेवाले और भव्यरूपी कमलोंके लिये सूर्य श्री जिनसेन उन कनकमुनिके शिष्य थे।

तदीयशिष्यो मुनिमल्लिषेणः सरस्वतीलब्धवरप्रसादः ।
तेनोदितो भैरविदेवतायाः कल्पः समासेन चतुःशतेन ॥५६॥

भा० टी०—सरस्वतीसे वरदान पाये हुये श्री मल्लिषेण [illegible]मके

मुनि उनके शिष्य हुये। उन्होंने ही इस भैरव पद्मावती कल्पको चारसौ श्लोकोंमें कहा है।

यावद्वार्द्धिमहीधरतारागणगगनचन्द्रदिनपतयः।
तिष्ठन्ति तावदास्तां भैरवपद्मावतीकल्पः॥ ५७॥

भा० टी०—जबतक समुद्र, पर्वत, तारागण, आकाश, चन्द्र, और सूर्य रहें तबतक यह भैरव पद्मावतीकल्प भी बना रहे।

इति उभयभाषा कविशेखर श्री मल्लिषेणसूरि विरचित भैरव पद्मावती कल्पकी पंडिता कलावतीदेवी सरस्वती (धर्मपत्नी काव्यसाहित्य-तीर्थाचार्य प्राच्यविद्यावारिधि श्री चन्द्रशेखर शास्त्री) कृत भाषा टीकामें 'गरुडाधिकार' नाम दशम परिच्छेद समाप्त ॥ १० ॥

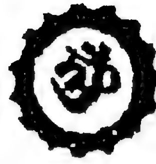
प्रति लेखक—

चन्द्रशेखर शास्त्री काव्यसाहित्याचार्य प्राच्यविद्यावारिधि।

मिति आश्विन शुक्ला दशमी गुरुवार सं० १९८४ विक्रमी, ता० ६ अक्टूबर सन् १९२७ ईस्वी, समय ३॥ बजे दोपहर।

इति शम्।





नमः सिद्धम् ।

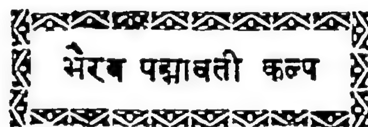
पद्मावती सहस्रनाम स्तोत्रम्

अथ पद्मावती शतम्

प्रणम्य परया भक्त्या, देव्याः पादांबुजां त्रिधा ।
नामान्यष्टसहस्राणि, वक्तुं तद्भक्तिहेतवे ॥ १ ॥

श्री पार्श्वनाथचरणांबुजचंचरीका भव्यांधनेत्र विमलीकरणे शलाका ।
नागेंद्रप्राणधरणीधरधारणाभूव, मां पातु सा भगवती
नितरा मवेभ्यः ॥ २ ॥

पद्मावती पद्मवर्णा, पद्महस्तातो पद्मनी ।
पद्मासना पद्मकर्णा, पद्मास्या पद्मलोचना ॥ ३ ॥
पद्म पद्मदलाक्षी च, पद्मा पद्मवने स्थिता ।
पद्मालया पद्मगधा, पद्मरागो परागिका ॥ ४ ॥
पद्मप्रिया पद्मनाभिः, पद्मांगा पद्मशायिनी ।
पद्मवर्णवती पूता, पवित्रा पापनाशिनी ॥ ५ ॥
प्रभावती प्रसिद्धा च, पावती पुरवासिनी ।
प्रज्ञा प्राह्लादिनी प्रीतिः, पीताभा परमेश्वरी ॥ ६ ॥
पातालवासिनी पूर्णा, पद्मयोनिः प्रियवदा ।
प्रदीप्ता पासहस्तां च, पूरा पारा परंपरा ॥ ७ ॥
पिंगला परमा पूरा, पिंगा प्राची प्रतीचिका ।
परकार्यङ्करा पृथ्वी, पार्थवी पृथिवीपर्वि ॥ ८ ॥



पल्लव पानदा पात्रा पवित्रांगी च पूरना ।
प्रभा पताकिनी पीता, पन्नगाधिपशेखरा ॥ ९ ॥
पनाक्षा पद्मकुटिनी पतिमान्य पराक्रमा ।
पद्मांवरधरा पुष्टिः परमागम बोधिनी ॥ १० ॥
परमात्मा परा नदा, परमा पात्रपोषिणी ।
पचदातगतिः पौत्रि, पाखण्डघ्ना पितामही ॥ ११ ॥
प्रहेलिकापि प्रत्य च, पृथुरापीघनाशिनी ।
पूर्णचन्द्रमुखी पुण्या, पुलोमा पूर्णिमा यथा ॥ १२ ॥
पावनी परमानन्दा, पण्डिता पण्डितेहिता ।
प्रांसुलभ्या प्रमेया च, प्रमा प्राकारवर्तिनी ॥ १३ ॥
प्रधाना प्रार्थिता प्रार्थ्य, पट्टदा पंक्तिपूर्यनी ।
पातालास्येश्वरप्राण, प्रेयसी प्रणमामितां ॥ १४ ॥

इति पद्मावती शत ॥ १ ।



अथ महाज्योति शतम्

महाज्योतिर्मती माता, महामाया महासती ।
महादीप्तवती मित्रा, महाचंडा च मंगला ॥ १ ॥
महोषी मानुषोमेघा, महालक्ष्मीर्मनोहरा ।
महापहारनिम्नांगा मानिनी मानशालिनी ॥ २ ॥
मार्गस्था सुमुहूर्ता च माध्वी मधुमती मही ।
माहेश्वरी महेज्या च, मुक्ताहारविभूषणा ॥ ३ ॥
महामुद्रा मनोज्ञा च, महाश्वेतातिमोहिनी ।
मधुप्रियामतिर्माय मोहिनी च मनस्विनी ॥ ४ ॥
माहिष्मती महावेगा, मानदा मानहारिणी ।
महाप्रभावमदना, मंत्रवश्या मुनिप्रिया ॥ ५ ॥

मन्त्ररूपा च मंत्राज्ञा, मंत्रदा मंत्रसागरा ।
मधुप्रिया महाकाया, महाशीला महाभुजा ॥ ६ ॥
महाशना महारम्या, मनोभेदा महासभा ।
महाकांति धरामुक्ति, महाव्रतसहायिनी ॥ ७ ॥
मधुश्रवा मूर्छना च, मृगाक्षी च मृगावती ।
मृणालिनी मनः, पुष्टिर्महाशक्ति महार्थदा ॥ ८ ॥
मूलाधारा मृडानी च, मत्तमातंगगामिनी ।
मन्दाकिनी महाविद्या, मर्यादा मेघमालिका ॥ ९ ॥
मन्दवेगा मन्दगतिः, महाशोका महीधरा ।
महोत्साहा महादेवी, महिला मानवर्द्धिनी ॥ १० ॥
महाग्रह हरा मारी, मोक्षमार्गप्रकाशिनी ।
मान्या मानवती माति, मणिनूपुरशोभिना ॥ ११ ॥
मणिकांति धरा मीना, महामत प्रकाशिनी ।
इन्द्रेश्वरी ङिज्पे क्लेखे, पिनीकारस्वरूपिणी ॥ १२ ॥

इति महाज्योति शतं ॥ २ ॥

अथ जिनमाता शतम्

जिनमाता जिनेन्द्रा च, जयन्ती जगदीश्वरी ।
जया जयवती जाया जननी जनपालिनी ॥ १ ॥
जगन्माता जगन्माया, जगज्जैत्री जगज्जिता ।
जागरा जर्जराजैत्री, यमुनाजलवासिनी ॥ २ ॥
योगिनीयोगमूला च जगद्धात्री जलन्धरा ।
योगपट्टधरा ज्वाला, ज्योतिरूपा च ज्वालिनी ॥ ३ ॥
ज्वालामुखी ज्वालमाया, क्षालनी च जगद्धिता ।
जैनेश्वरी जिनाधारा, जीवनी यशपालिनी ॥ ४ ॥

यशोदा ज्यायसी ज्येष्ठा, ज्योत्स्ना च ज्वरनाशिनी ।
क्षार रूपा जरा जीर्णा, जांगुळा भयतर्जिनी ॥ ५ ॥
युगभारा जगन्मित्रा, यंत्रिणी जन्मभूषणा ।
योगेश्वरी चयोगंगा, योगयुक्ता युगादिजा ॥ ६ ॥
यथार्थवादिनी जाबू, नदिकांति धराजया ।
नारायणी निर्मदा च, निमेषे नर्तनी नरी ॥ ७ ॥
नीलानन्ता निराकारा, निराधारा निराश्रया ।
नृपवश्या नरमान्या, निःसंगा नृपनंदिनी ॥ ८ ॥
नृपधर्ममयी नीति, तोतिळा नरपालिनी ।
नंद्यानंदिवती निष्टा, नीरदा नागवल्लभा ॥ ९ ॥
नृत्यप्रिया नंदिनी च, नित्यानेका निरामिषा ।
नागपाश धरा नौका, निःकलंका निरागसा ॥ १० ॥
नागवल्ली नागकन्या, नागिनी नागकुण्डली ।
निद्रा च नागदमनी, नेत्रा नाराचवर्षिणी ॥ ११ ॥
निर्विकारा च निर्वैरा, नागनाथेश वल्लभा ।
निर्लोभा च नमस्तुभ्य, नित्यानन्द विधायिनी ॥ १२ ॥

इति जिनमाता शतं ॥ ३ ॥



अथ वज्रहस्ता शतम्

वज्रहस्ता च वरदा, वज्रशैळा वरूथनी ।
वाचा वज्रायुधा वाणी विजया विश्वव्यापिनी ॥ १ ॥
वसुदा बलदा वीरा, विषया विषवर्द्धिनी ।
वसुन्धरा वराविश्वा, वर्णनी वायुगामिनी ॥ २ ॥
बहुवर्णा निजवती, विद्यावुद्धिमती विभा ।
विद्या वामवती वामा, निविद्धा वंशभूषणा ॥ ३ ॥

वरारोहा विशोका च, वेदरूपा विभूषणा।
विशाला वारुणी कल्पा, वालिका बालिनीप्रिया ॥ ४ ॥

वर्तनी विषहा वाला, विवक्ता वनवासिनी।
वन्द्य विधिस्तुनासह्यो, विश्वयोनिर्बुधप्रिया ॥ ५ ॥

वरदा वीरमाता च, वसुधा वीरनन्दिनी।
वरायुध धरावेषो, वारिदा वलशालिनी ॥ ६ ॥

बुधनाता वेद्यमाता, बन्धुरा बन्धुरूपिणी।
विद्यावता विशालाक्षी, वेदमाता विभास्वरी ॥ ७ ॥

बाताली विषमावैस्या, वेदवेदांगधारिणी।
वेदमार्गरताव्यक्ता, विलोसा वादशालिनी ॥ ८ ॥

विश्वमाता विकंपा च, वंशजा विश्वदीपिका।
वसंतरूपिणी वर्षा, विमला विवुधायुधा ॥ ९ ॥

विज्ञानती पवित्रा च, विपंची बन्धमोक्षिणी।
विषरूपमती वद्धी, विनोता विशिषा विभा ॥ १० ॥

व्यालनी व्याललीला च, व्यापा व्याधिविनाशिनी।
विमोहा प्राण सन्देहा, वर्द्धनी वर्द्धमानका ॥ ११ ॥

ईसानी तीसरे भेदा, वरदाइ नमोस्तु ते।
कपालेश्वरी प्रिय प्राण, प्रयेशी वसुदायिनी ॥ १२ ॥

इति वज्रहस्ता शतं ॥ ४ ॥

अथ कामदा शतम्

कामदा कमला काम्या, कामांगा कामशालिनी ।
कमलावनी कलापूर्णा, कलाधारी कनीयसी ॥ १ ॥

कामिनी कमनीयांगा, कनत्कांचनसन्निभा ।
कात्यायिनी कांतिदा च, कमला कामरूपिणी ॥ २ ॥

कामिनी कमलामोदा, कलाकांतिकरी प्रिया ।
कायस्था कालिका काली, कुमारी कालरूपिणी ॥ ३ ॥

कालाकारा कामधेनुः, काशी कमललोचना ।
कुन्तला कनकाभा च, कारमीरा कुंकुमप्रिया ॥ ४ ॥

कृपावती कुण्डलनी, कुण्डलाकारशायिनी ।
कर्कशा कमला काली, कौलिकी कुलबालिका ॥ ५ ॥

कालचक्रधरा कल्पा, कालिका काव्यकारिका ।
कविप्रिया च कौशांबी, कारिणी कोशवर्धिनी ॥ ६ ॥

कुसुमावती किराला भा, शालिस्था कांतिवर्द्धनी ।
कादंबरी कंठोरस्था, कौशांब्या कोशवासिनी ॥ ७ ॥

कालघ्नी कालहननी, कुमारजननी कृतिः ।
कैवल्यदायिनी केका, कमंडा कलवर्द्धिनी ॥ ८ ॥

कलंकरहिता कन्या, कारुण्यालयवासिनी ।
कर्पूरामोदनीश्वासा, कामबीजवतीकरा ॥ ९ ॥

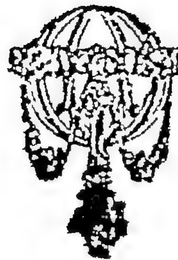
कलिना कुन्दपुष्पा भा, कुर्कटारगवाहिनी ।
कलिप्रिया कामना च, कमठोपरि शायिनी ॥ १० ॥

कमठोरा कठिना क्रूरा, कन्दला कदलीप्रिया ।
क्रोधनीऽक्रोधरूपा च, कुहूचाकारनर्तिनी ॥ ११ ॥

कांबोजिनी कांडरूपा, कोदण्डकरधारिणी ।
कुद्धकोड्वतीक्रीड़ा, कुमारानन्ददायिनी ॥ १२ ॥

कमलाशनाकेतकी च, केतुरूपा कुतूहला ।
कोपिनी कोपरूपा च, कुसुमावासवासिनी ॥ १३ ॥

इति कामदा शतं ॥ ५ ॥



अथ सरस्वती शतम्

सरस्वती शरण्या च, सहस्राक्षी सरोजगा।
सिवाशती सुधारूपा, शिवमाया सुता शुभा ॥ १ ॥
सुमेधी सुमुखी शांता, सावित्री सायगामिनी।
सुरोत्तमा सुवर्णा च, श्रीरूपा शास्त्रशायिनी ॥ २ ॥
शांता सुलोचना साध्वी, सिद्धा साध्या सुधात्मिका।
सारला सरला सारा, सुवेषा वंशवर्द्धिनी ॥ ३ ॥
शङ्करी शम्ता शुद्धा, शत्रुमन्या शिवङ्करी।
शुद्धाहाररता श्यामा, सीमा शीलवती सरा ॥ ४ ॥
शीतला सुभगा कर्त्री, सुकेशी शैलवासीनी।
शालिनी शाक्षिणी सीता, सुभिक्षा शियप्रेयसी ॥ ५ ॥
सुवर्णा शोणवर्णा च, सुन्दरी सुरसुन्दरी।
शक्ति स्तुषा सारिका च, सेव्या श्रीः सुजनार्चिता ॥ ६ ॥
शिव दूती श्वेतवर्णा, शुभ्राभा शुभ नाशिका।
सिंहगा सकला शोभा, शमिनी शिवपोषिणी ॥ ७ ॥
श्रेयस्करी श्रेयसी च, शौरिः सौदामिनी शुचिः।
सौभागिनी शोषिणी च, सुगन्धा सुमनः प्रिया ॥ ८ ॥
सौरभेयीमु सुरभी, श्वेतातपत्र धारिणी।
शृङ्गारिणी सत्यवक्री, सिद्धार्थ शीलभूषणा ॥ ९ ॥
सत्यार्थिनी च सध्याभा, शची सक्रांति सिद्धिदा।
संहार कारिणी सिंही, सप्तार्चिः सफलार्थदा ॥ १० ॥
सत्या सिंदूरवर्णाभा, सिंदूर तिलक प्रिया।
सारंगा सुतरा तुभ्यं, ते नमोस्तु सु योगिनी ॥ ११ ॥

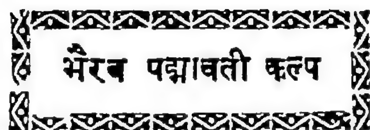
इति सरस्वती शतं ॥ ६ ॥



अथ भुवनेश्वरी शतम्

भुवनेश्वरी भूषणा च, भुवना भूमिप प्रिया।
भूमि गर्भा भूपवद्या भुजंगेश प्रिया भगा ॥ १ ॥
भुजङ्ग भूषणा भोगाः भुजङ्गाकारसायिनी।
भवता भिद्दरा भीम, भूमि भीमा दक्षालिनी ॥ २ ॥
भारती भगतिर्भोगा, भगनी भोग मन्दिरा।
भद्रिका भद्रि रूपा च, भूतात्मा भूत भंजिना ॥ ३ ॥
भवानी भैरवी भीमा, भामिनी भ्रमनाशिनी।
भुजंगिनी भुभुंडी च, भेदिनी भूमिभूषणा ॥ ४ ॥
भिक्षा भाग्यवती भासा, भोगिनी भोगवल्लभा।
भुक्तिदा भक्तिग्राह्या च, भवसागरतारिणा ॥ ५ ॥
भारती भास्वरीमूर्त्ति, भूतिदा भूतिवर्द्धिनी।
भाग्यदा भोग्यदा भोग्या, भाविनी भवनाशिनी ॥ ६ ॥
भिन्ना भट्टारका भीरू, भ्रामरी भ्रमरी भवा।
भट्टिनी भांडदा भांडा, भल्लाकी भूरि भाजिनी ॥ ७ ॥
भूमिगा भुमिदा भाषा, भक्षिणी भृगुश्रृंगिनी।
भाराक्रांता भिनंदा च, भंजिनी भूमिपालिनी ॥ ८ ॥
भद्रा भगवती भार्गा, वत्सला भगशालिनी।
खेचरी खड्गहस्ता च, खड्गिनी खलमर्दिनी ॥ ९ ॥
खट्वांगधारिणी खड्गा, खडगाखगवाहिनी।
षट् चक्रभेद विख्याता, खगपूजा खगेश्वरी ॥ १० ॥
लांगली ललना लेखा, लेपना ललिता लता।
लक्ष्मी लक्ष्मीमति लक्ष्म्या, लाभदा लोभ वर्जिता ॥ ११ ॥

इति भुवनेश्वरी शतं ॥ ९ ॥



अथ लीलावती शतम्

लीलावती लला माभा, लोहमुद्रा लपिप्रिया ।
लोकेश्वरी च लोकांगा, लब्धि लौरकांतपालिनी ॥ १ ॥
लोला लीलांगदा लोला, लावण्या ललितार्थदा ।
लोभदा लावनिर्लंका, लक्षणा लक्षवर्जिता ॥ २ ॥
उर्मोवशी उदीची च, उद्योत द्योतकारिणी ।
उद्धारण्य धरोदक्यां, उद्धामोद्गतिवाखिनी ॥ ३ ॥
उदाहारो तमो तंखो, उषःपुदधितारिणी ।
उत्तरोत्तर वादिन्यो, धराधरविनाशिनी ॥ ४ ॥
उत्कीलन्युत्कीलिनी च, उत्कीर्णोकार रूपिणि ।
ॐकाराकार रूपा च, विकार वरचारिणी ॥ ५ ॥
अमोघा सापुरी चान्ता, निरादि सुत संयुता ।
अनादि निधनानन्ता, चाटुली दाहनाशिनी ॥ ६ ॥
अपणार्द्ध चिंदुधरा, लोकालल्पा विवांगना ।
आनन्दानन्ददा लोका, राष्ट्रसिद्धि प्रदानका ॥ ७ ॥
अवन्या श्रमयि मूर्ति, रजीर्णाजीणहारिणी ।
अह कृत्य रजा जागा, ॐकार रतिरत्पदा ॥ ८ ॥
अनुरूपार्थ मूर्त्तिघ्नी, क्रीडाकैरवपालिनी ।
अनारुह्या श्रुगा भेदा, छेद्या चाकाशगामिनी ॥ ९ ॥
अनन्तराखाधिकारा, चांगा अनन्तरनाशिनी ।
अलका यवना लभ्या, सीता शिखरधारिणी ॥ १० ॥
अहिनाथ प्रिय प्राणा, नमस्तुभ्यं महेश्वरी ।
अकषणा धरा राग, मन्दा मोदं विधारिणी ॥ ११ ॥

इति लीलावती शतं ॥ ८ ॥

अथ त्रिनेत्रा शतम्

त्रिनेत्रा त्र्यंबकांतः श्री, त्रिपुरा त्रिपुरभैरवी।
त्रिपुष्टा त्रिफणा तारा, तोतिला त्वरितातुला ॥ १ ॥
तपप्रिया तपस्वी च, तपो निष्टा तपस्विनी।
त्रैलोक्य दीपका त्रेधा, त्रिसंध्या त्रिपदा त्रया ॥ २ ॥
त्रिसू पात्रि पद त्राणा, ता रात्रि पुरसुन्दरी।
त्रिलोचना त्रिपथगा, तारा मानविमर्दनी ॥ ३ ॥
धर्मप्रिया धर्मदा च, धर्मिनी धर्मपालिनी।
धारा धर धारा धारा, धात्रो धर्मांग पालिनी ॥ ४ ॥
धौता धृति धुरा धारा, धूनिनी च धनुर्द्धरा।
ब्राह्मणी ब्रह्मगोत्रा च, ब्राह्मणी ब्रह्मपालिनी ॥ ५ ॥
ब्रह्मा बिद्यत्प्रबीरा च, बीणाबासिब पूजिता।
गीता प्रियाभिधारा गा, गामिनी गज गामिनी ॥ ६ ॥
गङ्गा गोदावरी गौर्गा, गायत्री गणपालिनी।
गोचरी गोमती गुर्वा, गाथा गंधारिणी गुह्या ॥ ७ ॥
गरीयसी गुणोपेता, गरिष्टा गर मर्दिनी।
गम्भीरा गुरुरूपा च, गीता गर्वापहारिणी ॥ ८ ॥
ग्रहिणी ग्राहिणी गौरी, गन्धारी गन्धवासिनी।
गारुड़ी गामिनी गूढा, गाहनी गुणदायिनी ॥ ९ ॥
चक्रमध्या चक्रधरा, चित्रिणी चित्ररूपिणी।
चर्चनी चतुरा चिता, चित्रमाया चतुर्भुजा ॥ १० ॥
चन्द्राभा चन्द्रवर्णा च, चक्रणी चक्रधारिणी।
चक्रायुध करा चण्डी, चण्डचण्ड पराक्रमा ॥ ११ ॥

इति त्रिनेत्रा शतं ॥ ९ ॥

अथ चक्रेश्वरी शतम्

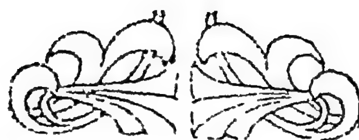
चक्रेश्वरी चमूर्श्चिता, चाश्विनी चपलानिका।
चन्द्रलेखा चन्द्रभागा, चन्द्रिका चन्द्रमण्डला॥ १
चन्द्रकांतिचन्द्रमश्री, चन्द्र मण्डलवर्त्तिनी।
चतु समुद्र पारांता, चतुराश्रम वासिनी॥ २॥
चतुर्मुखी चन्द्रमुखी, चतुर्वर्ण फलप्रदा।
चित्तस्वरूपा चिदानन्दा, चिरा चिन्तामणिः पदा॥ ३॥
चन्द्रहासा च चामुण्डा, चितना चौरवर्द्धिनी।
चैत्यप्रिया चैत्यलीना, चिंतनार्थे फलप्रदा॥ ४॥
ह्रींरूपा हसगमनी, हाकिनी हिंगुलाहीता।
हलाहल धाराहारा, हसवर्णा च हर्षदा॥ ५॥
हिमानी हरिता हीरा, हर्षिंगी हरिमर्द्दिनी।
गौपिनगौरगीता च, दुर्गा दुर्लक्षिता दरा॥ ६॥
दामिनी दीर्घिका दुःखा, दुर्गमा दुर्लभो दया।
द्वारिका दक्षिणा दीक्षा, दक्षा दोक्षा तिपूजिता॥ ७।
दमयन्ती दानयन्ती, दीतिर्दीप्ति दिबागतिः।
दरिद्रहा वैरि दूराम, दादुर्गबिनाशिनी॥ ८॥
दर्पहा दैत्यदासा च, दर्शनी दर्शनप्रिया।
वृषप्रिया च वृषभा, वृषारूढा प्रबोधिनी॥ ९॥
सूक्ष्मा सूक्ष्म गति श्लक्ष्णा, घनमाला घनद्युति।
छाया छात्र छवि छीरा क्षीरादा क्षतरक्षणी॥ १०॥

भ्रमरी दूति रात्रीश्च, रंगिनी रतिदा रुषा।
स्थूला स्थूलतरा स्थंडिलशेष वासिनी ॥ ११ ॥

स्थिरस्वानचली देवी, घनघघरनादिनी।
क्षेमंकरी क्षेमवती, क्षेमदा क्षेमवर्द्धिना ॥ १२ ॥

सेलूष रूपिणो शिष्टा, संसारार्णव तारिणी।
सदा सहायिनी तुभ्यं, नमस्तुभ्यं महेश्वरी ॥ १३ ॥

इती चक्रेश्वरी शतं ॥ १० ॥



प्रशस्ति

नित्यं पुमान्पठति योनितरांत्रि शुद्धया,
सौचं विधाय विमल फणिशेषरायाः।
स्तोत्रं सुनाय सूदयेसु सहस्त्र नामा,
चाष्टोत्तरं भवति सो भुवनाधिराज ॥ १ ॥
तत्कालजातवर गोमय लिप्त भूमौ,
कुर्य्या द्रिढा सनमतींप्रिय पद्मकाख्यं।
धूपं विधाय बर गुग्गुल माज्य युक्तं,
रक्तांबर वपुषि भूष्यः मन प्रशस्तः ॥ २ ॥
न तस्य रात्री भयमस्ति किंचित्, न शोक रोगोद्भव दुखजालं
न राजपीडा न च दुर्जनस्य, पद्मावतीस्तोत्र निशम्यतां वै ॥ ३ ॥
न बन्धनं तस्य न ताडितापं, न रोग शंकापि मद कदावि।
न मत्त नागस्य न केशरी भयं, यो नित्यपाठी स्तवनस्य पद्मे ॥४॥
न सङ्गरे शस्त्र चया विघातः, नव्याघ्रभीतिर्भुवि भीति भीतिः।
पिशाचिनी नां न च डाकिनीनां, स्तोत्र स्मयाः पठती यो वै ॥५॥
न राक्षसानां न च डाकिनीनां,
न चापदा नैव दरिद्रता च।
न चाल्यमृत्योर्भयमस्तु किंचित्,
पद्मावती स्तोत्र निशम्पतां वै ॥ ६ ॥
स्तवन विधाय विधिवद्भुवि प्राश्चं भक्तैः,
पूजां करोतु शुचि द्रव्य चये विचित्रः।

पद्मावती फलति तस्य मनोभिलाषं,
नानाविधं भवभवं सुखसारमूलम् ॥ ७ ॥

सु पूर्वाह्न मध्याह्न सन्ध्यासु पाठं,
तथैवावकांश भवेदेकचित्तः ।
भवेत्तस्य लाभार्थं आदित्यवारे,

करोतीह भक्ति सदा पार्श्वभर्तुः ॥ ८ ॥

शुभापत्य लक्ष्मी सुखा जिंद्र यूथा,
ग्रहे तस्य नित्यं सदा संचरति ।

नवीनांगनां नागना लाभ नित्यं,
शिवायाः सुनाभावलिर्यस्यचित्ते ॥ ९ ॥

ममाल्पबुध्या स्तवनं विधाय,
करोमि भक्ति फणि शेषराया ।

यदर्थं मन्त्राक्षरं व्यंजनच्युतं,
विशोधनीयं कृपया हि सद्भिः ॥ १० ॥

भो देवि भो मात ममापराधे,
संक्षम्य तांत्वत्स्वर नाभिधाने ।

माता यथापत्य कृतापराधं,
किं प्रीतिवाक्यं न करोति पुत्रे ॥ ११ ॥

इति पद्मावती सहस्रनाम सम्पूर्णम् ।



अथ न्यास मन्त्रम्

ॐ अस्य श्री पद्मावती मन्त्रस्य सुरासुर विद्याधर नागेन्द्र महाऋषि पतिर्वंहंगायत्रीछंदं पद्मावती देवता कमलबीज वाग्भवं शक्तिः प्रणवं कीलकं धर्म्मार्थकाममोक्षार्थे जयविनियोग श्री अगुष्टाभ्यां नमः, ॐ मध्यमाभ्यां नमः। श्री पद्मावती देवता अनामिकाभ्यां नमः, ऐं तर्जनीभ्यां नमः॥ सुरासुर विद्याधर नागेन्द्र महाऋषयः कनिष्टेकाभ्यां नमः, नीचद्गायत्रीछदः। ऽस्त्राय फट् श्री पद्मावतीबीजं हृदयाय नमः, ऐंशक्तिसिरसे स्वाहा॥ ॐ कीलक शिखाय वौषट् श्री पद्मावती देवता कवचायटृ सुरासुर विद्याधर नागेन्द्र महा ऋषयः नेत्रत्रयाय वौसट्। षट्नीचर्दगाय त्रीछन्देऽस्त्राय फट्, अथध्यांन वक्षेछित्य चद्वेगं कुन्कुड निर्मल ॥१॥ रक्तांवर धरा नारी, रक्तां गन्धानुलेपनं। रक्तवर्ण प्रभावेन, तप्त कांचन सन्निभं॥ २॥ एवं ध्यात्वा पठेन्नित्यं, साधक ध्यान धारणं। सर्वसिद्धि र्भवेत्तस्य, सिद्ध तुल्यं न संशयः॥ ३॥

अथ जाप्य मन्त्र

ॐ ह्रीं श्री पद्मावत्ये महाभरवे नम.।

अथ पद्मावती कवचं

ऐ नमः श्रीपद्मावती मातु गायत्री भगवन् सर्वमाख्यातं, मन्त्र यन्त्र शुभप्रद। पद्मायाः कवचं ब्रूहि, यद्यहंतव बल्लभा ॥१॥ महागोप्य महागुह्यं पद्मासा सर्वकामहं। कवच मोहनं देवी, गुरुभक्ताय दीयते ॥२॥ राज्यं देव च सर्वस्वं कवचं न प्रकाशनं। गुरुभक्ताय दातव्य, नान्यथा सिद्धिदा न हि॥ ३॥

आंशक्ति ह्रीं बीजं क्रौं कीलकम् पद्मावती प्रीत्यर्थं जपे विनियो.। अनुष्टुपछन्देभ्यो नमः। श्रीशक्ति देवतायै नमः। क्रौं कीलकम् पादयो आं बीजाय नमः। ह्रीं गुह्ये श्रीपद्मावती सिद्धार्थे जपेविनियोगः।

ॐ पद्मराव्यं शिरः पातु, मुखं भुवनसुन्दरी।
नेत्रे कामप्रदा पातु, ललाटं पंचमी परा ॥ ४ ॥
नाशिकां नागनाथं च, जिह्वां वागेश्वरी तथा।
श्रुतिरूपा जगद्धात्री, करोमिरि दवाहिनी ॥ ५ ॥
उदरं मोहदमनी, कुण्डली नाभिमण्डले।
पार्श्वपृष्टं कर गुह्यं शक्तिस्थान निवासिनी ॥ ६ ॥
उरू जंघे तथा पादौ, सर्वविद्या निवासिनी।
रक्ष रक्ष महामाये पद्मे पद्मालये शिवे ॥ ७ ॥
वांछितं पूरयत्पाश्रु, पद्मासायानुसर्वतः।
इदम् तु कवच देव्या, यो जानाति च मन्त्रवित् ॥ ८ ॥
राजद्वारे श्मसाने च, भूतप्रेतोपचारके।
बन्धनश्च महादुःखे भयं शत्रु-समागमे ॥ ९ ॥
स्मरणात् कवचेनास्य भय किंचिन्न जायते।
प्रयोगमुपचारंच, पद्मायाः कर्त्तुमिच्छति ॥ १० ॥
देहे च यत्र कुत्रापि, सर्वसिद्धिर्भवेत् ध्रुवम्।
शस्त्राग्निज भयं चेव, भूतादिभयनाशनम् ॥ ११ ॥
कवचं च पठेत् पादौ, ततः सिद्धिमवापनुयात्।
भूर्जपत्रे लिखित्वा तु, कवचंयस्तु धारयेत ॥ १२ ॥
गुरुभक्ति समासाद्य, पद्मायाः स्तवनं कुरु।
सहस्त्रनाम पठने, कवचं प्रथमं कुरु ॥ १३ ॥

नन्दना कथिता देवी, तवाग्रं तत्प्रकाशितं ।
सा गता जायते देवी, नान्यथा गिरि नंदिनी ॥ १४ ॥
इदं कवचम् ज्ञात्वा, पद्मायां स्तौति यो नरः ।
कल्प कोटि शतेनापि, भवेत्सिद्धि प्रदायिनी ॥ १५ ॥

इतिश्री ऋद्धयामले पद्मावती कवचं सपूर्णम् ।



अथ पद्मावती स्तोत्रम्

श्रीमन्माणिक्य रश्मि, फणिगणमुकुटे पद्मपत्राय ताक्षि, ह्रां ह्रीं ह्रौंयारनादे, हहहहहसिते हन्महाट्टहासे । ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः बहत्स्वेबरवरवरणे धारणे वज्रहस्ते, पद्मे पद्मासनस्थे प्रहसितबदने देवि मां रक्ष पद्मे ॥ १ ॥ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षमळवरयुते पिंडबीजे त्रिनेत्रे, क्षां क्षीं क्षूं क्षि प्रक्षिप्रेतुरतुरगमने नाशिनी कागपाशे । क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षमितदशदिशा बन्धन वज्रहस्ते, रौद्रे त्रैलोक्यनाथ प्रहसितबदने देवि मां रक्ष पद्मे ॥ २ ॥ घ्रां घ्रीं घ्रौं घोररूपे घिणि घिणि घिणिते घन्ट हौंकारनादे, ळ्रीं ळ्रीं ळ्रीं ळ्रीं घुटीनां घुळघुळ घुळते गर्ज घजप्रमत्ते । य यं यं युग्मयन्ती दहदहपचये कर्म्मनिर्म्मूळयन्ती, दुष्टं दुष्टंप्रहारे कहकह वदने देवि मा रक्ष पद्मे ॥ ३ ॥ घ्रां घ्रीं घ्रौं पद्म हस्ते ग्रहकुळमथने शाकिनी सिंहनादे, हं ह हं वायुवेगे हहहसिते हन्महाट्टहासे, ळ्रींळ्रींळ्रींळ्रीं प्रचन्डे चलि चलि चळिने चाळिनी वज्रहस्ते, यं र ल वं कराले मनु मनु मनुते देवि मां रक्ष पद्मे ॥ ४ ॥ आं भ्रीं भ्रूँ मर्द मर्द ग्रहरण च पचे स्थंभिनी कामरूपे, छ्रां छ्रीं छ्रौं वज्रहस्ते मणि-

मुकुटमये ज्योतिदंष्ट्रां कराले । ब्ज्रां ब्लीं ब्लौं ब्रह्मसूत्रे जजजजजजजे कालिनी कालमुद्रे, चक्रे दिव्यावतारे कुरु कुरु वदने देवि मां रक्ष पद्मे ॥ ५ ॥

म्लं म्लां म्लौं दिव्यरूपे चुरु चुरु चरते चारुणी चारुनेत्रे, श्रीं ह्रीं क्लीं कारपिंडे ललललललने पद्मिनी लंबजिह्वे । पादं बाहुसहस्रे कलकलरहसे मात्रमाकाशगामी. क्रां क्रीं क्रौं नागरम्ये त्रिभुवनविजये देवि मां रक्ष पद्मे ॥ ६ ॥ ॐ म्ल्व्र्यूं भ्रां वज्रहस्ते गगगगगगमने कामिनीमन्तरीक्षे, पद्मे पद्मप्रवासे सुरगण नमते पद्मपत्रेक्षुनेत्रे । क्लीं ब्लीं ग्लीं ख्लीं रभश्लेव कुरु कुरु वदने सान्महाट्टहासे, पद्मे पद्मासनस्थे ललललसहिते पद्मपद्माभवर्णे ॥७॥ जूं भूं ह्रीं मोहनीये हिली हिली रमणे मर्द मर्द प्रमर्दे, दुष्टनीं जांधकारे दह दह दहने होललाटाय ताक्षि । ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः हरन्ती प्रहसित वदने नित्य नाना स्वरूपे, हंरूढे त्रिनेत्रे भगवति वरदे देवि मां रक्ष पद्मे ॥ ८ ॥

इति श्री पद्मावतीपटल स्तोत्रम् संपूर्ण ।

अथ पद्मावती दंडकस्तोत्रम्

ॐ नमो भगवते त्रिभुवन वशकरी सर्वाभरण भूषिते, पद्मासने पद्म नयने। पद्मगन्धिनी पद्मप्रभे। पद्मकोसनी पद्मवासिनी पद्महस्ते। श्रीं ह्रीं कुरु कुरु मम हृदय काय कुरु कुरु। मम सर्वशांति कुरु कुरु, मम सर्वराज वश्यं कुरु कुरु। सर्वलोक-वश्य कुरु कुरु, मम सर्वस्त्री वश्यं कुरु कुरु। मम सर्वभूतपिशाच-प्रेतरोषं हरहर सर्वरोगां छिन्द छिन्द, सर्वविघ्नान् भिन्द भिन्द, सर्वं विषं छिन्द छिन्द, सर्व कुरु मृगं छिन्द छिन्द। सर्वशाकिनी छिन्द छिन्द, श्री पार्श्वजिन पादांभोज भृङ्गि नमो दत्ताय देवी नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा। सर्वजनराय स्त्रीपुरुषवश्य सर्ववश्यमुर। ॐ आं क्रौं ह्रीं ऐं क्लीं ह्रीं देवी पद्मावती त्रिपुर-कामसाधनि दुर्जनमति विनाशिनीत्रैलोक्यक्षोभिनी श्रीपार्श्वनाथोप-सर्गहरणी क्लीं ब्लू मम दुष्टान् हन् हन् मम सर्वकार्याणि साधयर हुं फट् स्वाहा। ॐ आं क्रौं ह्रीं ऐं क्लीं घां पद्मदेवी। मम सर्व जगद्वश्य कुरुर सर्वविघ्नान् नाशयर। पुरक्षोभ कुरुर। ह्रीं सर्वषट् स्वाहा। ॐ आं क्रों श्रों हं ह्रीं क्लीं ब्लूं स। ह्म्ल्व्र्यूं पद्मावती सर्वपुरजनान् क्षोभयर मम पादयो पतयेर। आकर्षिणी ह्रीं नमः। ॐ ह्रीं आं अर्हं मम पापं फट् दहदह हनहन पच पच पाचय पाचय हुं भ्म भ्मीं क्ष्वीं हंस भ्म वं। भषर क्षयहः। क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्षीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रः ह्रिं ह्रिं द्रां द्रीं द्रावयद्रावये नमोर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः ममश्रीरस्तु पुष्टिरस्तु कल्याणमस्तु स्वाहा।

इति पद्मावतीदण्डकं संपूर्णम्

अथ स्तुतिः

ॐ ह्रीं श्रीपद्मावत्यै महाभैरव्यं नमः। भगवन् सर्वमाख्यातं, मन्त्र यन्त्र शुभप्रदं। पद्मयाः कवचं ब्रूहि, यद्यहं तव वल्लभा ॥१॥ महा गोप्यं महागुह्यं, पद्माशा सर्व कामदं। कवचं मोहनं देवी, गुरुभक्ताय दीयते ॥२॥ राज्य देयं च सर्वस्वं, कवच न प्रकाशनं। गुरुभक्ताय दातव्यं, नान्यथा सिद्धिदं न हि ॥ ३ ॥ अशक्ति ह्रीं बीजं, क्रौं कीलकं श्रीपद्मावती प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः, अनुष्टुप छन्देभ्यो नमः। श्रीशक्तिदेवताय नमः, क्रौं कीलकपादयोः क्षां बीजाय नमः। ह्रो गुह्ये श्रीपद्मावती सिद्धयर्थे जपे विनियोगः। ॐ पद्मराज्यं शिराः पातु, मुखं भुवनसुन्दरी। नेत्रे कामप्रदापातु, ललाटं पचमीपरा ॥ ४ ॥ नाशिकां नागनार्थ च, जिह्वां वागेश्वरी तथा। श्रुतिरूपां जगद्धात्रीं, करोमि हृदयाहिनीं ॥ ५ ॥

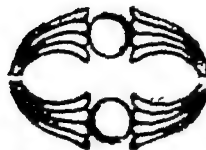
उदरं मोहदमनी, कुण्डली मोहदमनी।
पार्श्वपृष्ठश्वरं गुह्यं, शक्तिस्थाननिवासिनी ॥ ६ ॥
ऊरू जंघे तथा पादौ, सर्वविघ्नविनाशनी।
रक्ष रक्ष महामाये, पद्मे पद्मालये शिवा ॥ ७ ॥
वांछितं पूरयत्पासु, पद्मासा यासु सर्वदा।
इदं तु कवचं देव्या, यो जानाति स मन्त्रवित् ॥ ८ ॥

राज्यद्वारे श्मशाने च, भूतप्रेतोपचारके।
बन्धनश्च महादुःखे, भय शत्रुसमागमे ॥ ९ ॥
स्मरणात् कवचं सस्य, भयं किंचिन्न जायते।
प्रयोगमुपचारं च, पद्मायाः कर्तुमिच्छति ॥ १० ॥

देहे च यत्र कुत्रापि, सर्वसिद्धि र्भवेद् ध्रुवम् ।
शस्त्राग्नि जं भयं चैव, भूतादि भयनाशिनम् ॥ ११ ॥
कवचं प्रपदेद् बुद्धं तत् सिद्धिमवाप्नुयात् ।
भूर्यपत्रे लिखित्वा तुः कवचं यस्तु धारयेत् ॥ १२ ॥
गुरुभक्ति समासाद्य, पद्मायाः स्तवनं कुरु ।
सहस्रनामपठने, कवचं तत्प्रकाशितम् ॥ १३ ॥
नन्दना कथिता देवी, तवाग्रे तत्प्रकाशितम् ।
सा गता जायते देवी, नान्यथा गिरिनन्दिनी ॥ १४ ॥
इदं कवचं ज्ञात्वा, पद्मायाः स्तौति यो नरः ।
कल्पकोटि शतेनापि, न भवेत्सिद्धिदायिनी ॥ १५ ॥

इतिश्री पद्मावतीकवचम् सम्पूर्णम् ।

श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु ।



अथ यन्त्रमन्त्रगाभत

पद्मावती स्तोत्रम्

स्रग्धरावृत्तानि

श्रीमद्गीर्वाणचक्र, स्फुटमुकुटतटो, दिव्य माणिक्यमाला ।
ज्योतिर्ज्वाला कराल, स्फुरित मुकुरिका, घृष्टपादारविन्दे ?॥
व्याघ्रोरूल्कासहस्र, ज्वलदनलशिखा, लोलपाशांकुशाढ्ये ।
ऑं क्रौं ह्रीं मन्त्ररूपे ? क्षपितकलिमले ? रक्ष मां देवि ? पद्मे? ॥१

भित्वा पातालमूलं, चलचलचलितं, व्याललीलाकराले ? ।
विद्युद्दण्डप्रचण्ड, प्रहरणसहितैः, सद्भुजैस्तर्जयन्ती ॥
दैत्येन्द्रं क्ररदंष्ट्रैः कटकटकटिते, ? स्पष्ट भीमाट्टहास्ये ?
मायाजीमूतमाला, कुहरित गगने ? रक्ष मां देवि ? पद्मे ॥२॥

कूजत्कोदण्डकाण्डो, ड्डमरविधुरितं, क्रूरघोरोपसर्गं ।
दिव्यं वज्रातपत्रं, प्रगुणमणिरण त्किंकिणि क्वाणरम्यम् ॥
भास्वद्वैडूर्यदण्डं, मदनविजयिनो विभ्रती पार्श्वभर्तुः ।
सा देवी पद्महस्ता, विघटयतु महा; डामरं मामकीनम् ॥ ३ ॥

भृङ्गी काली कराली, परिजनसहिते ? चडि ? चामुंडि? नित्ये ? ।
क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षणार्धे क्षतरिपुनिवहे ?, ह्रीं महामंत्रवश्ये ? ॥
भ्रां भ्रीं भ्रूँ भृङ्गसङ्गे ? भ्रुकुटिपुटतटे ? त्रासितोद्दामदैत्ये ? ।
झ्रों झ्रीं झ्रूं झ्रः प्रचण्डे ? स्तुतिशतमुखरे ? रक्ष मां देवी ? पद्मे ॥४

चञ्चत्काञ्चीकलापे ? स्तनतटविलुठ, त्तारहारावलीकू ?
प्रोत्फुल्लत्पारिजातद्रुमकुसुममहामञ्जरीपूज्यपादे ? ॥

द्रां द्रीं क्लीं ब्लू समेते ? भुवनवशङ्करी, क्षोभिणी द्राविणीत्वम् ।
आँ ऐं ॐ पद्महस्ते ?, कुरुकुरु घटने ? रक्ष मां देवी ? पद्मे ॥५॥

लीलाव्यालोलनीलो त्पलदलनयने, ? प्रबलद्वाडवाग्नि ?
उद्यज्ज्वालास्फुलिङ्ग, स्फुरदरुणकरो, द्रुतवज्र प्रहस्ते ॥
ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः हरन्ती, हर हर हर हुंकारभीमैकनदे ।
पद्मे पद्मासनस्थे, व्यपनयदुरित, रक्ष मां देवी ? पद्मे ॥ ६ ॥

कोप वं झ सहसं, कुवलकलितोदुदामलीला प्रबन्धे !
ज्रां ज्रीं ज्रूं ज्रः पवित्रे ! शशिकर धवले ! प्रक्षरत्क्षीरगौरे ! ॥
व्याल व्याबद्धजूट प्रबलबलमहा कालकूटं हरन्ती ।
हा हा हुंकारनादे, ? कृतकरकमले, ? रक्ष मां देवि ! पद्मे ॥७॥

प्रातर्बालार्करश्मि, स्फुरित घन महा सान्द्र सिंदूर धूली ।
संध्या रागा रुणाङ्गी, त्रिदिश वरवधू, वन्धपादारविन्दे ?
चंचच्चण्डासि धारा, प्रहत रिपु कुले, कुण्डलोघृष्ट पडे ?
श्रां श्रीं श्रूं श्रः स्मरन्ती, मदगजगमने, ! रक्ष मां देवि! पद्मे ॥८॥

शार्दूलविक्रीडितम्

गर्ज्जन्नीरदगर्भ निर्गततडिज्ज्वालासहस्र स्वस्फुरत् ।
सद्वज्रांकु शपाशपंकजकरा, भक्त्यामरै रर्चिता ॥
सद्यपुष्पित पारिजातरुचिर, दिव्य वपु बिभ्रती ।
सा मां पातु सदा प्रसन्नवदना, पद्मावती देवता ॥ ९ ॥

स्रग्धराणि वृत्तानि

विस्तीर्णे पद्मपीठे, कमलदलनिभा, सोचते काम गुप्ते ।
लां लां श्रीं समेते ? प्रहसित वदने ?- नित्य हस्त प्रहस्ते ॥-

रक्ते ? रक्तोत्पलांगी, प्रति वहसि सदा, वाग्भ वांकामबीजं ।
हंसारुढ़े ? सुनेत्रे,? भगवति ? वरदे,? रक्ष मां देवि ? पद्मे ॥१०॥

षट्कोणे चक्रमध्ये ? प्रणववरयुते,? वाग्भवे ? कामराजे ? ।
हंसारुढ़े ? सबिन्दुं विकसितकमल, कर्णिकाये निधाय ॥
नित्य क्लिश मदार्द्रं; द्रवय सिसततं, साकुशे ? पाशहस्ते ? ।
ध्यानाद संक्षोभयन्ती, त्रिभुवन वशकृत, रक्ष मां देवि ? पद्मे ॥११॥

जिह्वाग्रे नासिकान्ते, हृदिमनसि दृशोः कर्णयोर्नाभि पद्मे ।
स्कन्धे कण्ठे ललाटे, शिरसि च भुजयोः, पृष्ठ पार्श्वप्रदेशे ॥
सर्वाङ्गोपाङ्ग शुद्ध्या, ष्यतिशय भुवनं, दिव्य रूपं स्वरूपम् ।
ध्यायाम सर्वकाल, प्रणवचलयुतं, पार्श्वनाथेति शब्दम् ॥१२॥

ओं क्रों ह्रीं पंचवर्णैः, लिखितषट्दलै, चक्रमध्ये ह्स्लौं क्लीं ।
क्रों ह्रीं पत्रान्तराले, स्वरपरिकलिते, वायुना वेष्टिताङ्गी ॥

ह्रीं वेष्ट्यारक्त पुष्पै, जंयतिमति महा, क्षोभिणी द्राविणी त्वम् ।
त्रैलोक्यं चालयन्ती, सपदि जनहिते, ? रक्ष मां देवि ? पद्मे ? ॥१३॥

ब्रह्माणी कालरात्रि, भगवति वरदे,? चण्डि ? चामुण्डि ? नित्ये ? ।
मातगंन्धारि ? गौरि धृतिमति विजये ? कीर्ति ह्रीं स्तुत्यपद्मे ? ॥

संग्रामे शत्रुमध्ये, जयज्वलनजलैः वेष्टितान्यैः स्वरास्त्रैः ।
क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षणार्धे ?, क्षतरिपुनिवहे ? रक्ष मां देवि पद्मे ?॥१४॥

शार्दूलविक्रीडित वृत्तम् ।

भूविश्वेक्षणचन्द्र विम्व पृथिवी, युग्मेक संख्याक्रमात् ।
चन्द्राम्भोनिधिव णविश्वमुनिदिक्, संवेचरेशादिशु ॥
ऐश्वर्यं रिपुमारि विश्व भयकृत्, क्षोभान्तराया विषा ।
लक्ष्मी लक्षण भारती गुरु मुखा, न्मन्त्रार्चिते ? देवते ? ॥१५॥



स्रग्धरे वृत्ते

खड्गं कोदण्ड काण्डं, मुसलहलयुतं, वाण नाराच चक्रै।
शक्त्या शल्यत्रि शूलै, वंरफणशकरैः मुद्गरैर्मुष्टिदण्डैः॥
पाशैः पाषाणवृक्षैः, वरगिरिसहितैः, दिव्यशस्त्रैरमानैः।
दुष्टानां दारयन्ती, वरभुजललिते, ? रक्ष मां देवि ? पद्मे ? ॥१६॥

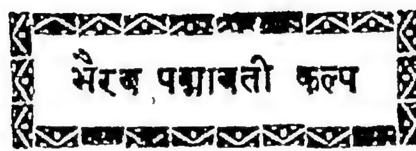
यस्याः देवैर्नरेन्द्रै, रसुरपतिगणैः, किन्नरैर्दानवेन्द्रैः।
सिद्धैर्नागेन्द्रयक्षै, र्नरमुकुटतटो, घृष्टपादारविन्दे ?॥
सौम्ये ? सौभाग्यलक्ष्मी, दलितकलिमले, ? पद्मकल्याणमाले।
अम्बे काले समाधिं, प्रकटय परम, रक्ष मां देवि ? पद्मे? ॥१७

शार्दूलविक्रीड़ितानि

धूपैश्चन्दनतन्दुलैः शुभमहा, गन्धैश्च मन्त्रान्वितै.।
नानावर्णयुतैः विचित्रकुसुमैः दिव्यैर्मनोहारिभिः॥
नैवेद्यैः मणिदीपकैः शुभफलैः, भक्त्यान्वितैः पूजिते ?।
अर्थ्यं त्व भवति प्रहाण सतत, पद्मे ? सदा पाहि माम्॥१८॥

तारात्वं सुगतागमे, भगवती गौरीतिशैवागमे।
वज्रा कौलिकशासने जिनमते, पद्मावती विश्रुता॥
गायत्री श्रुति शालिनी प्रकृति रित्युक्तासि सांख्यागमे।
मातर्मारति ? किं प्रभूत भणितै, र्व्याप्त समस्त त्वया॥१९॥

सं जप्त्वा करवीर रक्त कुसुमैः पुष्पैश्चिर संचितैः।
संमिश्रैः घृत गुग्गुलौघमधुभिः कुण्डे त्रिकोणे कृते॥
होमार्थं कृत षोडशांगुलमित वह्नौ दशांशं जपेत्।
तं वाच दसीहदेवि ? सहसा, पद्मावती देवता॥२०॥



स्रग्धरावृत्ति

ह्रींकारे चन्द्रमध्ये पुनरपि वलये, षोडशावर्त पूर्णे ।
बाह्ये कण्ठेघ रवेष्ट्या, कमलदल युतं मूलमन्त्रप्रयुक्तम् ॥
साक्षात् त्रैलोक्यवश्यं, पुरुषवशकृत, मन्त्र राजिन्द्रराजम् ।
एतत्तत्वस्वरूपं, परम पदमिदं पातु मां पार्श्वनाथः ॥२१॥

भक्तानां देहि सिद्धिं, मम सकलमल, देव दूरी कुरुत्वम् ।
सर्वेषां धार्मिकाणां, सततनियमितं, वाञ्छितं पूरयस्व ॥
संसाराब्धौनिमग्नां प्रगुणगुणयुतां जीवराशिञ्च पाहि ।
श्रीमज्जैनेन्द्रधर्मं प्रकटय विमलं, देवि ? पद्मावती ? त्वम् ॥२२॥

शार्दूलविक्रीडितानि

पाताले वसतां विषं विषधरां श्चूर्णन्ति ब्रह्माण्डजा ।
स्वर्भूमिपति देवदानवगणाः, सूर्योदये सद्गणाः ॥
कल्पेन्द्रास्तव पादपङ्कजनुता, मुक्तामणिश्चुम्बिता ।
सा त्रैलोक्यनतानना त्रिभुवने, त्वमपादभूता सदा ॥ २३ ॥

क्षुद्रोपद्रव रोगशोकहरिणी, दारिद्र्य विद्राविणी ।
व्यालव्याघ्रहरा फणात्रयधरा, देह प्रभा भासुरा ॥
पातालाधिपतिप्रिया प्रणयिनी, चिन्तामणिः प्राणिनाम् ।
श्रीमत्पार्श्वजिनेशशासनसुरी, पद्मावती देवता ॥ २४ ॥

मातः पद्मनि पद्मरागरुचिरे, ? पद्मप्रसुनानने ? ।
पद्मे ? पद्मवनस्थिते ? परिलसत् पद्माक्षि पद्मानने ? ॥

पद्मामोदिनि ? पद्मरागरुचिरे ? पद्म प्रसूतानने ? ।
पद्मोल्लासिनी ? पद्मनाभिवलये ? पद्मावती पाहि माम् ।।२५।।

स्रग्धरावृत्तम्

दिव्य स्तोत्र पवित्रं, पटुतरपठतां भक्तिपूर्वं त्रिसन्ध्यम् ।
लक्ष्मी सौभाग्यरूपं, दलितकलिमलं, मगल मंगलानाम् ।।
पूज्या कल्याणमाला, जनयति सततं, पार्श्वनाथप्रसादात् ।
देवी पद्मावती नः, प्रहसितवदना, यास्तुता दानवेन्द्रैः ।।२६।।

शार्दूलविक्रीडित वृत्तम्

या देवी त्रिपुरा पुरत्रयगता शीघ्रा च शीघ्रप्रदा ।
या देवी समया समस्तभुवने, या गीयते कामदा ।।
तारा मानविमर्दिनी भगवती, देवी च पद्मावती ।
सा स्यात्सर्वगता त्वमेव नियतं, मातेति तुभ्यं नमः ।।२७।।

इन्द्रवज्रावृत्तम्

पद्मानना पद्मदलायताक्षी पद्मानिनी पद्मकरांघ्रि पद्मा ।
पद्मप्रभा पार्श्व जिनेंद्रशक्तिः पद्मावती पातु फणीन्द्र पत्नि ।।२८।।

श्लोकाः

आद्य चोपद्रवं हन्ति द्वितीयं भूतनाशनम् ।
तृतीयं च मरीं हन्ति चतुर्थं रिपुनाशनम् ।। २९ ।।
पञ्चमन्तु जनानां च वशीकारं भवेत्सदा ।
षष्ठ चोच्चाटनं हन्ति सप्तमं घोरसंकटम् ।। ३० ।।

हन्त्युद्वेग चाष्टम च नवमं सर्वकार्यकृत् ।
इष्टा भवति तेषां च त्रिकालञ्च पठन्ति ये ॥ ३१ ॥

आह्वाननं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजामर्चा न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि ॥ ३२ ॥

आर्या

पठित भणितं गुणत जय विजय रमानिबन्धनं परमम् ।
सर्वाधिव्याधि हरं जगति पद्मावती स्तोत्रम् ॥ ३३ ॥

श्लोकौ

अपराध सहस्राणि क्रियते नित्यशो मया ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि ? प्रसीद परमेश्वरी ॥ ३४ ॥
आज्ञाहीनं क्रियाहीनं मन्त्रहीनं (तथैव च) च त्यक्तम् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि ? प्रसीद परमेश्वरी ॥ ३५ ॥

इति श्री पद्मावती स्तोत्रम् समाप्तम् ।



अथ पद्मावती छन्द

स्तुत्वा पार्श्वजिनेश्वरं निरुपम सद्वांछितार्थ पदम् ।
भक्त्यानुगुण वारिधे प्रविपुलं ज्ञान प्रकाशात्मकम् ॥
नागेंद्रैः समुपासिते सुरनुतं पद्मावति सत्स्तुतम् ।
छंदः श्री धरणेंद्र यक्षयुवतै कुर्वे प्रमोदास्पदम् ॥

दोहा

इन्द्र वड़ो जिम अमरमें, सरियामां वदकेश ।
देव सहुमें तुम वड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥ १ ॥

जलनिधिमें जिम क्षीरनिधि, देशमें कोशलदेश ।
देव सहुमें तुम बड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥ २ ॥

साकेता निज नयरीमें, लेश्यामें शुभ लेश ।
देव सहुमें तुम बड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥ ३ ॥

कामकुंवर बाहुबली, पांडव पार्श्व नरेश ।
देव सहुमें तुम बड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥ ४ ॥

नारीमां सीता बड़ी, नागभुवन धरणेश ।
देव सहुमें तुम बड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥ ५ ॥

कमल बडो जिम फूलमें, सरवर मानस देश ।
देव सहुमें तुम बड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥ ६ ॥

गुरुमां जिम निर्ग्रन्थ गुरु, परमागम परमेश ।
देव सहुमें तुम बड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥ ७ ॥

शस्त्रजाल घाते बड़ो, छोकमां सुगति निवेश।
देव सहुमें तुम बड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥ ८ ॥
रूप बड़ो जिम देवनो, रत्नपति भरतेश।
देव सहुमें तुम बड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥ ९ ॥
गरुड बड़ो जिम पक्षीमां, त्रिखण्डपति रुषिकेश।
देव सहुमें तुम बड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥१०॥
राजहँस हँसा बड़ो, नक्षत्र बड़ो सु निशेश।
देव सहुमें तुम बड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥११॥

धात जात कंचन बड़ो, खण्डमां पुण्य प्रदेश।
देव सहुमें तुम बड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥१२॥
श्री श्रेयांस दाने बड़ो, सत्ये पांडु नरेश।
देव सहुमें तुम बड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥१३॥
श्रोतामां श्रेणिक बड़ो, सुदर्शन शील व्रतेश।
देव सहुमें तुम बड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥१४॥
कविगणमां गणधर बड़ो, बुद्धये अभयनरेश।
देव सहुमें तुम बड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥१५॥

गणपति बड़ो जिम कुन्दमुनि, दिवस बड़ो दिवसेश।
देव सहुमें तुम बड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥१६॥
भद्रजात्य गयमांहि बड़ो तुरंगाह्य रयणेश।
देव सहुमें तुम बड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥१७॥
वृक्ष जात्यमां कल्पतरु, चउपद जात्य मृगेश।
देव सहुमें तुम बड़ो, सुखकर पार्श्व जिनेश ॥१८॥
देव सहुमें परखिया, तुम सम बड़े नहीं कोय।
वीतराग वन्दूं सदा, शास्त्र सहसह जोय ॥१९॥

दुःख दारिद्र भजनो, वांछित फल दातार।
तू मुझ हृदयकमळ बसो, जिम मुक्ताफळ हार ॥२०॥

देव नाम सहुको धरे, तू देवाधि देव।
हुँ सेवक तुज दास सम, भव भव करूं तुज सेव ॥२१॥

वन्दूं भगवती भारती, प्रणमूं सद्गुरु पाय।
पद्मावती गुण वर्णवुं, जिम सुख सम्पति थाय ॥२२॥

पद्मावती गुण बोलतां सुरगुरु नव लहि पार।
तो अम सरिखा तुच्छमति, किम गुण कहे अवधार ॥२३॥

कलियुग महिमा तुज घणो, व्यापो भुवन मझार।
तुज नामे सुख सम्पजे, दर्शन जयजयकार ॥२४॥

क्षेमकीर्ति पटोधरो नरेन्द्रकीर्ति सुखकार।
विजयकीर्ति चरणे नमि, कहे नारायण ब्रह्मचार ॥२५॥

अथ छन्द

प्रभु पार्श्वनाथ प्रधान, धर्यो ध्यान विविध वितान।
तिहां कमठ अति अभिमान, जाग्यो पूरव वैर समान ॥१॥

अति कद्दान घणा गाजंत, झझाति वायु वजंत।
जलवृष्टि मूशलधार, विजली तणा झंकार ॥ २ ॥

अति विकट उपसर्ग कीध, थयो धरणेन्द्र यक्ष प्रसिद्ध।
भूमितल थकी ततक्षेव, आव्यो धरणेन्द्र यक्ष सहदेव ॥३॥

पद्मावती निज नार, बहुफणे करीं फुतकार।
सुर कमठ पाम्यो हार, नमि नेमी कहे तुं मुझने तार ॥ ४ ॥

निज फेण धर्यो निज शीश, उपसर्ग हर्यो जगदीश।
आव्या इन्द्र इन्द्राणी देव, नमि पाय करे तुज सेव ॥ ५ ॥

व्याप्यो त्रिभुवन मांही महिमाय, तुज नामे पातिक जाय ।
दुःख विविध दूर पलाय, पद्मावती सु पसाय ॥ ६ ॥

दोहा

पद्मावती सु पसायथी, दुःख दावानल जाय ।
कोट्यादिक आपद टले, दालिद्र दूर पलाय ॥ १ ॥

पद्मावती सु पसायथी, विकट वाघ होय दूर ।
दावानल संकट समे, क्षण सम होय नदी पूर ॥ २ ॥

पद्मावती सु पसायथी, विरह विहंगम जाय ।
विषधर सरीखा न पिडले, जो पगे चंपाय ॥ ३ ॥

पद्मावती सु पसायथी, मिटे जलन्दर रोग ।
जे नर नारी नित जपे, ते घर सुखकर भोग ॥ ४ ॥

पुत्र कलत्रादिक लहे, धन धान्यादिक काम ।
हय वर गय वर पालखी, जो जपें तुज नाम ॥ ५ ॥

छन्द

जे जपे तुझ नाम पवित्रं, ते घर मंगल चार पवित्रं ।
जे जपे तुझ नाम उदारं, विकट वाघ वेरी व निवारं ॥ १ ॥

जे जपे तुझ नाम निधानं, ते घर नित नित मंगल गानं ।
जे जपे तुझ नाम निधानं, तेह घर कोमल विमल वितानं ॥२॥

जे जपे तुझ नाम मनोहर, तेह घर सेव करे सुर सुन्दर ।
जे जपे तुझ नाम मनोहर, तेह घर कमला कामिनी किंकर ॥३॥

तुझ नामे भुजंगम न्हासे, डाकिनी शाकिनी न आवे पासे ।
तुझ नामे दावानल शीतल, तुझ नामे जल पूरण महियल ॥ ४ ॥

तुझ नामे ग्रह पीड़ा नस जावे, भूत पिशाच तणो दुख जावे।
तुझ नामे बेड़ी बन्धन तूटे, तुझ नामे तृशळ पण छूटे ॥ ५ ॥

तुझ नामे शत्रु संहारं, तुझ नामे भळ पारावारं।
तुझ नामे परका भय न्हासे, न्हासे सात इत तक त्रासे ॥ ६ ॥

तुझ नामे ज्वर न्हासे दूरं, तुझ नामे कमळा भरपूरं।
जे जपे तुझ नाम उदारं, तेह घर नित नित जयजयकारं ॥ ७ ॥

कोटि विघन खेदकना टाले, श्री जिनवर शासन अजवाले।
मिथ्या मतने दूरे टाले, भवियण जनने निश्चे पाले ॥ ८ ॥

दोहा

प्रगट रूप पद्मावती, सूरत नयर निवास।
वासपूज्य जिन मन्दिरे, सज्जन पूरण आस ॥ १ ॥

भगवती भारती शारदा, जगदम्बा तुझ नाम।
पद्मावती परमेश्वरी, कोटि सूर्य सम धाम ॥ २ ॥

समरे संकट मजनि, स्तवने पातिक दूर।
नमता वांछित कारिणी, पूजंतां सुख पूर ॥ ३ ॥

तुं माता तुं तात जन, तुं बन्धु तुं भ्रांत।
तुं भगनि उपकारिणा, वांछित पूरण भ्रांत ॥ ४ ॥

छन्द

जे पूर्ण चन्द्र सम आनन सोहे, अर्ध चन्द्र सम भाळ जे।
केशपाश जिम भोगी भ्रमर, सिन्दूर लाल गुलाल ॥ १ ॥

जे तिलक पियळ चन्द्रिकादिक, चूर्ण कुन्तळ जाम।
ज्वें मुकुटमण्डळ रयण उजवल, कुण्डळ झाकझमाळ ॥ २ ॥

जे पारिजातन मेरु सुन्दर, चम्पक ने बहु माल।
जाई जुई मचकुन्द कोमळ, सोगरा सुकुमाल ॥ ३ ॥
जे कमळ कोमळ माथ बिबलि, तिलक मालती माळ।
जे पाडळ खेवन्तो सुरंगी, सुगन्धी गुलाल ॥ ४ ॥
जे नाके मोती जळहळ जोति, सूर्य चन्द्र दोय गाल।
जे दन्त दाढिम बिज सोहे, अधर लाल प्रवाल ॥ ५ ॥
जे नाशिका शुक बदन सरखी, भ्रगुटी धनुश बिशाल।
जे कर्णफूल मोती मनोहर, रयण जडित दोय जाळ ॥ ६ ॥
जे कंचु कंठि बचने मीठो, कोटे नवसर हार।
जे बाजुबंध केयुर कंकण, मुद्रिका स्वीकार ॥ ७ ॥
जे नाभिकुंप गम्भीर शोभित, लावण्य नोर अपार।
जे मेखला पलकन्ति कटितट घुंघरीये घमकार ॥ ८ ॥
जे कठिण कुच जिम कमल कोदमल, कुंकुम ढोळित चंग।
जे ळळित त्रेबळि लंक राजित, पेट पोयणा रंग ॥ ९ ॥
जे केश श्रेणि दीसे झीणी, निल रयण सु चंग।
जे जंघनतट अति कठिन सजित, नितम्ब मंडळ अभंग ॥१०॥
जे साथळ जाणे रम्भा थम्भा, जंघा बज्र समान।
जे पानि रंगि दीसे चंगी, लाल सुरंगी बान ॥११॥
जे पाय घुघरी दीसे सुन्दर, झांझरनी झमकार।
जेने उरे ठमके बिछु छमके, गोफणि घमकार ॥१२॥
जे देवांग वस्त्र उदार देहे, मलय चन्दन धार।
जे नख नक्षत्र समान दीसे, मुक्ति पातिक हार ॥१३॥
जे नित्य नया श्रृङ्गार पहरे, धरणे यक्षनी नार।
जे सेवक जननी आस्या पुरे, वांछित फल दातार ॥१४॥

दोहा

धरण यक्षनी नागी भली, पद्मानी सु विशाल ।
जगमें महिमा जेहनो, परतो पूरण मात ॥ १ ॥
लक्ष विमाने स्वामिनी, देव देवी करे सेव ।
पद्मावती पद्मानना, तुं देवी सत्यमेव ॥ २ ॥
सेवक सेव करे घणी, नाचे नवसर रंग ।
ताल कंसाल वेणा बहु, वाजे चंग मृदंग ॥ ४ ॥

छन्द

जब सेवक सेव करे शिखरि, करताल कंसाल वेणा उधरी ।
वाजे चग मृदग विणा घुघरी, वली झांझरनो झणकार करी ॥१॥
वलि तबलन फेरी हाथ धरी, वली बांसलीना बहु नाद करी ।
वलि नाटक नाचत मान धरी, तताथेई तानन तान करी ॥२॥
वलि संगीत गानत मान धरी, वलि कोकिल कंठ बोले किन्नरी ।
वलि फरकत फूदडी लेय करि, वलि भाव देखावत हाथ करी ॥३॥
वलि घमघम बाजत हे घुघरी, वलि विछुतणा झमकार करी ।
वलि छमक छमक पगमें नेउरी, जाणे स्वर्गथकी उतरी अमरी ॥४
वलि गोफणीमें घमके घुघरी, कटि लक लहे कटि दे भमरी ।
वलि खलकत मेखलामें घुघरी, वलि बाजत कणणण चुडी खडी ॥५
पहेरी सोले श्रृङ्गार ढाले चमरी, वलि सुवर्ण छत्र धरे उपरी ।
वलि तेल फुलेल तणी उमरि, वलि रणझणकार करे भमरी ॥६॥
दिलमें पद्मावती नाम धरी, करे सेवक सेव सुदास खरी ।
आपे वांछित पद्मावती अमरी, सहु भविजन वांछित सौख्य करी ॥

दोहा

सदा चतुर्भुज धारिणी, वांछित दान दातार।
पार्श्वनाथ भूषित सदा, मस्तक भुवन आधार॥ १॥
वज्र अंकुश धारिणी, पंकज ने वळी पास।
डाकिनी शाकिनी भूत घणा, कमठ सरीखा दास॥ २॥
त्रिशुल डमरु करे धरे, खड्ग शक्तिनो धार।
सेवकजन विघन हरण, धरण यक्षनी नार॥ ३॥
एह विधे जेह महिमा घणो, त्रण भुवन भण्डार।
जे नरनारी नित भजे, तेहने सौख्य अपार॥ ४॥

छन्द

जे जेह नामे नवविधि, चौदह रतन सिद्ध सकल कला प्रसिद्ध विविध वरा, जे जेह नामे पामे नारी, कमल वदन सारी, सकल कळा भण्डारी रूप वरा, जे जेह नामे पुत्र सार, बन्धुजन परिवार, भगनि भाणेज सार, विनय परा, एहविध पूजोरे निपुण प्राणी, धरणेन्द्र तणी इन्द्राणि, पद्मावती सुखखाणी विघ्नहरा॥ १॥

जे जेह नामे धज घटा, भन तरु बल भटा, पामिये तुरंग छटा, वास गृहा, जे जेह नामे सुखासन, पालखि रतन धन, चामिकर सिंहासन, छत्र महा, जे जेह नामे विद्या सारी, राजकुल अधिकारी, पामिये पद्मनी नारी विविध वरा, एहवि० ॥ २॥

जे जेह नामे बरु जिणा पटह मृदङ्ग वीणा, गेभर मोदक पीणा सेव बरा, जे जेह नामे दूध घणा, साकरनि नहीं मणा, पामिये साकरीया चणा, सवाद करा, जे जेह नामे घृत धारी, साक तणी नहीं पारी, लवेंग जावंत्री सारी, एलची भरा, एहवि० ॥ ३ ॥

जे जेह नामे सुखावास, नागरवेल बरास, अबील गुलाल बास, पामिये खरा। जे जेह नामे बाघन न्हासे, विषधर नावे पासे, वेरीजन होई दास, भगति करा। जे जेह नामे मोतीहार, लक्ष्मीतणो भण्डार, घडीत जडित सार कनक भरा, एहवि० ॥४॥

जे जेह नामे सुखवास, लक्ष्मी होई घर दास, विज्ञान कला निवास, हाई बरा। जे जेह नामे लाभ घणा, व्यापार वाणिज तणा, गृह पामे सांतपणा, भाजन भरा। जे जेह नामे कलश सार, कनक तणा भृङ्गार, बालका बाली अपार, घरमघरा, एहवि० ॥ ५ ॥

दोहा

ए आदि सुख संपजे, रोग रहित निज देह ।
लिखित पठित चित्रित कला, गम्भीर गुणगण गेह ॥ १ ॥
जे नर नारी भावसु, राखे सुजसु नेह ।
निरमल मन सेवा करे, वांछित पामे तेह ॥ २ ॥
संवत सत्तर चोरासुमें, मगसिर मास प्रसिद्ध ।
सुद तेरस गुरुवारे, छन्दो रचना कीध ॥ ३ ॥
"सुरत" नयर सोहामणो, जिहां कीधी चोमास ।
केसुरदास आग्रह भणी, रचियो छन्द विलास ॥ ४ ॥

भणे भणावे सांभले, तेहने पुण्य अपार ।
विजयकीर्ति चरणे नमि, कहे 'नारायण' ब्रह्मचार ॥ ५ ॥

कलश

शरीर बिभूषण शास्त्र, दातृ बिभूषण दान ।
शास्त्र विभूषण प्रश्न, सुगुरु बिभूषण मोहन ॥
सुकृत बिभूषण विनय, नियम बिभूषण ध्यान ।
दिवस बिभूषण सूर्य, कंठ बिभूषण ज्ञान ॥
रयण बिभूषण चन्द्र, जिम युबती माहे सती ।
"नारायण" ब्रह्मचार कहे, तिम जिनशासन पद्मावती ।

इति पद्मावती छन्द संपूर्ण ।



अथ पद्मावती अष्टक (पूजा)

ॐ ह्रीं शक्तिरूपे भगवती वरदे देवी आगच्छ पीठे।
पद्माभा पद्मनेत्रे सपरिजन जुतो, राही राही सक्ते॥
धूपं गन्धाष्टद्रव्यं, परम फलकरं, भोग वस्तार नेकं।
भक्तानां देही सिद्धि, मम सकल भयहरं देवी दूराकरुत्व॥

ॐ ह्रीं देवी पद्मावती अत्रावत्रावतर संवौषट् आह्वाननंः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भवभव सन्निधिकरण स्थापनं।

अमल पद्म गहे समुद्भव वाजक कुम्भ सु धारया।
रेवु पावृ बदात शीतल कमल वाशीत वारया॥
नरवरो सुत खेच स्तुत विघ्न कोटि बिनाशिकं।
पूजये पद्मावती परराध सोध निवासनी॥ जलम्॥ १॥
हेम कुंकुम मिष्टोतै मलयाक्ष मूधर सम्भवै।
परम ताप निवार चंदन गंध गंधित दिग्मुखै॥ नरवरो०॥
चन्दनम्॥ २॥

कुन्दहार तुसार सदश गगन तारक सन्नीभै।
सेन्धुफेण समान मुजज्वल खांड वर्जित तंदुलै॥ नरवरो०॥
अक्षतम्॥ ३॥

पद्म जाति मनोज्ञ चंपक, मालती मय कुन्दकै।
कनक केतक पारिजातक, गध लुब्ध सलील मुखै॥नरवरो०॥
पुष्पम्॥ ४॥

पाप सान घरोद नाशन खज मण्डक घेवरै।
सुप वुप मनोज्ञ मोहिज, व्यजनाद्य रसाढकै॥ नरवरो०॥
नैवेद्यम्॥ ५॥

जीमीर पटल विकार बर्जित, कोटि भानु प्रकाशनै।
घृत मणीमय कनक भाजन, प्रबल जोती स दीपकै॥ नरवरो०
दीपम्॥ ६॥

काक तुण्ढ गाटाई संभव, नीबीड जलन्धर सन्नीमै।
यक्ष धूप व दो०य काष्ट मनोज्ञ ध्यान प्रमोददै॥ नरवरो०॥
धूपम्॥ ७॥

आम्र काम्र जम्बीर फनस, पुंगी चार्मट नींबूकै।
गोस्तनैक कपाक दाडम पक्क, मोष्ट फलोदकै॥ नरवरो०॥
फलम्॥ ८॥

अम्बु चन्दन अक्षताब्ज चरु करै दीपकै।
धूप पक्क फलार्घं संचय नेक भूषण संयुतै॥
लक्ष्मीसेन सुरेन्द्र संस्तुति निविड कल तिमिरापहम्।
पाद पंकज वृन्द गोबांड भणीत मस्तक मोददम्॥
अर्घम्॥ ९॥

जाप्य १०८ देवे

ॐ आँ क्रौं ह्रीं ऐं यं क्लीं ह सु पद्मावतीभ्यो स्वाहा।





अथ जयमाला

श्रीमत् पद्मावती वन्दे, नत्वा खेचर नरवर चरणम् ।
जिन शासन उधणे, श्री जिन पार्श्वे विम्ब सार धरणे ॥ १ ॥
संस्तवये पद्मावती चरणं, सेवक नर वत्र सरणं सरणं ।
दुःख दानावल दूरी निर दलन, संतत जन सुख सपति करणं ॥२॥
संकट विकट कोटि सम नासं, तुज नामे सुख सम्पति वासं ।
ग्रहे एक न नडे तुज नामे, वीखम व्याधि दुःख दूरे वामे ॥३॥
जलनिधि थल होय तुज नामे, चेरी वाध सब अव दूरे धामे ।
हय रथ मंगल चतु मदमत्ता, तुझ नामे नवनिधि सम्पत्ता ॥४॥
कुष्ट रोग खांसादिक नासे, साकिनी सर्प न आवे पासे ।
जे जगमां जगदम्वा देवी, आदक तुज चरणांबुज सेवी ॥५॥
त्रिभुवनमें तुज नाम विख्याता, नहीं को जननी तुम सम जाता ।
तुज गुण तणा न लाभे पार जे पद्मावती नाम बीचारण ॥६॥
सुर गुरु गुण तुज पार न जाणे, मनुष्य मात्र तेक सुख वखाणे ।
पाप फले दुःख दालिद्र आवे, ते तुज दृंशन दूर पलावे ॥
अल्प बुद्धि हुं कांई न जाणे ॥ ७ ॥
कवन गति तुज नाम वखाणुं, तु जिन शासन जन जे कारी ।
दुःख दावानल दुष्कृत हारी, मस्तक मुरत श्री जिन पासं ॥
सतन जन मन पूरण आसं, भाग फले तुज दर्शन पामी ।
कहे गोवींद नमूं शीर नामी ॥

घत्ता

इह वर जयमाल भावीसालं, जे पठती नित नीलयं ।
असुरपणासे सुरनर भासे, मनवांछित फल पूर्णह ॥ अर्घ ॥

× × ×

आरोग्यं धन धान्य सम्पती करी दालिद्रनी नाशिनी।
मोली पार्श्व जिनेन्द्र बिंब धरणी श्री वाछातकी भासिनी॥
संक्लीष्टा समता पनासनकरी, मंगल्य पादायिनी।
श्री धरणेन्द्र सची पराक्रम युती, पद्मावती भारती॥

इति आशीर्वादः।

इति पद्मावती अष्टक (पूजा) संपूर्णम्।

संवत्सरे १८९४ ना मासोत्तममासे शुभकारी श्रावणमासे तिथौ ११ शुक्लपक्षे एकादश्यां गुरुवासर युक्ताया अंकलेश्वर ग्रामे सन्मति (महावीर) चैत्यालये काष्टासंघे नंदीतट गच्छे विद्यागण भट्टारक श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भट्टारकजी श्री विजयकीर्तिजी तत्पट्टे भट्टारकजी श्री धर्मसेनजी तत्पट्टे भट्टारजी श्री ज्ञानकीर्तिजी तत्पट्टे उद्योतकारक भट्टारकजी श्री श्री श्री श्री श्री सुरेन्द्रकीर्तिजी तस्य शिष्य पंडित हीरालालेन लिपि कृतम् स्व ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थं लेखक पाठक शुभं भूयात्।

यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा, तादृशं लिखितम् मया।
यदि शुद्धं वाशुद्धं वा मम दोषो न दीयते॥

कल्याणमस्तु। शुभं भवतु।

पद्मावती स्तुति

जिन शासनी हंसासनी पद्मासनी माता।
भुज चार ते फल चार दे पद्मावती माता ॥ टेक ॥

जब पार्श्वनाथजीने शुक्ल ध्यान आरंभा,
कमठेशने उपसर्ग तब किया था अचम्भा।
निज नाथ सहित आपके सहाय किया है,
निज नाथको निज माथ पै चढ़ाय लिया है ॥ जिन० ॥१॥

फन तीन सुमन लीन तेरे शीश विराजैं,
जिनराज तहां ध्यान धरैं आप विराजैं।
फनिछन्दने फनिकी करी जिनंद पै छाया
उपसर्ग वर्ग मेटिके आनन्द बढ़ाया ॥ जिन० ॥२॥

जिन पासको हुआ तभी केवल सुज्ञान है,
समवादि सरनकी बनी रचना महान है।
प्रभूने दिया धर्मार्थ काम मोक्ष दान है,
तब इन्द्र आदिने किया पूजा विधान है ॥ जिन० ॥३॥

जबसे किया तुम पार्शके उपसर्गका विनाश,
तबसे हुआ जस आपका त्रैलोकमें प्रकाश।
इन्द्रादिने भी आपके गुणमें किया हुलास,
किस वास्ते कि इन्द्र खास पासका है दास ॥ जिन० ॥४॥

धर्मानुराग रंगसे उमंग भरी हो,
सन्ध्या समान लाल रंग अंग धरी हो।
जिन सन्त शीलवन्त पै तुरन्त खड़ी हो,
मन भावती दरसावती आनन्द बड़ी हो ॥ जिन० ॥५॥

जिन धर्मकी प्रभावनाका भाव किया है,
तिन साधने भी आपको सहाय लिया है।
तब आपने बस बातको बनाय दिया है,
जिन धर्मके निशानको फहराय दिया है॥ जिन० ॥६॥
था बौद्धने ताराको किया कुम्भमें थापन,
अकलंकजीसे करते रहे वाद वेहापन।
तब आपने सहाय किया धाय मात धन,
ताराका हरा मान हुआ बोध उत्थापन॥ जिन० ॥७॥
इत्यादि जहां धर्मका विवाद परा है,
तहां आपने पर वादियोंका मान हरा है।
तुमसे यह स्याद्वादका निशान खड़ा है,
इस वास्ते हम आपसे अनुराग धरा है॥ जिन० ॥८॥
तम शब्द ब्रह्म रूप मंत्र मूर्ति धरैया,
चिन्तामणि समान कामनाकी भरैया।
जप जाग जोग जैनको सब सिद्धि करैया,
परवादके पुर योगको तत्काल हरैया॥ जिन० ॥८॥
लखि पास तेरे पास शत्रु त्रास तैं भजै।
अंकुश निहार दुष्ट जुष्ट दर्पको त्यजै।
दुख रूप खर्व गर्वको यह वज्र हरै है,
कर कंजमें इक कंजसो सुख पुञ्ज भरै है॥ जिन० ॥१०॥
चरणारविन्दमें है नूपुरादि आभरन,
कटिमें है सार मेखला प्रमोदकी करन।
उरमें सुमन माल सुमन मानकी माला,
पट रंग अङ्ग संग सों सोह है बिशाला॥ जिन० ॥११॥
कर कंज चारु भूषण सों भूरि भरा है,
भवि वृन्दको आनन्द कन्द पूरि करा है।

जुग भान कान कुण्डल सों जोति धरा है,
शिर शीश फूल फूल सों अतुल धरा है॥ जिन० ॥१२॥
मुख चन्दको अमन्द देख चन्द भी धरा,
छवि हेर हार हो रहा रम्भाको अचम्भा।
दृग तीन सहित लाल तिलक भाल धरे हैं,
विकसित मुखारविन्द सौ आनन्द भरे हैं॥ जिन० ॥१३॥
जो आपको त्रिकाल लाल चाह सों ध्यावे,
बिकराल भूमिपालु उसे भाल झुकावे।
जो प्रीत सों प्रतीत सपरीति बढ़ावे,
सो रिद्धि सिद्धि वृद्धि नवों निधिको पावे॥ जिन० ॥१४॥
जो दीप दानके विधानसे तुम्हें जपें,
सो पापके बिधान तेज पुञ्जसे दीपें।
जो भेद मन्त्र वेदमें निवेद किया है,
सो साधके उपाय सिद्ध साध लिया है॥ जिन० ॥१५॥
धन धान्यका अर्थी है सो धन धान्यको पावै,
सन्तानका अर्थी है सो सन्तान खिलावै।
निज राजका अर्थी है सो फिर राज लहावे,
पद भ्रष्ट सुपद पायके मन मोद बढ़ावै॥ जिन० ॥१६॥
ग्रह क्रूर व्यघ्र राल व्याल जाल पूतना,
तुम नामके सुन हांक सौ भागे है भूतना।
कफ बात पित्त रक्त रोग शोग शाकिनी,
तुम नाम तें डरी मही परात डांकिनी॥ जिन० ॥१७॥
भयभीतकी हरनी है तुही मात भवानी,
उपसर्ग दुर्ग द्रावती दुर्गावती रानी।
तुम संकटा समस्त कष्ट काटिनी दानी,
सुख सारकी करनी तशंकरीश महारानी॥ जिन० ॥१८॥

इस वक्तमें जिन भक्तको दुख व्यक्त सतावै,
ऐ मात तुझे देखिके क्या दर्द ना आवे।
सब दिनसे तो करती रही जिन भक्त पै छाया,
किस वास्ते उस बातको ए मात भुलाया॥ जिन० ॥१९॥

हो मात मेरे सर्व ही अपराध छिमा कर,
होता नहीं क्या बालसे कुचाल यहां पर।
कुपुत्र तो होते जगत मांहि सरासर,
माता न तजै तिनसो कभी नेह जन्मभर॥ जिन० ॥२०॥

अब मात मेरी बातको सब भांत सुधारो,
मन कामनाको सिद्ध करो विघ्न विदारो।
मति देर करो मेरी ओर नेक निहारो,
करकंजकी छाया करो दुःख दाद निवारो॥ जिन० ॥२१॥

ब्रह्मांडनी सुखमंडनी खलखंडनी ख्याता,
दुःख टारिके परिवार सहित दे मुझे साता।
तजके विलम्ब अब जी अवलम्ब दीजिये,
व्रष चन्द नन्द वृन्दको आनन्द दीजिये॥ जिन० ॥२२॥

जिन धर्मसे डिगनेका कहीं आ पड़े कारन,
तो लीजिये उभार मुझे भक्त उधारन।
निज कर्मके संयोगसे जिस जौनमें जावो,
तहां दीजिये सम्यक्त जो शिव धामको पावो॥ जिन० ॥२३॥

जिन शासनी हंसासनी पद्मावती माता,
भुज चारतें फल चारु दे पद्मावती माता॥ जिन० ॥



आरती-पद्मावती माता

पद्मावती माता, दर्शनकी बलिहारियां ॥

पार्श्वनाथ महाराज विराजे, मस्तक ऊपर थारे।
इन्द्र फणिन्द्र नरेन्द्र सभी, खड़े रहे नित द्वारे ॥ प० ॥ १ ॥
जो जीव थारो शरणो लिनों, सब संकट हर लीनो।
पुत्र पौत्र धन सम्पति देकर, मंगल मय कर दीनो ॥ प० ॥ २ ॥
डाकन शाकन भूत भवानी, नाम लेत भग जाय।
वात पित्त कफ रोग मिटे और, तन सुखमय होजाय ॥ प० ॥ ३ ॥
दीप धूप और पुष्प हार ले, मैं दर्शन आयो।
दर्शन करके मात तुमारे, मन बांछित फल पायो ॥ प० ॥ ४ ॥

